वेद ज्योति
स्मारिका-2012

आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर

सम्पादकीय अध्यक्ष
श्री शुभ कुमार वोहरा
प्रधान-आर्य उपप्रतिनिधि सभा, कानपुर

व्यवस्था सम्पादक
श्री राधेश्याम आर्य
कोषाध्यक्ष-आर्य उपप्रतिनिधि सभा, कानपुर

सम्पादक
श्री शिवकुमार आर्य
अन्तरंग सदस्य-आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ
एवं प्रबन्धक-आर्य कन्या इं० कालेज, कानपुर

प्रकाशक
श्री सतीश कुमार आर्य
मंत्री-आर्य उपप्रतिनिधि सभा, कानपुर

स्मारिका समिति :
श्री वेद प्रकाश आर्य
कैलाश चन्द्र गुप्त
सुरेन्द्र कुमार गेरा
ओमप्रकाश नेता जी
[illegible]ती चन्द्रकान्ता गेरा

कार्यालय :
आर्य समाज, ग्वालटोली 11/19 सूटरगंज
कानपुर-208001।

सम्पर्क कार्यालय :
आर्य समाज सीसामऊ, लेनिन पार्क,
पी. रोड, कानपुर नगर।

व्यवस्थापक की कलम से....

आज से लगभग 128 वर्ष पूर्व नवंबर 1879 ई0 को कानपुर में प्रथम आर्यसमाज की स्थापना 'आर्य समाज कानपुर' के नाम से हुई थी और ठंडी सड़क मे उसका भवन निर्मित हुआ था, किन्तु स्थान की कमी के कारण पुनः आर्य समाज कानपुर के भवन के 3 मार्च 1916 को महात्मा हंसराज जी द्वारा मेस्टन रोड में आधारशिला रखी गई।

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानंद सरस्वती इस नगर में सर्वप्रथम सन् 1869 ई0 में स्थानीय भैरव मंदिर में ठहरे थे जिसे लाला दरगाहीलाल जी वकील ने बनवाया था वहीं उनका सुप्रसिद्ध शस्त्रार्थ पं0 हलधर ओझा के साथ 31 जुलाई 1869 ई0 को हुआ था। इस शस्त्रार्थ का का तात्कालिक परिणाम यह हुआ कि बहुत से लोग अपने घरों की मूर्तियाँ गंगा जी में प्रवाहित करने लगे थे। एतदर्थ पं0 हलधर ओझा को विज्ञापन देना पड़ा कि जो कोई अपनें घरों में मूर्तियाँ न रखना चाहे वह पं0 प्रयागनारायण तिवारी या पं0 गुरुप्रसाद शुक्ल के मंदिरों में दे आवें। इसके बाद स्वामी जी क्रमशः 1873 ई0 एवं 1879 ई0 में भी कानपुर पधारे।

आर्य समाज कानपुर की स्थापना के 53 वर्ष पूरे होने पर यद्यपि आर्य समाज कानपुर के तत्कालीन मंत्री मुंशी ज्वाला प्रसाद जी द्वारा संकलित " 53 वर्ष का इतिहास" सन् 1929 ई0 में प्रकाशित किया गया था जो आज कानपुर के लिए एक ऐतिहासिक बस्तावेज है।

एक लंबे अंतराल के बाद वर्ष 2007 ई0 में आर्य उपप्रतिनिधि सभा के तत्कालीन यशस्वी प्रधान – श्री हनुमान प्रसाद जी आर्य ने एक 'स्मारिका' प्रकाशन का प्रस्ताव रखा था, जिसकी उपयोगिता को रेखांकित करते हुये सभा ने सर्वसम्मति से सराहा एवं स्वीकृत किया था, फलस्वरूप 'वेद ज्योति' नामक स्मारिका वर्ष 2008 में प्रकाशित हुई थी। इसके पश्चात सन् 2010–11 में पूर्व वर्ष के प्रधान – श्री वेद प्रकाश आर्य एवं पूर्व मंत्री श्री आनन्द जी आर्य ने पुनः 'वेद ज्योति' स्मारिका का प्रकाशन किया और पुनः इस वर्ष पूर्व यशस्वी प्रधान – श्री हनुमान प्रसाद जी आर्य और वर्तमान प्रधान श्री शुभ कुमार वोहरा जी की प्रेरणा से यह 'स्मारिका वर्ष 2012' आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है।

इसके प्रकाशन में माननीय श्री राधेश्याम आर्य, श्री सतीश शास्त्री जी, श्री देवेन्द्र दुग्गल, सतीश चोपड़ा, श्री विनोद चन्द्र श्रीवास्तव एवं श्री रोहित भल्ला की लगन व परिश्रम महत्वपूर्ण है। जिसके लिए वे सभी साधुवाद के पात्र हैं।

अनुक्रमणिका

1.	व्यवस्थापक की कलम से....	–		1
2.	सम्पादकीयम्	–	शिव कुमार आर्य	4
3.	आर्य समाज के नियम	–		8
4.	प्रधान की कलम से	–	शुभ कुमार बोहरा	9
5.	शुभकामना–संदेश	–		11–18
6.	कानपुर में आर्य समाज के 132 वर्ष	–	श्रीमती कृष्णा अग्रहरि	19
7.	वर्ष 2011–2012 की वार्षिक आख्या	–	सतीश कुमार आर्य	20
8.	कविताएँ	–	सुरेश चन्द्रा 'सुराज'	26
9.	पाप और पुण्य	–	डॉ० संतोष अरोड़ा	28
10.	क्योंकि मैं लड़का हूँ	–	विनोद चन्द्र श्रीवास्तव	31
11.	'पितुष्पिता'– स्वामी श्रद्धानन्द	–	देवनारायण भारद्वाज	35
12.	आत्मबोध – वैदिकता का सार	–	गुरूबक्श ललिता सूदन	41
13.	सुभाषित	–	चन्द्र प्रकाश	43
14.	महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति श्रद्धा सुमन			46
15.	विज्ञान का दावा की मुसलमानों.....	–		47
16.	आर्य मुसाफिर पं० लेखराम जी..	–	शिवानी आर्या	49
17.	वेद–वाणी से उतरे पार	–	आचार्या नन्दिता शास्त्री	52
18.	आर्य कौन है?	–	सतीश कुमार आर्य	57
19.	श्रृद्धांजलि का वैदिक ढंग	–	इन्द्र देव गुलाटी (सिद्धान्त भूषण)	63
20.	भरत की शपथों मे चित्रित........	–	प्रो० ओम कुमार आर्य	65
21.	पंजाब केसरी लाला लाजपत राय	–	रविचन्द्र गुप्ता	71
22.	आर्य समाज	–	रामधारी सिंह 'दिनकर'	75
23.	राष्ट्रहित में तीन माँगें	–	बाबा रामदेव जी	85
24.	धन की मादकता	–	राम लखन आर्य	91
25.	संगीत एवं चिकित्सा	–	ज्ञानेन्द्र कुमार मिश्र	95
26.	धर्म निरपेक्षता का पागलिया डान्स..	–	ओम प्रकाश (नेताजी)	98
27.	आर्यत्व एवं कर्मठता के प्रतीक	–	आर्य उपप्रतिनिधि सभा	101

अनुक्रमणिका

28.	'खुद एवं खुदा पर भरोसा करो'	–	कैलाश मोंगा	103
29.	पर्यावरण संतुलन में यज्ञ का महत्व	–	विनोद कुमार आर्य	105
30.	योगदर्शनम्	–	हनुमान प्रसाद आर्य	108
31.	''मनुर्भव''	–	चन्द्र कान्ता गेरा	111
32.	वैदिक आर्यो की सभ्यता	–	आनन्द स्वरूप आर्य	114
33.	स्वास्थ के लिये शाकाहारी या...	–	डॉ. रवीन्द्र कुमार तोमर	119
34.	BRIEF PROFILE OF.........	-	Ved Prakash Arya	124
35.	Contribution of Arya Samaj to our...	-	S.C. Gupta	125
36.	ऋषि दयानन्द कृत वेदभाष्य........	–	आनन्द जी आर्य	129
37.	आमन्त्रित सदस्यों की सूची...	–		137
38.	कानपुर नगर की विभिन्न......	–		141
39.	कर्म ही जीवन की सुगन्धि है।	–	पं० सतीश कुमार शास्त्री	153
40.	संगठन सूक्त	–		154
41.	मानव कोई बन कर आया?	–	पं० महेन्द्रपाल आर्य (वैदिक प्रवक्ता)	155

★ ★ ★

ओ३म्

सम्पादकीयम्

- शिव कुमार आर्य
अ० सं० आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

भ्रष्टाचारोऽतिवर्त्तते –

आज भ्रष्टाचार का बोलबाला है, बोलबाला तो पहले से था हाँ! अब उसका घड़ा भर गया दिखता है क्योंकि उसके विरूद्ध आवाजें उठने लगी हैं अन्ना हजारे से लेकर बाबा रामदेव तक। बाबा रामदेव तो आज के युग के हम भारतीयों के मसीहा समान हैं जो कि स्वयं उषर्बुध बनकर दुनियाँ को जगाते हैं वे सच्चे राष्ट्रसेवक व जन्मजात सन्त हैं जिन्हें **आचार्य बालकृष्ण** जैसा धनुर्धर अनुयायी मिला हुआ है। पिछले 4 जून को भ्रष्टाचार के विरूद्ध जनता को साथ लेकर इन्होंने जो दिल्ली के रामलीला मैदान में सत्याग्रह व अनशन किया। सरकार उससे डर गई और उसने सत्य का सीधा सामना करने के बजाय दमन की नीति अपनाई और जिस प्रकार बर्बरता से आधी रात को सोए हुए निहत्थे राष्ट्र सेवकों पर,माताओं बहिनों बच्चों तक पर इन्होंने लाठियाँ भाँजी पुलिसिया नंगा नाच किया वह लोकतन्त्र के इतिहास में शर्मनाक था लोगो को अंग्रेजी शासन काल में हुए जलियाँ वाला बाग काण्ड की याद आ गई। आखिर जुल्म क्या था इनका? यही कि वे देश से भ्रष्टाचार को मिटाना चाहते थे। अपने देश का काला धन जो विदेशो में जमा है उसे वापिस लाने का अभियान चला रहे थे। पर सरकार क्या कर रही है? इसे तो विदेशों से भीख (ऋण) माँगते विदेशियों के सामने भारतीय गौरव गरिमा को दाँव पर लगाते दाँत निपोरते शर्म नहीं आती। सीना तान कर ताल ठोक कर अपना धन वापिस लाने की बात करने वालों से इसे राष्ट्रद्रोह की गन्ध आती है कारण स्वयं ये इनके पुरखे सगे सम्बन्धी और मित्र तक इस धन्धे में लिप्त हैं। वे स्वयं इस काले धन के जमाखोर हैं इसलिए कहीं हम उजागर न हो जायें इसकी इन्हें चिन्ता है राष्ट्र गिरवी रख जाये इसकी इन्हें चिन्ता नहीं। पर जन जागृति का यह अभियान करोड़ो भारतवासियों का यह संकल्प अब कमजोर पड़ने वाला नहीं है हम सब नही पूरा राष्ट्र इस भ्रष्टाचार के विरूद्ध व बाबा रामदेव के साथ है।

प्रश्न होता है आखिर भ्रष्टाचार है क्या? उत्तर– जो शास्त्रसम्मत न हो, नीतिसम्मत न हो, विद्वानों तपस्वियों द्वारा अनुमोदित न हो ऐसे आचार–विचार व्यवहार आचरण का नाम ही भ्रष्टाचार है। **आचारात् भ्रष्टः अधः पतितः (भ्रंशु अधः पतने) भ्रष्टो वा आचारः भ्रष्टाचारः** जो आचार

में गिर गया हो जिसका अधः पतन हो गया हो अथवा जो आचार भ्रष्ट है उसी का नाम भ्रष्टाचार है। प्रश्न उत्पन्न होता है इस भ्रष्टाचार की खेती आखिर हो क्यों रही है? उत्तर– सीधा है क्योंकि आज सदाचार के बीज नहीं बोये जा रहे हैं हमारा इस ओर कोई प्रयास नहीं है। सदाचार के बीज बोने के लिए आवश्यक नहीं है कि आप अष्टाध्यायी महाभाष्य, निरूक्त, वेद, दर्शन जैसे कठिन ग्रन्थों को पढ़ेगें तभी सदाचारी बनेंगे। इसके लिये तो मात्र संस्कृत के छोटे–छोटे–अनुष्टुप् छन्दों के विदुरनीति, चाणक्यनीति, महाभारत, मनुस्मृति, गीता आदि के श्लोक भी यदि आरम्भिक कक्षा से ही बच्चों को अन्य विषयों के साथ–साथ कण्ठस्थ कराये जायें, उनका भली–भाँति अर्थ बताया जाये, उन्हें उसी प्रकार की 10–15 मिनट की प्रेरणा किसी कहानी क़े साथ सोदाहरण दी जाये तो सदाचार की खेती स्वयं आरम्भ हो जायेगी। पर सरकार ने तो कमर कस ली है सदाचार को देश निकाला देने की तभी शिक्षा बोर्ड में पाठयक्रम से संस्कृत का नामोनिशान मिटाने में वह तुली हुई है जो कुछ गिने–चुने संस्कृत विद्यालय विश्वविद्यालय हैं उन्हें वह वहीं तक अनुदानादि देकर सीमित कर देना चाहती है और उन्हें बैलगाड़ी युग का वनमानुष सिद्ध कर उन्हें समाज से बहिष्कृत कर देना चाहती है। पीछे उत्तर प्रदेश के राज्यपाल टी.वी. राजेश्वर का संस्कृत विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में आना और सरे आम संस्कृत की संस्कृत के अध्येताओं की निन्दा करना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है।

आज की शिक्षा, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ये जीवन के जो चार उद्देश्य हैं उनसे रहित केवल एकांगी अर्थपरक है। आज धर्म की बात करना सामप्रदायिकता है। मनुस्मृति का एक श्लोक है–

अर्थकामेष्वसक्तनां धर्मज्ञानं विधीयते।
धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः।।

अर्थात् जो अर्थ और काम (विषयासक्ति) से असक्त हैं उन्हें ही धर्म का बोध कराया जा सकता है उनके लिए ही धर्म (आचार) बोधक शास्त्रों का महत्व है। दूसरी बात धर्म को जानने की इच्छा करने वाले लोगों को यह स्पष्ट जान लेना चाहिये कि इस विषय में एकमात्र श्रुति (वेद) ही परम प्रमाण है। क्योंकि वेद का ज्ञान ही सृष्टि के आदि में जिस समय सर्वप्रथम मनुष्यों की सृष्टि हुई उस समय परब्रह्म परमेश्वर द्वारा मनुष्य मात्र ही नहीं प्राणिमात्र के कल्याण के लिये प्रदत्त ज्ञान है। वस्तुतः पक्षपात रहित ज्ञान और तदनुकूल आचार धर्म ही सार्वभौम सर्वस्वीकार्य हो सकता है। यह ज्ञान उस सूर्य के समान है जो सभी देश, काल, जाति वालों के लिए समान रूप से उपादेय है। जिसे प्रमाणित करने के लिए किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं वह स्वतः प्रमाण है।

प्रश्न है आज अर्थ और काम से असक्त हैं कौन? जिन्हें धर्म का उपदेश दिया जाये। उत्तर इसका भी बहुत सरल है क्योंकि जन्म से पैदा होते ही तो कोई अर्थ और काम से जुड़ नही जाता। सामान्यतः 20–22 वर्ष की उम्र के बाद युवावस्था में ही व्यक्ति इस ओर अभिमुख होता है। इस प्रकार जीवन का आरम्भिक काल जो कि स्वर्णिम काल है वही इस सदुपदेश सद्ज्ञान के लिये पूर्ण उपयुक्त है यह सुनिश्चित है। इसीलिये हमारे ऋषि मुनियों ने जीवन के आरम्भिक 25 वर्ष के लिये ब्रह्मचर्य की दीक्षा और तप का विधान किया है। और आठ वर्ष की अवस्था से ही बालक–बालिका को आचार्य के संरक्षण में जीवन व्यतीत करने का नियम बनाया। वह आचार्य जो आचारं ग्राहयति आचार की शिक्षा देने के कारण आचार्य कहलाता था जो विद्यार्थी के मन मस्तिष्क को बाँध कर उचित दिशा में लगाने का कार्य करता था। 12–15 वर्ष तक उस आचार्य के सतत सान्निध्य में रहकर वह ब्रह्मचारी मनुष्य ही नहीं देव बन जाता था, द्विज कहलाता था जिसे देखने व उसका स्वागत करने के लिये स्वयं देवजन एकत्र होते थे– **तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवाः।**

यहाँ सुख का मूल धर्म माना गया है और धर्म के लक्षणों में धृति, (धैर्य) क्षमा, दम, अस्तेय (चोरी न करना) शौच (तन, मन से पवित्र होना) इन्द्रिय निग्रह, धीः(बुद्धि का उचित प्रयोग आत्मोन्नति व परहित में करना) विद्या (सा विद्या या विमुक्तये विद्या वही है जो जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष का साधन बने), सत्य, अक्रोध ये दस धर्म के लक्षण बताये हैं। क्या धर्म के इन लक्षणों को साम्प्रदायिक कहा जा सकता है? क्या आज भी इनका पालन करने पर देश में दुःख दारिद्रय और भ्रष्टाचार रह सकता हैं? **सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्** सभी शुचिताओं में अर्थ की शुचिता धन की पवित्रता को पर उत्कृष्ट माना गया है। सत्य यही है कि मृत्यु के बाद कोई एक तिनका तक अपने साथ नहीं ले जा सकता। शास्त्रों में स्पष्ट लिखा है धन की तीन ही गति है– **दानं भोगो नाशः** या तो दान करो सामाजिक कार्यो के लिये परिवार की उन्नति के लिये राष्ट्र की समृद्धि के लिये अथवा भोग करो जितना भोग सकते हो नहीं तो अधिक होने पर सरकार को टैक्स तो देना ही पड़ेगा ओर टैक्स से बचने के लिए धन को छिपाने की कोशिश करोगे तो छिपा तो सकते हो पर उससे लाभ क्या होगा। क्योंकि जो धन सम्पत्ति न यश का कारण बने न भोग का साधन बने उसकी गति तो केवल विनाश है। इसीलिये धर्म का मूल अर्थ बताया है। जीवन में अर्थ का सदुपयोग ही धर्म है और अर्थ का अनुपयोग अथवा दुरूपयोग ही अधर्म है भ्रष्टाचार है। आप किसी का गला नहीं काटते किसी की रोटी नहीं छीनते पर यदि आप अकेले भोग कर रहे हैं तो आप पापी हैं **केवलाघो भवति केवलादी।** भोग करो ऐश करो राजसिक जीवन बिताओं तो भी ठीक है– पर यहाँ तो दूसरी स्थिति है भोग कर नहीं सकते कितना करें दूसरो को सहभागी बना

नहीं सकते प्रवृत्ति नहीं है फिर छिपाते फिरते हैं बाहिर के बैंको में इसी का नाम काला धन है। अस्तु!

भ्रष्टाचार की समाप्ति बिना विचार के बिना धार्मिक शिक्षा के असम्भव है। अधिक संपत्ति होने पर टैक्स देने की बजाय यदि आप उसे दान खाते में डाल दें तो आपका कहीं से नुकसान नहीं है। न इस लोक में न परलोक में इस लोक में जहाँ आप यश के भागी बनेंगे वहीं परलोक का खाता आप यहीं बैठे–बैठे खोल लेंगे और अगले जन्म में फिर आप अमीर बाप के बेटे बनकर भोग करेंगे। यह तो चक्र है यह ज्ञान अच्छी धार्मिक पुस्तकों के स्वाध्याय से प्राप्त होता है। इसीलिये शिक्षा की समाप्ति पर यह अन्तिम आदेश और उपदेश दिया जाता था– कि जीवन में कभी स्वाध्याय मत छोड़ना और जो पढ़ना उसे अपने तक मत रखना बाँट देना प्रवचन, सदुपदेश अथवा उत्तम संस्कारी सदाचारी सन्तान निर्माण के माध्यम से। अपि च– ध्यान रखना गृहस्थ धर्म अर्थ से चलता है पर इसका मतलब यह नहीं कि तुम केवल अपने लिये उसका संचय करो, दान धर्म गृहस्थ का सर्वोत्तम धर्म है। इसीलिये चाहे श्रद्धा से अश्रद्धा से लज्जा से भय से ज्ञान से जैसे भी हो दान अवश्य करना अपनी कमाई का दशमांश दसवाँ भाग समाज के लिये अवश्य अर्पण करना तभी देश धर्म समाज राष्ट्र परिवार चल सकता है और देश से भ्रष्टाचार समाप्त हो सकता है यह उपदेश दिया जाता था।' आप भी अपनी कमाई का दशमांश अपने इस आर्य समाज में दान कर सकते हैं और यश के भागी बन सकते हैं आप इससे आय कर की छूट भी प्राप्त कर सकते है। पाठको! जीवन का हर क्षण बहुमूल्य है विचार करे, जब जागे तब सबेरा।

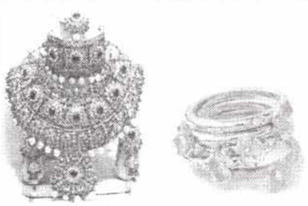
सिद्ध श्री
: 9634616267
: 9305155660
राज रतन ज्वैलर्स
शुद्ध सोने व चाँदी के फैन्सी आभूषण उचित रेट पर उपलब्ध है।
104/91 पी0 रोड स्टेट बैंक के पास कानपुर-208012

आर्य समाज के नियम

1. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते है उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविधाओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिये।
6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिये।
8. अवद्यिा का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

आर्य समाज कानपुर के यशःशेष स्तम्भ

जिज्ञासु सरलतम संस्कृत प्रचार समिति (उ०प्र०), कानपुर के तत्वावधान में आचार्य धर्मानन्द शास्त्री द्वारा आयोजित 2011 सत्र के संस्कृत पाठशाला के विद्यार्थीगण एवं अन्य गणमान्य आर्य बन्धु

प्रधान की कलम से ....

– **शुभ कुमार बोहरा**, प्रधान
आर्य उपप्रतिनिधि सभा, कानपुर

आर्यो को नमस्ते! ऋषि दयानन्द ने आज से लगभग 136 वर्ष पूर्व आर्य समाज नामक सुधारक आन्दोलन आरम्भ किया। जिसका उद्देदश्य मानवता तथा उससे संबंधित घटकों को उद्धार करना था। जो विचार ऋषि के मन में आर्य समाज की स्थापना के समय उपस्थित रहे होंगे उनमें राष्ट्ररक्षा एक प्रमुख विषय परिलक्षित होता है। ऋषिवर समय–समय पर राष्ट्रहित का चिंतन देते दिखाई पड़ते हैं। सत्यार्थ प्रकाश में ऋषि लिखते है कि कोई कितना भी करे किन्तु जो स्वदेशी राजा होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। ऋषि तो हमको यह प्रेरणा देकर चले गये परन्तु हम लोग इस प्रेरणा को सुरक्षित नहीं रख सके। ऋषि ने पुरूषार्थ के चार भेद बताये हैं, सबसे पहले जो वस्तु हमारे पास नहीं है उसको प्राप्त करना, दूसरा उस वस्तु की रक्षा करना, तीसरा उसमें वृद्धि करना और चौथा उस वस्तु से संसार का उपकार करना। हमारे पूर्वजों ने बलिदान देकर जैसे तैसे आजादी को तो प्राप्त कर लिया परन्तु हम इस आजादी की रक्षा नहीं कर पाये। आज भी हम लोग भ्रष्टाचारी नेताओं के गुलाम ही हैं। कुछ नहीं बदला, बदला है तो सिर्फ हमारे शासकों की चमड़ी का रंग बदला है। भारत के आजाद होने के समय हमने पाकिस्तान को बसाने के लिए 55 करोड़ रूपये दिये थे पर आज इस देश के लोगो के घर बिना कर्ज के नहीं बसते है। उस समय रूपये का मूल्यांकन लगभग डॉलर के समकक्ष था पर भ्रष्ट नेताओं की स्वार्थी नीतियों के कारण आज हमें एक डॉलर के बदले लगभग 53 रूपये चुकाने पड़ते हैं। हम अगर एक माचिस भी खरीदते हैं तो उस पर भी हम सरकार को टैक्स देते हैं। हमारे टैक्स से जमा हुआ यह पैसा देश में विकास कार्यो में खर्च होना चाहिये, परन्तु यह पैसा विदेशी बैंको में पहुंच जाता है जिसके कारण हमारे देश में समुचित विकास नहीं हो पा रहा है। इस देश में गरीब जनता महंगाई से त्रस्त है पर सरकार का पूरा ध्यान अपना खजाना भरने में लगा है। मानव संसाधनों के मामले में

हम विश्व में पिछड़ते जा रहे है, न्याय व्यवस्था चौपट होती जा रही है, भ्रष्टाचार अपने चरम पर है, घोटालों की मानो बाढ आ गई है परन्तु सरकार का ध्यान इन सब विषयों से हटकर केवल अपना प्रचार करके चुनाव जीतने में लगा हुआ है। रोजाना सरकारी नुमाईंदों के बड़े–बड़े घोटाले सामने आ रहें हैं परन्तु सरकार भ्रष्टाचारियों को सजा देने के बजाय उनका बचाव करने में लिप्त हैं आज अगर मौका समझकर कोई पड़ोसी देश हम पर हमला कर दे तो सभी नेतागण जिनके पास अपने निजी विमान हैं, और जिन्होंने विदेशों में बड़े–बड़े घर खरीद रखे हैं, वे अपने विमानों में बैठकर अपने घर पंहुच सकते हैं। परन्तु मैं और आप कहां जायेंगे? प्रतिदिन एक से बढ़कर एक उजागर हो रहे घोटाले देश की प्रतिष्ठा को धूल में मिला रहे हैं पर नेताओं को ये निजी प्रतिष्ठा नहीं लगती, जिस स्वार्थी व्यक्ति को देश से कोई मतलब नहीं है उसका चिंतन राष्ट्र के हित में कैसे हो सकता है? आज ये जिम्मेदारी आर्यों के ऊपर है कि राष्ट्रहित में अपना चिंतन दें और राष्ट्र को प्राथमिकता देने वाले लोगों का सहयोग करें। क्योंकि हमारा भविष्य राष्ट्र का भविष्य नहीं बनाता अपितु राष्ट्र का भविष्य हमारा भविष्य बनाता है।

आर्य समाज स्थापना दिवस एवं भारतीय नवसंवत्सर के शुभअवसर पर नगर के समस्त निवासियों एवं आर्यजनों को बहुत बहुत बधाई एवं शुभकामनायें!

ADVOCATE

Brajesh Kapoor

Advocate

INCOME TAX, TRADE TAX, CONSULTANT

Mob.: 9839036030, 7499492772

Court Address
Infront of Bar Association
Court Compound
Kanpur Nagar

Residence
H. No. 111/C, Shyam Nagar
Near LIC Park
Kanpur- 208 13

-: OFFICE ADDRESS :-
73/10, A-Cooperganj, Near 4 No. Railway, Mall Godown, Kanpur Nagar

ओ३म्

संस्थापित 1886 ई0

पंजीकरण तिथि 5 जनवरी, 1897

: 0522-2286328
: 09412678571

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

श्री नारायण स्वामी भवन, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ-226001

देवेन्द्रपाल वर्मा

प्रधान

दिनांक : 29/2/2012

पत्रांक : 1921

शुभकामना-संदेश

सेवा में,

श्री सतीश कुमार आर्य, मंत्री
आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर नगर,
कार्या0 11/19 सूटरगंज, आर्य समाज
ग्वालटोली, कापुर नगर।

बन्धुवर,

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुयी कि आपकी उपसभा ने इस वर्ष एक स्मारिका के प्रकाशन का निश्चय किया है। आशा है उस वैदिक सिद्धान्तों के प्रतिपादक, समाज सुधार के उद्‌बोधक लेखों का प्रकाशन करके आप आर्य जगत् को नई चेतना देने का सद् प्रयास करेंगे।

मैं स्मारिका के प्रकाशन हेतु अपना हार्दिक धन्यवाद देते हुये व उसके कुशल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

भवदीय

(देवेन्द्रपाल वर्मा)

प्रधान

ओ३म्

जगेन्द्र स्वरूप

बी०एस०सी०, एम.ए.,एल.एल.बी.

एडवोकेट

(आ0) : 2303140, 2332777

(नि) : 2303138, 23031369

15/16, सिविल लाइन्स

कानपुर–208 001

पत्रांक : 1921

दिनांक : 12/03/2012

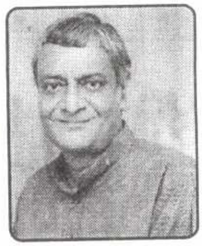

शुभकामना-संदेश

प्रिय आर्य जी,

अत्यन्त हर्ष की बात है कि विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी आर्य उपप्रतिनिधि सभा द्वारा "वेद ज्योति" के नाम से एक स्मारिका प्रकाशित की जा रही है।

मैं स्मारिका की वांछित सफलता हेतु अपनी शुभ–कामनायें प्रेक्षित करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित!

भवदीय

(जगेन्द्र स्वरूप)

प्रधान

BAR COUNCILOF UTTAR PRADESH

(COUNSTITUTED UNDER ADVOCATES ACT,1961)

OFF.: 19, MAHARSHI DAYANAND MARG, ALLAHABAD-211 001, PHONE : 2623501, FAX : 2420068
CAMP OFFICE : DARUL SHAFA, VIDHAYAK NIWAS-2, SUIT NO. 23-B, LUCKNOW PHONE: (0522) 2201943

Yogendra Swaroop
Member & Former Chairman
Bar Council of U.P.

Resi.: 15/96, Civil Lines, Kanpur
Phone: (O) 0512-2306209, (R) 0512-2306208
Mobile : 9415161027

शुभकामना-संदेश

प्रिय आर्य जी,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आर्य उप प्रतिनिधि सभा द्वारा "वेद ज्योति" नामक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

हमें विश्वास है कि इस स्मारिका द्वारा आर्य समाज और ऋषि दयानन्द जी के सन्देश जन–जन तक पहुंचाने में हम सफल होंगे। इसके लिए आप सब बधाई के पात्र हैं।

शुभकामनाओं सहित!

भवदीय

(योगेन्द्र स्वरूप)
सदस्य एवं पूर्व अध्यक्ष, बार कौसिल उ० प्र०
सचिव,पी.पी.एन. मेमोरियल सोसाइटी,
कानपुर

जिह्वा में मधुमत्तमा स्यात्

डॉ० राजाराम दीक्षित

'भू० पू० प्रो० एवं सं० विभागाध्यक्ष

'शैक्षिक प्रकोष्ठ प्रमुख एवं शोध निदेशक'

भारतीय शिक्षण मण्डल, कानपुर प्रान्त उ० प्र०

पत्रांक : ....

दिनांक : 23/03/2012

शुभकामना-संदेश

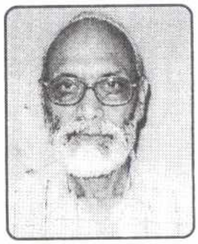

सेवा में,

श्रीमंत्री जी

आर्य उपप्रतिनिधि सभा,

कानपुर नगर

महोदय!

यह अत्यन्त हर्ष और सम्मान का विषय है कि आप 'वेद ज्योति' पत्रिका का प्रकाशन कर रहे हैं, आज योगवादी प्रवृत्ति बढ़ते घने अन्धकार को अवरुद्ध कर उसे दूर करने के लिए वैदिक शान की अत्यान्तिक आवश्यकता है। पत्रिकाओं में विभिन्न प्रकार के विचार एक साथ पाठक को मिलते हैं और उसे विश्लेषण का अवसर प्रदान कर ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

मेरा यह विश्वास है कि पत्रिका पाठकों को यथोचित ज्ञान प्रदान कर उनको त्यागमय आनन्द के पथ पर चलने को प्रेरित करेगी।

सफलता की शुभकामनाओं के साथ

भवदीय

(राजाराम दीक्षित)

ओ३म्

रवीन्द्र पाटनी
महापौर

दूरभाष :
एक्स. न.नि. :2553254, 2546867
कार्या० नि० नि० : 2540922
कैम्प कार्या० : 2549680
फैक्स : 2549680
आवास : 2260979

पत्रांक : ....

दिनांक : 03/04/2012

शुभकामना-संदेश

प्रिय श्री गेरा जी,

मुझे यह जानकर अत्यन्त हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि आर्य उप प्रतिनिधि सभा, कानपुर द्वारा गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी अपनी संस्था की स्मारिका प्रकाशित करने जा रही है। संस्था निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो यही मेरी शुभकामना है।

मैं प्रकाशित होने वाली स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

श्री सुरेन्द्र कुमार गेरा
सदस्य स्मारिका समिति
आर्य उपप्रतिनिधि सभा।

भवदीय

(रवीन्द्र पाटनी)

सतीश महाना
विधायक

निवास : 3 हरजेन्दर नगर,
कानपुर -208 007

सदस्य विधान सभा
उत्तर प्रदेश

पत्रांक : ....

दिनांक : 29/03/2012

शुभकामना-संदेश

महोदय,

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर द्वारा 'स्मारिका' का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'स्मारिका' के प्रकाशन से महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज के प्रेरणादायी एवं समाजोद्धारक विचार जन-जन तक पहुँचेंगे।

मैं स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ एवं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

प्रतिष्ठा में,
सुरेन्द्र कुमार गेरा
सदस्य स्मारिका समिति
आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर नगर

भवदीय

(सतीश महाना)

ओ३म्

रघुनन्दन सिंह भदौरिया

विधायक

छावनी विधानसभा
कानपुर
मो0 : 8765954915

पत्रांक : ....

दिनांक : 29/03/2012

शुभकामना-संदेश

सेवा में,

श्री सुरेन्द्र कुमार गेरा,

सदस्य स्मारिका समिति

आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानुपर नगर

महोदय,

अति प्रसन्नता का विषय है कि आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर नगर हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी वैद्धिक सिद्धांतों के प्रचार–प्रसार हेतु स्मारिका का प्रकाशन करने जा रही है। मुझे विश्वास है कि स्मारिका प्रकाशन से समाज की अधिकाधिक जागृति होगी तथा समाज में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के समाजोपयोगी विचारों का प्रसार होगा।

स्मारिका के प्रकाशन के लिये हमारी हार्दिक शुभकामनायें!

भवदीय

(रघुनन्दन सिंह भदौरिया)

सतीश कुमार निगम

विधायक

एम.एस.सी., एल.एल. बी. (एडवोकेट)

आवास : 127/476, जूही,
बारादेवी, कानपुर
मो0 : 09415041768
कार्यालय : रावतपुर स्टेशन,
(एस.बी.आई.ए.टी.एम. के बगल में)

पत्रांक : ....

दिनांक : 03/4/2012

शुभकामना-संदेश

प्रतिष्ठा में,

सुरेन्द्र कुमार गेरा
सदस्य स्मारिका समिति
आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानुपर नगर

महोदय,

हर्ष का विषय है कि आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर जन–जागरण की दिशा में कदम उठाते हुए प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी महर्षि दयानन्द सरस्वती के सद्विचारों को प्रचारित–प्रसारित करने हेतु स्मारिका का प्रकाशन करने जा रही है। आर्य समाज के सिद्धान्तों व विचारों को जन–जन तक पहुँचाने के लिए मेरा पूर्ण सहयोग सदैव अर्पित रहेगा।

भवदीय

(सतीश कुमार निगम)

कानपुर में आर्य समाज के 132 वर्ष

स्मरणीय तिथियाँ

महर्षि दयानंद सरस्वती का कानपुर सर्वप्रथम पदार्पण	१८६९ ई.
महर्षि दयानंद जी का शास्त्रार्थ पं० हलधर ओझा के साथ	३१ जुलाई १८६९ ई.
(आमंत्रण-पं० गुरुप्रसाद शुक्ल एवं पं० प्रयाग नारायण तिवारी)	
महर्षि दयानंद का कानपुर में द्वितीय बार पदार्पण	१८७३ ई.
महर्षि दयानंद का कानपुर में तीसरी बार पदार्पण	१८७९ ई.
कानपुर में प्रथम आर्य समाज की स्थापना	१६नवम्बर १८७९ ई.
आर्य समाज पुराना कानपुर की स्थापना	१८८२ ई.
(पं० यमुना प्रसाद पाण्डेय एवं पं० सूर्य कुमार पाण्डेय के सहयोग से)	
आर्य समाज का प्रथम वार्षिकोत्सव	१८८४ ई.
(जिसमें बाहर से उपदेशक पं० भीमसेन शर्मा, पं० लक्ष्मीदत्त एवं पं. बद्रीदत्त सम्मिलित हुये)	
लाला० लाजपतराय जी का आगमन	१८९० ई.
पं० लेख रामजी का आगमन	१८९० ई.
डी० ए० वी० कालेज सोसाइटी रजिस्टर्ड हुई	१८९२ ई.
आर्य समाज मंदिर ठंडी सड़क का निर्माण	१८९३ ई.
प्रचार हेतु नियमानुकूल भजन मंडली बनाई गई	१८९३ ई.
प्रथम स्त्री आर्य समाज की स्थापना	१९०६ ई.
प्रथम शुद्धि जो इसाई हो गया था	१९०७ ई.
परिवारों में वेद कथा संबंधी प्रस्ताव	१९०६ ई.
आर्य समाज द्वारा शव गाड़ी की व्यवस्था	१४.१०.१९११ ई.
डी.ए.वी.हाईस्कूल, डी.ए.वी. कालेज को दिया गया	२९ नवम्बर १९२१ ई.
महात्मा हंसराज जी द्वारा आर्य समाज भवन की आधार शिला रखी गई	३ मार्च १९१६
आर्य समाज कानपुर की रजिस्ट्री हुई	७ नवंबर १९२१ ई.
आर्य समाज द्वारा मुहल्लों में रक्षा प्रबंध	१९२६ ई.
५० वर्षीय इतिहास आर्य समाज कानपुर	१९२९ ई.

तत्कालीन मंत्री मुंशी ज्वाला प्रसाद आर्य समाज कानपुर (मेस्टन रोड) द्वारा प्रकाशित

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, कानपुर नगर

वर्ष 2011-2012 की वार्षिक आख्या

- सतीश कुमार आर्य (मन्त्री)

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, कानपुर

आदरणीय प्रधान जी, पूज्य मातृशक्ति, मेरे अग्रजों एवं उपस्थित बन्धुओं,

इस सभा में कानपुर नगर के विभिन्न आर्यसमाजों से पधारे हुए आर्य प्रतिनिधियों एवं सहयोगियों का हम भारतीय नवसंवत्सर की शुभकामनाओं के साथ हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन करते हुए वर्ष भर आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर संगठन को गतिशील बनाये रखने हेतु आप सबके द्वारा दिये गये सहयोग हेतु हम आप सभी का आभार प्रदर्शित करते हैं। दिनांक 17/4/2011 को श्री शुभ कुमार बोहरा जी के कुशल नेतृत्व में गठित इस कार्यकारिणी द्वारा संपादित विभिन्न कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है –

1. बरूवा सुमेरपुर, जिला हमीरपुर में आयोजित आर्य वीर दल का प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर में सहयोग –

आदरणीय श्री लक्ष्मी शंकर द्विवेदी जी की देखरेख में उक्त प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर दिनांक 21 जून से 30 जून 2011 तक श्री गायत्री विद्या मंदिर इण्टर कॉलेज, सुमेरपुर, हमीरपुर में आयोजित किया गया। उक्त शिविर में भाग लेने के लिये आर्य उपप्रतिनिधि सभा ने लगभग 14 बच्चों को कानपुर से अपने खर्चे से भेजा।

2. आर्य विरांगना प्रशिक्षण शिविर का आयोजन – दिनांक 23 मई से 28 मई सन् 2011 के मध्य उक्त प्रशिक्षण शिविर का आयोजन आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर नगर, स्त्री आर्य समाज गोविन्द नगर, आर्य समाज गोविन्द नगर एवं आर्य कन्या इण्टर कालेज गोविन्द नगर के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। जिसमें लगभग 45 लड़कियों ने भाग लिया, जिन्हें शारीरिक, व्यायाम योग, प्राणायाम, जूडो–कराटे, तीरंदाजी, बन्दूक चलाने आदि का (प्रशिक्षण दिया गया) तथा हवन की विधि, मन्त्रों का उच्चारण और बौद्धिक प्रशिक्षण भी दिया गया। उक्त समस्त लड़कियों के कालेज में ही सप्ताह भर ठहरने की खाने आदि की व्यवस्था की गई थी। उक्त कार्यक्रम का उद्घाटन सभा प्रधान जी की अस्वस्थता के चलते सभा की वरिष्ठ उप प्रधाना – श्रीमती कैलाश मोंगा ने दीप जलाकर किया तथा कार्यक्रम का समापन मुख्य अतिथिगण नगर के महापौर श्री

रवीन्द्र जी पाटनी और श्रीमती मानमती आर्या ने किया। समापन समारोह की अध्यक्षता आचार्य श्री धर्मानन्द शास्त्री जी ने की तथा प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाणपत्र भी वितरित किये और उद्‍बोधन के रूप में अपना आशीष वचन भी दिया।

3. **आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर नगर द्वारा दिनांक 4.6.2011 को धरना व अनशन –**

श्री रामदेव जी द्वारा कालाधन व भ्रष्टाचार के विरूद्ध किये जा रहे सत्यागह के समर्थन में दिनांक 4.6.2011 को नवीन मार्केट स्थित शिक्षक पार्क, परेड कानपुर में पांतजलि योग समिति और भारत स्वाभिमान संस्था से मिलकर संयुक्त रूप से आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर के द्वारा धरना व अनशन किया गया। जिसमें सभा के मंत्री श्री सतीश कुमार आर्य जी ने श्रीमती चन्द्र कान्ता गेरा, श्रीमती संतोष अरोड़ा, शिव कुमार आर्य, श्री बाल गोविन्द जी के साथ मिलकर यज्ञ कर अनशन का प्रारम्भ किया, जिसमें श्री हनुमान प्रसाद आर्य राधेश्याम आर्य, श्री वेद प्रकाश आर्य, श्री कैलाश चन्द्र गुप्ता, श्री पारस पुरवार, श्री वीरेन्द्र कुमार कुन्द्रा, श्री सुरेन्द्र गेरा, श्रीमती सरोज अवस्थी, श्रीमती संगीता सचान आदि तमाम आर्यजनों ने भाग लिया।

4. **(श्रावणी पर्व) वेद प्रचार सप्ताह दिनांक 14 अगस्त से 21 अगस्त, 2011 तक –**

पूर्व वर्षों की भाँति उक्त वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन जिला सभा द्वारा किया गया। जिसमें रूद्र पुर के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री प्रभात कुमार जी एवं श्री रवीन्द्र जी आर्य को और उपदेशक पं. महेन्द्र पाल जी आर्य, दिल्ली वालों को आमंत्रित किया गया। उक्त तीनों लोगों ने अपने सुमधुर भजनों से तथा कुशल उपदेशामृत के माध्यम से सम्पूर्ण प्रचार अवधि में नगर की आर्य जनता को और आर्य समाज से संबंधित स्कूल कॉलेज के छात्र–छात्राओं को प्रभावित किया। वेद प्रचार कथा का प्रारम्भ गैर आर्य समाजी परिवार एवं कानपुर के प्रतिष्ठि व्यापारी नेता श्री रतन गुप्ता के निवास म. नं. 841 अफीम कोठी, कानपुर से प्रातः प्रारम्भ किया गया। सायं आर्य समाज ग्वालटोली, पुनः प्रातः आर्य समाज सीसामऊ सायं श्री हनुमान प्रसाद आर्य भूतपूर्व जिला प्रधान के निवास पर, श्री आदर्श नेता जी सुभाष विद्यालय, कृष्णा नगर, नवाबगंज आर्यसमाज, आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, गोविन्द नगर, छोटी राम लीला पार्क शास्त्री नगर द्वारा आर्य समाज उद्योग नगर, पुरवार इण्टर कॉलेज, नौबस्ता, श्रीमती उषा देवी पत्नी स्व. ओम प्रकाश आर्य, गुजैनी, आर्य वैदिक विद्यालय इण्टर कॉलेज, अर्मापुर, श्रीमती क्षमा बाजपेई, रतनलाल नगर, आदर्श सरस्वती विद्यालय इण्टर कॉलेज, लाल बंगला, श्री कैलाश चन्द्र गुप्ता, चन्द नगर आर्यसमाज, श्री ओम प्रकाश

गुलाटी रतनलाल नगर, दबौली, श्री वेद प्रकाश आर्य, आर्य समाज हीरा गंज आदि स्थानों पर प्रातः और सायं किया गया। वेद प्रचार सप्ताह के कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाने में आदरणीय गुरूजी श्री धर्मानन्द जी शास्त्री जी के साथ–साथ स्थानीय विद्वान वक्ताओं ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। जिनके नाम निम्न हैं – श्री आनंद जी आर्य, श्रीमती चन्द्रकांता गेरा, श्री वेद प्रकाश आर्य एवं डॉ. श्रुति कीर्ति आर्या।

वेद प्रचार सप्ताह – 2011 से आय – कुल 8403 रूपये। और व्यय 19649 रूपये।

दानदाताओं के नाम – श्री रतन गुप्ता जी 500रू, श्रीहनुमान प्रसाद आर्य 1100 रू., श्री शिवकुमार आर्य 1100 रू, आर्य समाज उद्योग नगर 1900 रू, श्री संतोष आर्य 100 रू., श्री अनिल कुमार पुरवार 100 रू, श्री बुद्धिराम शर्मा 150 रू, आर्य वैदिक इण्टर कॉलेज अर्मापुर 500 रू, श्रीमती क्षमा बाजपेई 201, श्री रवीन्द्र कुमार कुन्द्रा रतन लाल नगर, आर्य समाज 1000 रू श्रीमती साधना सिंह हीरागंज 500, श्री चन्द्रेश सिंह प्रबन्धक आदर्श सरस्वती विद्यालय इण्टर कॉलेज लाल बंगला 251रू, श्री अमित गुप्ता चन्द नगर आर्यसमाज 500 रू, श्री ओम प्रकाश नेता जी 500रू। इस प्रकार उपरोक्त दान दाताओं ने विशेष रूप से आर्थिक योगदान प्रदान कर आर्य उपप्रतिनिधि सभा द्वारा किये गये वैदिक कार्यक्रमों को गति प्रदान की।

5. <u>स्वतन्त्रता सेनांनी श्याम जी कृष्ण वर्मा की जयंती</u> – दिनांक 4.10.11 को आर्य समाज दर्शन पुरवा में उक्त कार्यक्रम मनाया गया। कार्यक्रम में उपस्थिति विभिन्न वक्ताओं ने श्याम जी कृष्ण वर्मा के जीवन और कृतित्व पर प्रकाश डाला जिनके नाम निम्न हैं। श्री शिव कुमार आर्य, श्री मुनीन्द्र शास्त्री जी, श्री वेद प्रकाश आर्य, श्री श्याम बिहारी आर्य, श्री कृष्णपाल राजपूत, श्रीमती कैलाश मोंगा, श्रीमती मौसमी आर्या, कार्यक्रम की अध्यक्षता उप प्रधान श्री विनोद चन्द्र श्रीवास्तव जी ने की और सभा का संचालन सभा मंत्री श्री सतीश कुमार आर्य ने किया।

6. <u>महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस</u> – (दीपावली) जिला सभा के तत्वावधान में दिनांक 26.10.11 को आर्य समाज सीसामऊ में महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस का कार्यक्रम मनाया गया। इस कार्यक्रम को सफलता पूर्वक मनाने में श्री विनोद चन्द्र श्रीवास्तव, डॉ. अयोध्या प्रसाद साहू, श्री वेद प्रकाश आर्य, श्री दुर्गा प्रसाद जी, श्रीमती सरला आर्य, श्री श्याम प्रकाश शास्त्री, श्रीमती चंन्द्रकाता गेरा, श्रीमती संतोष अरोड़ा, श्रीमती सरोज अवस्थी आदि का मुख्य योगदान रहा।

7. <u>स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस</u> – सभा के तत्वावधान में इस कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 23.12.2011 को आर्यसमाज उद्योग नगर, कानपुर में किया गया। उक्त कार्यक्रम को

सफलतापूर्वक मनाने में श्री शिव कुमार आर्य, श्री श्याम बिहारी आर्य, श्री कैलाश चन्द्र गुप्ता, श्री हरिवंश आर्य सरल, श्री श्याम प्रसाद शास्त्री, श्री जय विष्णु सिंह जी आदि ने वक्ता के रूप में योगदान दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सभा प्रधान श्री शुभ कुमार बोहरा ने की तथा सभा का संचालन सभामंत्री सतीश कुमार आर्य जी ने किया।

8. <u>मकरसंक्राति का कार्यक्रम –</u> जिला सभा द्वारा उक्त कार्यक्रम दिनांक 15.1.2012 को आर्य समाज उद्योग नगर के सहयोग से और श्री शरद चन्द्र कोहली के प्रतिष्ठान 'कोहली फैशन' के सहयोग से 297/05 विजय नगर सब्जी मण्डी के पास प्रातः 9 बजे से 2 बजे तक मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ श्री जय विष्णु जी द्वारा हवन कराकर किया गया। तत्पश्चात खिचड़ी भोज एवं वितरण का कार्य भी किया गया। उपस्थित लोगों को मकर संक्राति के महत्व के सम्बन्ध में निम्न वक्ताओं ने सम्बोधित किया – श्री विनोद कुमार वर्मा, राम लखन आर्य, श्री श्याम बिहारी आर्य, श्रीमती संतोष अरोड़ा, श्रीमती चन्द्रकाता गेरा, श्रीमती उर्मिला आर्या।

9. <u>महर्षि दयानन्द जयन्ती समारोह –</u> दिनांक 17.2.12 को महर्षि दयानन्द जयन्ती समारोह का आयोजन आर्य कन्या इण्टर कॉलेज गोविन्द नगर के प्रांगढ़ में किया गया। जहाँ पर भारी संख्या में कालेज की छात्राओं ने, अध्यापिकाओं ने और नगर की विभिन्न आर्य समाजों से सम्बन्धित आर्य जनों एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सभा प्रधान श्री शुभ कुमार बोहरा जी ने की एवं सभा का संचालन सभा मन्त्री श्री सतीश कुमार आर्य जी ने किया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता आचार्य श्री राजाराम जी आर्य, (रिटायर्ड प्रोफेसर संस्कृत विभाग अतर्रा विश्वविद्यालय, रूहेलखण्ड), थे उनके अलावा वक्ताओं मे श्रीमती कैलाश मोंगा, श्री कमल जी आर्य, श्री शिव कुमार जी आर्य आदि थे। श्री जलेश्वर मुनि जी ने अपने ओजस्वी भजनों के माध्यम से अपने विचार रखे। इसके पूर्व श्रीमती चन्द्रकान्ता गेरा जी द्वारा कालेज की शिक्षिकाओं एवं छात्राओं के साथ बैठकर यज्ञ कराया गया। अन्त में पूर्व सभा प्रधान श्री हनुमान प्रसाद आर्य की प्रेरणा से श्री अश्वनी कुमार गुप्ता द्वारा प्रसाद का वितरण भी किया गया।

10. <u>ऋषि बोध उत्सव –</u> दिनांक 20.2.2012 को जिला सभा द्वारा आर्य समाज मेस्टन रोड, कानपुर के वार्षिकोत्सव के अन्तिम दिन में सायं साढ़े पांच बजे से मनाया गया। उक्त कार्यक्रम की अध्यक्षता सभा प्रधान श्री शुभ कुमार बोहरा ने की एवं संचालन सभा मन्त्री श्री सतीश कुमार आर्य ने किया। मेस्टन रोड आर्य समाज के वार्षिकोत्सव में पधारे भजनोंपदेशक श्रीयुत जय प्रकाश शर्मा, श्रीयुत सत्य प्रकाश, श्रीयुत जलेश्वर मुनि जी ने अपने सुमधुर भजनों को प्रस्तुत किया। श्रीयुत

आचार्य अशर्फी लाल शास्त्री जी ने अपने विचार रखे। सभा प्रधान श्री शुभ कुमार बोहरा जी ने अध्यक्षी भाषण देते हुए सभी जनों को धन्यवाद ज्ञापित किया। अन्त में जय सिंह मन्त्री आर्य समाज मेस्टन रोड ने भी धन्यवाद प्रकाशित किया।

11. **पं. लेखराम बलराम दिवस** – दिनांक 24.2.2012 को आर्य समाज जूही के वार्षिकोत्सव के प्रथम दिन सायं 6 बजे से पं. लेखराम बलिदान दिवस का कार्यक्रम जिला सभा द्वारा मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सभा प्रधान श्री शुभ कुमार बोहरा ने की एवं सभा का संचालन सभा की उपमंत्री डॉ. श्रीमती संतोष अरोड़ा ने किया, आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी ने तथा अन्य वक्ताओं ने अपने–अपने विचारों को रखा एवं श्री प्रताप सिंह आर्य जी ने अपने सुमधुर भजन प्रस्तुत किये।

12. **होली मेला** – दिनांक 14.03.12 को होली मेला के दिन सरसैइया घाट के पहले स्थित कैलाश नाथ बलिका विद्यालय के गेट के सामने लेन्ट लगाकर जिला सभा द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें यज्ञ, भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के आयोजन में श्री कैलाश चन्द्र गुप्ता जी का विशेष सहयोग रहा। आर्य समाज जूही द्वारा इस कार्यक्रम में माइक आदि की व्यवस्था की गई तथा पूजा हवन आदि का समस्त सामान आर्य समाज गोविन्द नगर द्वारा प्रदान किया गया। सभा प्रधान श्री शुभ कमार बोहरा जी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा संचालन पूर्व मंत्री श्री हरिवंश आर्य सरल जी ने किया।

13. **आर्य समाज स्थापना दिवस** – दिनांक 23.3.12 को आर्य समाज सीसामऊ में उक्त कार्यक्रम का आयोजन जिला सभा द्वारा किया गया। उक्त कार्यक्रम की अध्यक्षता सभा प्रधान श्री शुभ कुमार जी ने किया। एवं संचालन सभा मंत्री श्री सतीश कुमार आर्य ने किया। मुख्य वक्ता श्री राजाराम आर्य जी थे। इसके अलावा श्रीमती सरला चौधरी जी ने श्री विनोद कुमार वर्मा जी ने अपने विचार प्रस्तुत किये। कु. सौम्या, श्रीमती उर्मिला आर्या और श्रीमती चन्द्रकांत गेरा जी ने अपने सुमधुर भजन प्रस्तुत किये। अन्त में आर्य समाज सीसामऊ और जिला सभा द्वारा प्रसाद भी वितरण किया गया।

14. **रामनवमी** – दिनांक 1.4.12 को आर्य उपप्रतिनिधि सभा, कानपुर नगर के तत्वावधान में 117/K/13 गुटैइया, निकट – रेव मोती बिग बाजार, सर्वोदय नगर कानपुर के मोती बिहार प्रांगड़ में स्थित – पार्क में सायं 4.30 यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। यज्ञ के यजमान श्री दिनेश्वर दयाल इंजी. एवं उनकी पत्नी श्रीमती चित्रा दयाल थी तथा यज्ञ की पुरोहित चन्दकांता गेरा थी।

तत्पश्चात जलेश्वर मुनि, अनिल कुमार चौपड़ा एवं रवीन्द्र जी आर्य ने अपने सुमधुर भजनों के माध्यम से सभी को सम्मोहित कर दिया। उपस्थित जनों को रामनवमी पर सम्बोधित करने वालों में श्रीमती कैलाश मोंगा श्री मुनीन्द्र शास्त्री श्री विनोद कुमार वर्मा, श्री अशोकानन्द, श्रीमती सरोज बुधवार थी, धन्यवाद देने वालों में श्री राम जी सेठ, श्री हनुमान प्रसाद आर्य थे। अन्त में सभा प्रधान श्री शुभ कुमार बोहरा ने सभी जनों को धन्यवाद दिया। प्रसाद का वितरण श्रीराम जी सेठ ने किया तथा कार्यक्रम का संचालन सभामंत्री श्री सतीश कुमार आर्य ने किया। स्वरूप नगर आर्य समाज के कोषाध्यक्ष श्री अशोक आनन्द जी ने दो चित्र फ्लैक्स के श्री राम जी का श्री दयानन्द जी का जिला सभा को भेंट किया।

अन्त में मैं सभा मन्त्री उपस्थित आप सभी महानुभावों का आभार प्रकट करता हूँ निवेदन साथ ही निवेदन करता हूँ कि इस वर्ष की जिला सभा द्वारा संचालित कार्यक्रमों के आयोजन में एवं संचालन में यदि कोई त्रुटि एवं भूल हुई हो तो उसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। किसी भी सदस्य द्वारा यदि कोई भूल हुई हो तो उसपर ध्यान न दें। अपितु महर्षि दयानन्द सरस्वती के वैदिक विचारधारा के प्रचार–प्रसार में अपना भरपूर सहयोग प्रदान करते रहें। वर्ष के दौरान सभी दान–दाताओं का, विद्वानों का एवं विदुषी मातृशक्तियों के भरपूर सहयोग के लिए आभार प्रकट करता हूँ परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा तथा आप सभी महानुभावों के पुरूषार्थ से इस वर्ष के सम्पूर्ण कार्यक्रम सम्पन्न हुए हैं एवं स्मारिका निष्पादन का कार्य भी सम्पूर्ण रूप से चल रहा है इसके अलावा जिला सभा द्वारा आर्य समाजी परिवारों की जनगणना हेतु सभी को जनगणना फार्म छपवाकर उपलब्ध कराया गया साथ ही साथ जिला सभा के सभी पदाधिकारियों एवं अन्य सदस्यों का आई कार्ड (फोटो पहचान पत्र) बनवाने हेतु कार्ड छपवाकर दिया। इसके लिए आप सभी लोगों को धन्यवाद।

कुछ तो बहाना ढूँढो

- सुरेश चन्द्रा 'सुराज'
केशव नगर-लखनऊ

इस दुनियाँ से जाने का जब दिन कोई मुकर्रर नहीं,
तो जिन्दगी को जिन्दा दिली से जीने का बहाना ढूँढों।
हर साँस में कौन है आखरी साँस कोई मुकर्रर नहीं,
तोहर सांस में हो एक नया अहसास, कोई ऐसा बहाना ढूँढों।
ज़िन्दगी बहुत है छोटी, यह ख्याल न लाओ दिल में,
एक हसीन लम्बी जिन्दगी हो, एक ऐसा बहाना ढूँढों।
जलने वालों को तुम न देखों इस तरह खुद जल कर,
उनकी जलन को कम करने का कुछ तो बहाना ढूँढों।
न करे कोई नफरत, न लाये गलत फहमी दिल में,
वो, करें बेइंतहा मुहब्बत, कुछ ऐसा बहाना ढूँढों।
पास रहकर भी रहते हैं, जो बहुत दूर तुमसे,
वो दूर रह कर भी रहें करीब ऐसा बहाना ढूँढों।

खुदा का शुक्र है कि दी उसने बेटियाँ हमको

बिना दुआ के जो मिल जाये वही मोती है,
वरना बेवजह परेशां होकर दुनियाँ न जगती है न सोती है
तुम जमाने के कहने की परवाह न करना,
मुझे जो खुशी है उसे मुश्किल है बयान करना।
क्या हैं खूबियाँ तुममें, बताना है बहुत मुश्किल।
नही भूल सकता तुम्हारी पैदाइश से जवाँ होने तक के वो लम्हें,
तुम्हारी रौशनी से ही मेरा जिन्दगी के हर रास्ते है संभले।
न होना तुम कभी परेशान, अगर गर्दिश के दिन आये,

न डगमगाना तुम, कितने भी तूफान आयें,
चुपचाप सहन करना ही हर मुश्किल भगाता है,
तुम्हारा यही रूप देख, तूफान खुद–ब–खुद थम जाता है।
बेटी जब मुस्कराती है, तो किसी नर्गिस से कम नहीं होती,
और अगर तराशा ठीक से जाये, तो बेटे से कम नहीं होती।
बस यही अफसोस है हमको तुम रहोगी साथ सिर्फ कुछ दिन,
पर रहो खुश जिन्दगी में तुम दुआ करते हम सब दिन।
उसकी शादी की रुख्सती पर खुशी के आँसू निकलते हैं,
पर ये तो कुदरत का है दस्तूर, ऐसा लोग कहते हैं।
बेटी की जिन्दगी के दो किरदार होते हैं,
उसका लड़कपन तो 'माँ' के घर गुजरता हैं,
बड़ी होने पर दूसरी माँ का घर 'अपना घर' ही होता है।
अपने इस तजुर्बे से यही दुआ करता हूँ मै हर दिन,
कि हर घर में एक बेटी हो जरूर,?
ताकि उसके भी बहुर जायें सब दिन।

जिन्दगी को हसीन बना लीजिये

यूँ तो है मुश्किलें, जिन्दगी में बहुत,
फिर भी सहकर जिन्दगी को सजा लीजिए।
दे दे ठोकर कोई भूल से आपको,
उसे माफ़ कर गले से लगा लीजिये।
मजाल किसी की नहीं छेड़े आपको कभी,
फिर भी बच्चा समझ उसे भुला दीजिये।
नफ़रत वालों की जहान में कमी है नहीं,
अपनी मुहब्बत से उन्हें भी बुला लीजिये।

तजुर्बे आपके हैं बहुत, जिन्दगी में मगर,
उन तजुर्बो से सभी को नहला दीजिये।
जुर्म आखिर है क्या, गरीबों ने किये,
उनके वास्ते खुदा से दुआ कीजिये।
जिन्दगी–मौत है, हकीकते जिन्दगी,
इन्हे ज्यादा तवुज्वय न दिया कीजिये।
क्या है फर्क एक इन्सान व शैतान में,
इन्सान बनकर जहाँ को दिखा दीजिये।

पाप और पुण्य

- डॉ0 संतोष अरोड़ा

फल मिलता दिखाई नहीं पड़ता अपितु वह फलता– फूलता दिखाई पड़ता है। ऐसी स्थिति को देखकर लोग यह समझ बैठते हैं कि पाप का फल नहीं मिलता और वे भी पापकर्म में लिप्त हो जाते हैं। परन्तु ऐसा सोचना उनकी अज्ञानता है, मूर्खता है। संसार में देखा जाता है कि कोई फसल दो माह में फल देती है कोई छः माह मे तो कोई वर्ष– दो वर्ष में। इसी प्रकार पापकर्म भी पुण्यों के साथ मिलकर उग्रता और शिथिलता के अनुसार फल देते है तो कभी इक्ट्ठे होकर विनाशकारी फल देते हैं। इतिहास इस बात का प्रमाण है कि कितने ही राजा अधर्म अन्यायापूर्वक शासन करते हुए ठाठ से रहे किन्तु उनका अन्त बहुत बुरा हुआ भावी पीढ़ियाँ नष्ट हो गई।

महार्षि मनु लिखते हैं – **अधर्मे वैधते तावत्ततों भद्राणि पश्यन्ति।**

ततः सपत्नान् जयति समूलस्तु विनश्चति।।

अर्थात् 'अधर्म के द्वारा पहले मनुष्य बढ़ता हुआ दीखता है। फिर धन प्रतिष्ठा आदि को भी प्राप्त करता है। फिर अन्याय से शत्रुओं को भी जीत लेता है किन्तु अन्त में वह इस प्रकार नष्ट हो जाता है कि जैसे कोई वृक्ष जड़ से उखड़ कर् नष्ट हो जाता है। मनुष्य किस प्रकार पापकर्मो में प्रवृत होता है मनु कहते है –

इन्द्रियाणां प्रसंगेन धर्मस्यासेवनेन च ।

पापान् संयान्ति संसारानविद्वांसो नराधमाः।।

अर्थात् मूर्ख और अर्धम कोटि के मनुष्य इन्द्रियों के विषयों मे फंसते है और धर्म का पालन न करने से पापकर्मो में प्रवृत्त हो जाते है। फिर जैसे–जैसे उन विषयों का बार–बार सेवन करते है उनमें उतनी ही आसक्ति बढ़ जाती है और वे संसार में लिप्त हो जाते है। इस प्रकार विषयों और धर्म का सेवन ही पापकर्मो का मूल है। जितेन्द्रिय बनकर मनुष्य पापो से बच सकता है। अपने जीवन में मनुष्य मन, वाणी और शरीर से जो कर्म करता है, शास्त्रकारों ने उसे दो भागों में बाँटा है। जिन्हे शुभ–अशुभ, अच्छा–बुरा या पाप–पुण्य कर्म कहा जाता है धर्मानुकूल होने के कारण अच्छे

कर्मो को धार्मिक कर्म या धर्म कहा गया है इसके विपरीत अधर्मानुकूल होने के कारण बुरे कर्मो को अधार्मिक कर्म या अधर्म कहा गया है। धर्म का फल सुख और अधर्म का फल दुःख है। इसलिए मनुष्य को अधर्म अर्थात् पापकर्म आपत्ति में भी नही करने चाहिए। मनुस्मृति में पापकर्म करने वालों के लिए लिखा है– **न सीदन्नपि धर्मेण मनोऽधर्मे निवेशयेत्।**

अधार्मिकाणां पापानामाशु पश्यन् विपर्ययम्।।

अर्थात् 'अधर्मरूप पापकर्मो का शीघ्र ही और अवश्य ही बुरा फल मिलता है, यह समझते हुए मनुष्य को कभी भी पापकर्म में मन नहीं लगाना चाहिए। अर्थात् पाप का मन में भी ध्यान नहीं करना चाहिए। तभी मनुष्य सुख और शान्ति से रह सकता है। यही नहीं अगला जन्म भी उसे अच्छे कर्मो के आधार पर अच्छा मिल सकता है। क्योकि मनुष्य के साथ संसार का कोई पदार्थ नहीं जाता केवल अच्छे बुरे कर्मो के संस्कार साथ जाते है। उन्ही के अनुसार उनकी भावी योनि और सुखी–दुखी जीवन का निर्धारण होता है।

कुछ लोग सोचते है कि पाप, अधर्म करके गंगा आदि तीर्थ स्थानों में स्नान आदि करके दान व परमात्मा की भेंट आदि चढ़ाकर क्षमा माँग लेगे तो उनको पाप कर्मो से मुक्ति मिल जायेगी। ये सब बाते भ्रान्तिपूर्ण, मिथ्या और स्वयं को धोखा देने वाली है। सभी को यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कर्मो फल अवश्य ही भोगना पड़ता है।

कभी–कभी हम देखते है कि पाप करने वालो को पाप का आभास नहीं होता। मनु ने सभी पापकर्मो को मानसिक, वाचिक, और शारीरिक इन तीनों वर्गो में बांटकर प्रमुख पापों का उल्लेख भी किया है। उनके अनुसार दूसरे के धन–पदार्थ को अपहरण या चोरी करने का विचार, दूसरे का बुरा सोचना, ईर्ष्या–द्वेष करना, गन्दी बातो का चिन्तन, ये प्रमुख मानसिक पाप है। कठोर भाषण, झूठ बोलना, चुगली करना, लांछन लगाना ये प्रमुख वाचिक अर्थात् वाणी के पाप है। चोरी करना, हिंसा करना, परस्त्रीगमन, ये प्रमुख शारीरिक पाप है। मनुष्य मानसिक पापो को मन से वाचिक पापों को वाणी से शारीरिक पापों को शरीर से योग्यता है। मनुस्मृति में यह भी बतलाया गया है कि मानसिक पापों की अधिकता होने से चाण्डाल आदि का नीच जन्म वाचिक पापो की अधिकता से वृक्ष वनस्पतियाँ का जन्म मिलता है। इसलिए पापकर्म का विचार ही नहीं करना चाहिए विचार ही नहीं आयेगा तो वाणी और शरीर से पाप होगा ही नहीं।

कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य कर्म कौन–कौन से है। इसका शास्त्रों में स्पष्ट निर्धारण किया गया है। अतः वेदोक्त ग्रन्थों को जानकर, समझकर उनका पालन करना चाहिए। मनुस्मृति के अनुसार–

यत्कर्म कुर्वतोऽस्य स्यात्परितोषोऽन्तरात्मनः।

तत्प्रयत्नेन कुर्वीत विपरीतं तु वर्जचेत्।।

महर्षि दयानन्द इसका अर्थ करते हुए लिखते हैं– जिस कर्म के करने से मनुष्य की आत्मा को सन्तुष्टि एवं प्रसन्नता का अनुभव हो अर्थात् शंका, लज्जा का अनुभव न हो। उस कर्म को प्रयत्न पूर्वक करें। जिससे सन्तुष्टि एवं प्रसन्नता न हो उस कर्म को न करें। पुण्य ही आत्मा को प्रिय होते हैं। अतः पुण्य कर्म ही करने चाहिए।

आर्य समाज स्थापना दिवस एवं भारतीय नवसंवत्सर के शुभअवसर पर

नगर के समस्त निवासियों एवं आर्यजनों को बहुत बहुत बधाई

एवं शुभकामनायें!

RB

Girish Omer
Propriter

R. B. ENTERPRISES

Mob.: 0512-3298802, 2342074

-: OFFICE ADDRESS :-

80/71,-Cooperganj, Kanpur Nagar - 208 001

क्योंकि मैं लड़का हूँ

- विनोद चन्द्र श्रीवास्तव

"मेरी तो कुछ बात ही और है। मेरे पैदा होते ही घर में शंख बजा था, कांसे की थाली बजी थी। घी के दीए जले थे, घर में मंगल गान हुआ था। और जब तू पैदा हुई थी घर में रुलाई छा गई थी। तेरा तो नामकरण भी मेरी तरह धूम–धाम से नहीं हुआ था। तू मेरे से क्या मुकाबला करेगी, जराअपना और मेरा भोजन देख। याद है तुझे उस दिन पापा जब घर में आम लाए थे तो मुझे सबसे बड़ा आम मिला और तुझे एक छोटी सी कटी हुई पतली छिपली। चैतले (त्यौहार) के दिन मेरे लिए मनचाहे कपड़े बने थे और तेरे लिए हरे गाढ़े रंग का झिगोला (झबला), जिसे देखकर तू रो पड़ी थी। मुझे एक बार हल्का बुखार आया था तो पापा तुरन्त दवा ले आए थे और तू एक बार कई दिन तक बिस्तर पर पड़ी रही, तेरे लिए केवल झाड़–फूंक और बभूत (विभूति) ही किया गया था। मुझसे टक्कर मत ले, जा घर का काम कर। मैं कोई काम नहीं करूँगा क्योंकि मै लड़का हूँ। मैं खेलने जा रहा हूँ। तू सब्जी काट, रोटी पका, कपड़े धो, चारा डाल, पानी ला, खेती का काम देख और मम्मी का हाथ बटा। मेरी और टेढ़ी नजर से मत देख। मैं लड़का हूँ लड़का। दुल्हन लाऊँगा। तू तो पराया धन है, ससुराल चली जाएगी। वहाँ काम नहीं करेगी तो बदनामी हमारी होगी। वे लोग कहेंगे कि खाना बनाना तो दूर इसे तो आटा गूंधना भी नहीं आता।"

यह व्याख्यान एक भाई अपनी बहन को दे रहा था और बहन चुपचाप सुनते जा रही था। रो रही थी और सोच रहीं थी, "क्या लड़की होना श्राप है? यदि लड़की नहीं होती तो लड़के कहाँ से आएँगे? पेड़ से या पत्थर से? यह छोटी सी बात लोगों की समझ में क्यों नहीं आती? पड़ोस की भाभी कह रही थी बच्चा होना अच्छा तो लगता है परन्तु लड़के की चाह में यह नौ महीने की मोल ली हुई सजा है। आखिर ये लड़के माँ–बाप को क्या देते हैं जो लड़कियाँ नही दे सकती। लड़का– लड़का कहने वाली माँ जब सास बनती है तो वह भी अपनी बहू से खुश नहीं रहती।"

"स्कूल की छुट्टियाँ पड़ी है। मैं पूरे दिन घर पर घुटती रहती हूँ, पिसती रहती हूँ और भैया पूरे दिन क्रिकेट के मैदान में रहता है। केवल पेट भरने और पानी पीने ही घर आता है। आखिर वह घर के काम में हाथ क्यों नही बटाता? मैं भी तो देख रही हूँ दो सन्तानों में यह पक्षपात। पड़ोस के बिसन दा नौकरी से आए थे तो उनके घरवाले हमें एक कटोरे में गट्टे, चने और लीची दे गए थे। मम्मी ने सब भैया के समाने उड़ेल दिया। जब मै टुकर – टुकर देखती रही तो दो चने के

दाने मेरी ओर भी लुढ़का दिये। घर आये मेहमान के लिए पुवे बनाए थे उस दिन भी मेरे हिस्से जले हुए पुवे आए जबकि भैया को छटा हुआं खरा माल दिया गया। मैं कभी–कभी सोचती हूँ मम्मी भी तो कभी लड़की रही होंगी। मम्मी बनते ही उनके अन्दर की लड़की कहाँ चली गयी। क्या सबकी मम्मी ऐसा ही करती हैं। वह मुझमें और भैया में अन्तर क्यों देखती हैं।''

'मै बिना पारिश्रमिक की बंधुआ मजदूर तो नहीं हूँ। मैने भी तो मम्मी की कोख से जन्म लिया है। फिर मेरे साथ जन्म से ही इतना भेदभाव क्यों? स्कूल में अध्यापिका तो लड़का और लड़की पनपने के गुणसूत्र में लड़के को कमजोर और लड़की को मजबूत बता रही थी। कह रही थी कि लड़की की उत्पत्ति 'गल' गुणसूत्र (क्रोमोसोम) से होती है जो एक विषम तथा कमजोर जोड़ा है और लड़की उत्पति 'गग' गुणसूत्र से होती है जो सम तथा ताकतवर जोड़ा है। फिर हमें कमजोर क्यों कहा कहा गया है? जब मैं भैया से अधिक काम कर रही हूँ, देर से सोकर जल्दी उठ रही हूँ तो फिर परिश्रम में आगे तथा खाने में मुझे पीछे क्यों रखा जा रहा है?''

''बात समझ में आ गई है। मैं प्रधान समाज में जन्मी हूँ जहाँ पुरूषों का ही आदेश मानने की परम्परा में ढाला जाता है ।अब तो विज्ञान् ने भी एक ऐशी मशीन डॉक्टरो को दे दी है जो माँ के पेट से ही पता लगा लेते है कि कन्या बाहर आने वाली है और कन्या रूपी अजन्मे भ्रूण की हत्या कर दी जाती है। कहा तो यह भी जा रहा है कि देश में यदि इसी तरह अजन्मी कन्याओं की हत्या जारी रही तो एक दिन ऐसा भी आ सकता है जब कन्या पूजन का ढोंग करने वालों को कन्याएं नही मिलेंगी। परम्परा ढोने का जिम्मा भी समाज ने हमारे ही नाम डाला है। हम माँ–बाप को मुखग्नि नहीं दे सकतीं, पिंडदान नहीं कर सकती, श्राद्ध नहीं कर सकती, ये नहीं कर सकतीं, वो नहीं कर सकतीं। इन्ही बन्धनों ने हमें निचले दर्जे का नागरिक बना दिया है।''

''अब समय आ गया है जब मुझे अपनी बात कहनी ही होगी। जब हम अनपढ़ थी तो हमें पांव की जूती भी कहा गया । कुछ पुरूष तो आज भी कह रहे हैं। अपनी पत्नियों से सलाह तक नही ले रहे कि लड़के के चक्कर में और कितनी अनचाही कन्याएं पैदा करनी हैं या उनकी गर्भ में ही हत्या करवानी है। आने दो भैया को घर। जब वह पसीना पोंछते–हांफते खेलकर घर आते ही मुझे पानी लाने का आदेश देगा तो आज उसे नहीं मानूँगी। आज झाँसी की रानी का इन्कलाब जागेगा यहाँ पर। आज हमारे प्रजातन्त्र के संविधान के उस पन्ने पर यहाँ बहस होगी जिसमें लिखा है। पुत्र–पुत्री में कोई अन्तर नहीं है।

इतने में ही भाई उछलकूद करते हुए धड़ाम से खटिया में बैठता हुआ बोला, ''देख नहीं रही है बाहर से आया हूँ , जा पानी ला। ''मैंने अनसुना कर दिया। वह फिर बोला, '' बहरी हो गई है ? पानी ला प्यास से गला फट रहा है।'' विनम्रता से कहा, '' मैं पढ़ रही हूँ। खुद पीकर आओ।''

'' किताब उधर रख । अब कौन सा बैरिस्टर बनेगी तू। जा जल्दी पानी ला, फिर चाय बना।''

मैंने कहा ना मै नहीं लाउँगी। खुद पीकर आ । और चाय भी पीनी है तो बना ले । मै। नौकर नहीं हूँ तेरी। बहुत सेवा कर ली है मैंने।

तेरी हिम्मत कैसे हुई मना करने की। रूकजा ! मम्मी आ गई । समझा ले इसको। इसकी गवर्नरी यहाँ पर नहीं चलेगी। कह रही है न पानी लाउँगी, न चाय बनाउँगी। भैयाा ने मम्मी के आते ही चिल्लाकर कहा। मम्मी ने भी मेरी तरफ रजिया सुलतान की तरह देखा और बोली, ' क्यों री , पानी पिला देगी तो मर जाएगी क्या ? ससुराल में ऐसा ही करेगी तो हमारी नाक कटेगी । तेरी सास कहेगी, इसकी माँ निगोड़ी ने इसे कुछ भी नही सिखाया।' बन्द कर इस किताब को। उसके लिए पानी ला, फिर चाय बना । तेरे पापा आने वाले होंगे। सब्जी काट, आटा गूंध । रोटी उनके आने के बाद बनाएगी। मैं नहीं उठी। मम्मी मेरी ओर बढ़ते हुए झुल्लाकर बोली, उठती है या........... .... उन्होंने मुझ पर हाथ उठाना चाहा।

रूक जाओ मम्मी। मुझ पर हाथ मत उठाओ।मुझे जान से मार दो ताकि न यहाँ कलह रहेगा न ससुराल में तुम्हरी नाक कटेगी। आज फैसला हो जाने दो, आज न पानी पिलाऊँगी, न चाय बनाउँगी और न रोटी बनाऊँगी। तुम भी कुछ मत करो। आज से सब काम मिलजुल कर होगा। वे सभी काम भैया भी करेगा जो मै करती हूँ भैया छात्र है तो मै छात्रा हूँ । खाना यह भी खाता है मैं भी । तुमने अब तक जो भी भेदभाव अपनी दो सन्तानों में किया है वह अब नहीं चलेगा। आज भी नहीं चलेगा और कल भी नहीं। एक दिन मैं इस घर से चली जाऊँगी और यहाँ भाभी आ जाएगी। भाभी वह नही करेगी जो मैं कर रही हूँ क्योंकि तुम अभी से पढ़ी–लिखी मास्टरनी लाने की बात कर रही हो। मास्टरनी वह सब नहीं करेगी जो तुम मुझसे करवा रहे हो। हाँ , उसके साथ मिलजुल कर रहोगे तो वह अवश्य करेगी । वह किसी भी हालत में न तुम्हारी नौकरानी बनेगी, और न आगे–पीछे घूमेगी। नौकरी के साथ –साथ तुम उससे घर के पूरे काम की आशा मत करना। इसलिए भैया को भी पता होना चाहिए कि रोटी बनाने के लिए आटे में कितना पानी पड़ता है।''

याद रखो भैया , कोई भी काम लिंग से परिभाषित नहीं होता। सबको सब कुछ करना है। रसोई का काम हमारे ही नाम नहीं लिखा है। रोटी पकाने के लिए कोख की आवश्यकता नहीं होती, केवल दो हाथ चाहिए जो तुम्हारे पास भी है। इतना कह कर मैं पानी लाने चली गई। मैं गिलास में पानी डालने ही वाली थी भैया ने चुपके से गिलास उठा लिया और बड़े धैर्य से बोला, '' मैं बिना पंख के आसमान में उड़ रहा था। बिना सूड़ का हाथी बन गया था मैं। स्वयं को एक

तानाशाह बना दिया था मैंने। अच्छा हुआ तुमने मुझे जमीन पर ला दिया। आज मैं समझ गया हूँ कि मैं लड़का जरूर हूँ परन्तु किसी भी हालत में लड़की से बढ़कर नहीं हूँ।

मैं आज और हमेशा अपनी बहन का ऋणी हूँ और रहूँगा भी क्योंकि उसने मुझे नींद से जगाकर नया सवेरा दिखाया हैं।

आर्य समाज की स्मारिका "वेद ज्योति" के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ ....! ☎ 9455229941

प्रो० मनोज निगम

आधारिका गिफ्ट एवं खिलौने

हमारे यहाँ हर प्रकार का स्पोर्टस का सामान उचित मूल्य पर मिलता है

106/399 पी० रोड, कानपुर

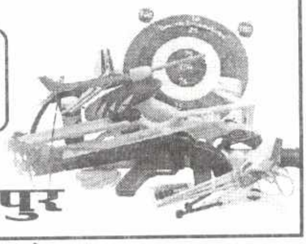

With Best Compliments From..........

(Mo.) : 9839707209
2369791

Ram Babu Singhal

Piyush Agarwal
: 9807457013

SWASTICK TUBES

Stockist & Dealers :
All Kinds of Steel tubes for air water & gas etc.

Sister Concern : Sushila Steel Tubes

80/83 (H), Latouche Road, Kanpur - 208001

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर विशेष

'पितुष्पिता'– स्वामी श्रद्धानन्द

– देवनारायण भारद्वाज

प्र तद्वोचेदमृतं नु विद्वान गन्धर्वो

धाम विभृंत गुहा सत्।

त्रीणि पदानि निहिता गुहास्य

यस्तानि वेद स पितुः पितासत्।। (यजु0 32.9)

पदार्थ– हे मनुष्यों! (यः) जो (गन्धर्वः) वेद वाणी को धारण करने वाला (विद्वान) पण्डित (गुहा) बुद्धि में (विभृतम्) विशेषधारण किये (अमृतम्) नाशरहित (धाम) मुक्ति के स्थान (तत्) उस (सत) नित्यचेतन ब्रह्म का (नु) शीघ्र (प्र0 वोचेत्) गुणकर्म स्वभावों के सहित उपदेश करे और जो (अस्य) इस अविनाशी ब्रह्म के (गुहा) ज्ञान में (निहिता) स्थित (पदानि) जानने योग्य (त्रीणि) तीन उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय वा भूत, भविष्य वर्तमान काल है (तानि) उनको (वेद) जानता है (सः) वह (पितुः) अपने पिता व सर्वरक्षक ईश्वर का (पिता) ज्ञान देने वा अस्तिकत्व संरक्षक (असत्) होवे।

भावार्थ– हे मनुष्यों! जो विद्वान लोग ईश्वर के मुक्ति साधक बुद्धिस्थ स्वरूप का उपदेश करें ठीक–ठीक पदार्थो के और ईश्वर के गुण स्वभाव को जाने वे अवस्था में बड़े पितादिकों के भी रक्षा के योग्य होते है ऐसा जानो।

–महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्वामी श्रद्धानन्द ने इस वेदमन्त्र को अपने जीवन में किस प्रकार धारण कारके ऋषितत्व का वरण किया इसकी कहानी उनकी युवावस्था से प्रारम्भ होती है, जब वे मुंशीराम के नाम से जाने जाते थे। बाल्यकाल में ही इनकी ममतामयी माँ की मृत्यु हो गई थी। उच्च पुलिस अधिकारी के लाड़ले पुत्र रईसजादों के मित्र बनकर बुराइयों की मूर्ति बन चुके थे, किन्तु बरेली में महर्षि दयानन्द के एकपक्षीय सत्संग के रंग में उन बुराइयों के ताने बाने ढीले हो गये। पिता जी सेवानिवृत्त होकर अपने ग्राम तलवन आ गए। मुंशीराम जालन्धर में एक वर्ष मुख्तार रहकर वकालत की तैयारी हेतु लाहौर चले गये थे। जहां महर्षि दयानन्द के रचित सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर न केवल इनके संशय–शूल फूल बन गए थे प्रत्युत समस्त दुर्गुण दुर्व्यसन दूर होकर इनकी नास्तिकता की भूमि पर आस्तिकता का मधुबन लहराने लगा था और आर्य समाज में आने के

कारण एक नया धर्म–पुरूष का जीवन प्राप्त हो गया था। जब आर्य समाज की स्थापना हुई तो मुंशीराम को इनकी अनुपस्थिति में ही प्रधान बनाकर लाहौर सूचना भेज दी गई थी।

होली के अवकाश में जब ये लाहौर से जालन्धर आये तो इनके सामजिक व्याख्यानों का अच्छा प्रभाव मित्रों पर तो पड़ा ही पिता जी को भी पता चल गया था कि उनका बेटा अब नास्तिक नहीं योग्य आस्तिक बन गया है। पिता जी के रूग्ण होने के समाचार से ये उनके पास पहुँच कर उनकी सेवा शुश्रुषा में लग गए। पिता जी अपेक्षाकृत कुछ स्वस्थ हुए तभी निर्जला एकादशी का दिन आ गया। आज झज्झर पानी से भरकर उसके ढक्कन पर खरबूजा, मिठाई, दक्षिणा रखकर सारे घर को संकल्प पढ़ना था। मुन्शीराम ने एक ओर छिपकर पुस्तक पढ़ने की व्यस्तता के आधार पर इस पूजापाठ से बहुत बचना चाहा किन्तु बारी–बारी सब संकल्प पढ़ चुके थे तो अन्ततः पिताजी ने इनको बुला ही लिया। वे बोले आओ मुंशीराम तुम कहां थे हमने तुम्हारी प्रतीक्षा करके सबसे संकल्प पढ़ा दिया है। लो संकल्प पढ़ो फिर मै भी संकल्प पढ़कर निवृत्त हो जाऊँ। मुंशीराम ने डरते–डरते संकोचपूर्वक इस ढोंग में भाग लेने से मना कर दिया। पिता जी निराश होकर चुप रह गए। पिताजी की बात न मानने के कारण वे भी दो–तीन दिन तक उनके सामने जाने में घबराते रहे।

तलवन में मुंशीराम दो मास रहे और सत्यार्थ–प्रकाश, पंचमहायज्ञ–विधि आर्यभिविनय ग्रन्थों का पूर्ण पारायण करके ऋग्वेदिभाष्यभूमिका का भी आधा भाग पढ़ लिया था। ग्रामीण पाठशाला के एक मुंशी जी जो संस्कृतज्ञ थे– पं0 काशीराम को अपने इस स्वाध्याय में साथी बना कर उन्हें अपना शिष्य बना लिया था। काशीराम के बड़े परिवार की नियमित आर्थिक सहायता पिता जी करते थे और वृद्ध पिता जी को संस्कृत के धार्मिक ग्रन्थ अर्थ सहित पढ़कर सुनाया करते थे। लो लाहौर जाने का समय आ गया और एक घटना फिर घट गई। सुन्दंर नागौरी बैलों से जुती मझौली गाड़ी पर सामान लाद कर मुंशीराम सवार हुए और प्रस्थान से पूर्व पिता जी की आज्ञा लेने पहुँच गए। पिता जी अपने बनवाए मन्दिर के समीपवर्ती बड़े कमरे में तकिया लगाए बैठे थे। इन्होंने पिता जी के चरणों पर सिर रखकर प्रणाम किया और चलने की अनुमति चाही। पिता जी ने आशीर्वाद तो दिया किन्तु एकपरीक्षा में भी डालं दिया।

सेवक से एक थाली में मिठाई और तब की एक अठन्नी (आधा रूपया) रखवा कर मुंशीराम के सामने करवा दिया और कह दिया– जाओं पुत्र ठाकुरजी को मत्था टेक कर विदा होओ। भगवान् राम सहायक हनुमान तुम्हारी रक्षा करें। यह सुनकर मुंशीराम स्तब्ध रह गए। पिताजी ने समझा मुंशीराम अठन्नी कम समझ रहे है तो इसके स्थान पर पूरा एक रूपया रखवा कर फिर कहा लो पुत्र अब ठीक हो गया, देर होती है। ठाकुरजी को मत्था टेक कर सवार हो जाओ। अपने पूज्य

प्यारे पिता के आशीर्वाद– लालसा की इस घड़ी में असीम साहस जुटाकर मुंशीराम को बोलनापड़ा पिता जी! बात अठन्नी या रूपए की नहीं है। मै अपने सिद्धान्तों के विरूद्ध कोई काम कैसे कर सकता हूँ। हां सांसारिक व्यवहार में आप आज्ञा दे, उसके पालन के लिए मै तत्पर हूँ। यह सुनकर भला किस पिता को क्रोध नहीं आता। इनके पिता जी के शब्दों में क्रोध कम निराशा अधिक टपक पड़ी। मुझे विश्वास नही कि मरने पर मुझे कोई पानी देने वाला भी रहेगा–यही भगवान् तेरी इच्छा फिर धीरे से उन्होंने कहा–अच्छा अब जाओ, देर होगी। मुंशीराम अपने सर पर संकल्प विकल्प का बोझ लेकर पिता जी को प्रणाम कर यात्रा पर चल दिए।

मुंशीराम ने सोचा कि जब मैं पिता की स्वर्ग प्राप्ति में सहायक नहीं और उनके धार्मिक विचारों के योग्य नहीं तो मुझे उनके धन पर भी क्या अधिकार है। पिता जी ने इनके व्ययार्थ 50रू0 दिए थे–उन्हे भी एक सम्बन्धी द्वारा वापस भेज दिया–उनके साथ एक पर्चा भी पहुँचा दिया जिसमें लिखा था– जब मैं आपके मन्तव्य के विरूद्ध मत रखता हूँ तो मुझे कोई अधिकार नहीं कि सुपात्र पुत्रों के भाग में से कुछ लूँ जीवन रहेगा तो चरणों में अपनी भेंट रखूँगा ही। इन्होंने सम्बन्धी से अनुरोध किया था कि वह इन रूपयों व पर्चे को इनके चले जाने के बाद दूसरे दिन पिता जी तक पहुँचाए। आखिर समबन्धी था, बन्ध कराने वाला था विग्रह कराने वाला नहीं, उसने यह सब तत्काल पिताजी तक पहुँचा दिया। पिता जी ने उन्हें उल्टे पैरों घोड़े पर बैठाकर मुंशीराम का पीछा करने को कहा और यह धनराशि उन्हें वापिस करते हुए यह सन्देश भी कहलवा दिया– तुम प्रतिज्ञा करके गए हो कि मेरी सांसारिक आज्ञा से मुख नहीं मोड़ोगे। यह रूपए उसी आज्ञा के अनुरूप दिए गए है'। सम्बन्धी ने डेढ़ किलोमीटर की दौड़ लगाकर पिता जी का स्नेहपूर्ण आशीर्वाद पहुँचाने में मुंशीराम की सहायता की और वे जालन्धर होते हुए फिर लाहौर पहुंच गए।

इनके जाने के बाद पिताजी को मुन्शीराम की याद बैठक में रखी उन पुस्तको ने दिला दी, जो वे यहां छोड़ गए थे। एक दिन पिताजी पंडित काशीराम से बोले कि देखो इन पुस्तकों में क्या लिखा हैं पर मुझे सुनाने से पूर्व जाँच लो कहीं ये नास्तिक व प्रभुनिन्दात्मक ग्रन्थ तो नहीं हैं। पंडित जी तो मुंशीराम के शिष्य थे– उन्होंने बड़ी चतुराई से काम लिया। पहले ब्रह्मयज्ञ का अर्थ सहित पाठ सुनाया। पिताजी की आंखे खुल गई। तब उन्हें सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम समुल्लास सुनाया गया तो उनकी बूढ़ी आंखों मेंएक नई चमक आ गई और मन श्रद्धा से भर गया। वे विह्वल होकर बोल पड़े– 'पण्डित जी हम तो अविद्या में पड़े रहे। हमारा मोक्ष कैसे होगा? हम ने तो निरर्थक क्रियाएं ही की है अब से वैदिक सन्ध्या करेंगे और वे दृढ़ता पूर्वक अर्थ सहित मन्त्र कण्ठस्थ करने लगे। इस प्रकार पिता जी को परम पिता का प्यार मिलने लगा और पुत्र मुंशीराम को पिता जी का दुलार मिलने लगा।

कुछ दिन बाद मुंशीराम लाहौर से जालन्धर लौटे और पिता जी इनसे अपनी मझौली गाड़ी पर बैठकर मिलने आये। मुंशीराम दिन भर उनकी उनकी प्रतीक्षा करके आर्यसमाज के रात्रि कालीन सत्संग में चले गये। प्रार्थना के उपरान्त इनका वहां प्रबन्धन भी हुआ। तभी इनको पिता जी के आगमन की सूचना मिली और इन्होने उन्हें रेलवे फाटक पर जा पकड़ा। चरण स्पर्श से अभिवादन किया ही था कि पिता जी ने पूछ लिया– 'क्या समाज का अधिवेशन समाप्त हो गया?' इन्होने उत्तर दिया– बस भजन व आरती रह गई थी आपका आगमन सुनकर भाग आया। पिता जी ने बड़े प्रेम भरे शब्दों में कहा– 'क्या जल्दी थी, अधिवेशन समाप्त कर ही आना चाहिये था। उस दिन मूर्ति पर चढ़ावा न चढ़ाने के कारण पिता जी की रूष्टता ने आर्य–आस्था की इस विशिष्टता का रूप कैसे धारण कर लिया–इसका पता दूसरे दिन मुंशीराम को चल गया कि वास्तव में यह उस पुस्तक का ही कमाल है, जिन्हें वे पिता जी की बैठक में छोड़ आये थे।

वकालत की परीक्षा देकर मुंशीराम लाहौर से लौट आये और अपनी मुख्तार की जमी जमाई गद्‌दी को फिर सम्भाल लिया। इनके पिता जी फिर अर्धंग रोग से ग्रसित होकर चारपाई पर पड़ गए और मुंशीराम उनकी सेवा चिकित्सा के लिए तलवन पहुँच गए। एक दिन एकान्त पाकर पिता जी ने इनको बुलाया और सेवक द्वारा अपना वसीयतनामा इनके हाथ में पकड़ा दिया। जिसके अनुसार इनके तीन बड़े भाइयों को मात्र भूमि व भवन के भाग देकर सारी रोकड़ी व स्वर्णाभूषण आदि मुंशीराम को दे दिए थे। साथ ही इनको कुछ धार्मिक कार्य भी सौंप दिये थे। मुंशीराम ने जब अधिक अंश लेने से मना कर दिया तो पिता जी ने समझाया कि पहले तुम्हारे आर्य समाज में जाने के कारण मुझे असन्तोष था। अब वह सब समाप्त होकर अनन्य आस्था में ढल गया है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम्ही मेरी धार्मिक आकांक्षाओं की पूर्ति कर सकते हो। फिर भी मुंशीराम ने पिता जी को उनके निर्दिष्ट धार्मिक दायित्वों को पूर्ण करने का भरोसा दिलाते हुए भाइयों से अधिक भाग लेने में अपनी अनिच्छा प्रकट कर दी। पिता जी ने कहा कि मैने वसीयतनामा तुम्हें दिया। यह तुम्हारी सम्पत्ति है तुम जो चाहो सो करो। पिता जी का संकेतक समर्थन समझकर मुंशीराम ने वसीयतनामें के टुकड़े–टुकड़े कर दिये।

पिता जी के स्वास्थ्य में सुधार देखकर उनकी चरण वन्दना के साथ विदाई लेकर मुंशीराम फिर जालन्धर आकर अपने मुख्तार कार्य एवं आर्यसमाज के प्रचार में जुट गये। पिता जी को इनके क्रान्तिकारी सुधारवादी व्याख्यानों की चर्चा से बड़ा सुख मिलता था। अर्धंग रोग पीड़ित पिता निर्बल होते गये। डाक्टर को छोड़कर यूनानी हकीम का नुस्खा ये भेजते रहे। लाभ नहीं दिखाई दिया। उस दिन जब मुंशीराम अपने पिता जी के समीप पहुँचे तो बड़े भ्राता उन्हें गिलास में कुछ

पीने को दे रहे थे और पिता जी पीने से मना कर रहे थे। उन्होने कहा कि यदि मुंशीराम कह देंगे तो मै पी लूँगा।

यह मेरे भले के लिए भी झूँठ नहीं बोलेगा। इन्होंने विवेचना की। हकीम जी के परामर्श पर मांस का शोरबा। चने के पानी के नाम पर पिता जी को दिया जा रहा था, किन्तु 18 घण्टे के अनशन के बाद भी वे इसे नहीं ले रहे थे। मुंशीराम ने सोचा जो क्षत्रिय पिता मांस भक्षण मे दोष नहीं देखता था, वही सत्यार्थ प्रकाश की तरंग में रंग कर कल्याण मार्ग पर अग्रसर है। उन्होंने उस गिलास को हटाकर चने का पानी पीने को दे दिया। वह रात्रि कठिनाई से कटी।

दूसरे दिन पिता की अन्तिम घड़ी जानकर मुंशीराम ने उन्हे पहले ईशोपनिषद् का फिर कठोपनिषद् का पाठ सुनाया। उनके भजन सुनने की इच्छा होने पर जब पं0 काशीराम ने कृष्णभक्ति का गीत सुनाया तो पिता जी ने मना करते हुए कह दिया जो आप न छूटा वह दूसरों को क्या छुटायेगा और धीरे से का कोई निर्वाण गीता गाओ। मुंशीराम द्वारा गाया कबीर का निर्वाण गीत इन्हें अच्छा लगा। पिता जी ने भी अपनी अन्तिम श्वासें समझकर मुंशीराम को संकेत से निकट बुलाकर उनके कान में कहा कि वैदिक हवन कराओ। मुंशीराम ने हवन सामग्री लेने के लिए अपने मुंशी जी को घोड़े पर जालन्धर भेज दिया। उन्होने तीन बार स्मरण दिलाया कि हवन कब होगा। अन्ततः मुंशीराम के वेदमन्त्रोच्चारण के मध्य पिता जी ने अपने प्राण त्याग दिए। लाई गई सामग्री से हवन ही नहीं हुआ, उसी हवन में पिता जी का नृयज्ञ भी हो गया।

आपने देखा कि प्रस्तुत वेदमन्त्र की भावना के अनुसार-एक पुत्र ने अपने पिता को परमपिता की मोदमयी गोद प्रदान कर उसकी आत्मरक्षा करके पिता के पिता बनने की बात को सिद्ध कर दिया। पिता नानकचन्द्र के घर सं0 1913 वि0 में जन्में मुंशीराम के पिता जी ने राशि का नाम बृहस्पति रखा था जो यथा नाम तथा गुण सिद्ध होकर उन्हें उसी डगर पर ले गयां गुरूकुल खोलकर न जाने वे कितने आचार्य– बृहस्पतियों के पिता बन गए और त्याग तपस्यापूर्ण वैदिक ऋषियों की उत्सर्गमयी परम्परा में स्वयं प्रकाश पुरोधा बनकर सं0 1983 वि0 में भारत माता की स्वतन्त्रता तथा विश्व मानवता की राह में बलिदान हो गए। अपने महात्मा स्वामी और ऋषि श्रद्धानन्द को शत्–शत् श्रद्धांजलि देते हुए लेखनी का शेष कहानी फिर कभी सुनाने के लिए अभी विश्राम देता हूँ।

With Best Compliments From...........

: 9336114583, 9336216442
: 0512-2341781

ARORA PIPES

79/37 (A), Latouche Road, Kanpur - 208001

-: Distributor :-

Prince Pipe & Fittings

With Best Compliments From........

: 0512-2655488, 3262435
: 9415051462, 9305302792

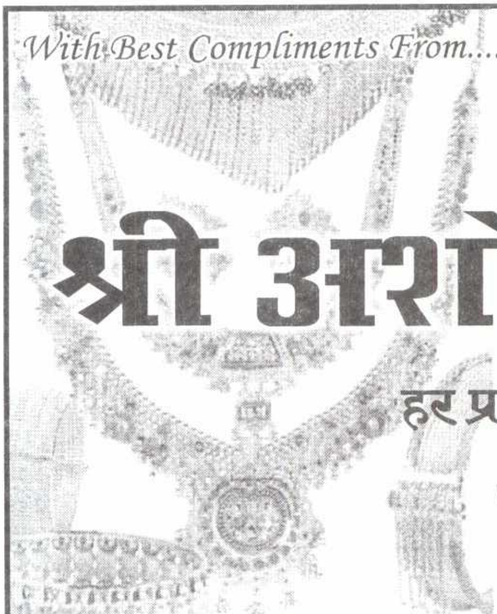

प्रोपराइटर : अशोकपुरी

श्री अशोक ज्वैलर्स

हर प्रकार के हीरे, सोने व चाँदी के
आभूषणों के फुटकर एवं
थोक विक्रेता

पता : 8/11, विद्यार्थी मार्केट, गोविन्द नगर, कानपुर

आर्य उप प्रति० सभा 2011-12 के पदेन, संयुक्त, प्रतिष्ठित एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

वेद प्रकाश आर्य

पदेन सदस्य (भू.पू. प्रधान)

आनन्द जी आर्य

पदेन सदस्य (भू.पू. मंत्री)

आनन्द स्वरूप अवस्थी

संयुक्त सदस्य

संतराम सिंह सेंगर

संयुक्त सदस्य

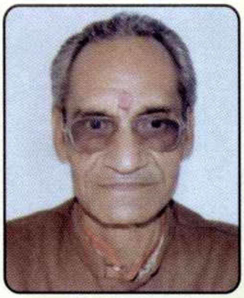

मुनीन्द्र शास्त्री

प्रतिष्ठित सदस्य

रामजी आर्य

प्रतिष्ठित सदस्य

हरीश कनोत्रा

प्रतिष्ठित सदस्य

ओम प्रकाश (नेता जी)

प्रतिष्ठित सदस्य

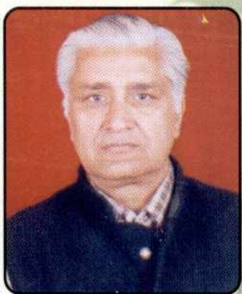

रवीन्द्र कुमार द्विवेदी

प्रतिष्ठित सदस्य

श्रीमती सुमन भल्ला

वि० आ० सदस्य

श्रीमती रामदेवी आर्या

वि० आ० सदस्य

अनिल कुमार पुरवार

वि० आ० सदस्य

संतोष जी आर्य

वि० आ० सदस्य

वीरेन्द्र कुमार खन्ना

वि० आ० सदस्य

श्रीमती कौशल्या आर्या

वि० आ० सदस्य

श्रीमती शकुंतला मेंहदीरत्ता

वि० आ० सदस्य

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, कानपुर की अंतरंग सभा (2011-12)

आत्मबोध – वैदिकता का सार

संकलन एवं प्रस्तुतिः गुरूबक्श ललिता सूदन
(सदस्य स्त्री आर्य समाज, गोविन्द नगर कानपुर)

वेद का अर्थ होता है– ज्ञान सम्पूर्ण ज्ञान। जब हम वैदिक कहते हैं तो इसका मतलब होता है वैदिकता से सम्बन्ध रखने वाला। अर्थात ज्ञान से सम्बन्ध रखने वाला। इसलिए जब हम किसी क्षेत्र की किसी व्यवस्था को वैदिक कहते है तो उसक मतलब है कि उसमे किसी प्रकार की त्रुटि की समस्या की,बाधा की गुंजाइश नहीं है। वैदिकता से जुड़ी होने कारण उसमें सफलता है,विकास है, आनन्द है। वैदिक शिक्षा, वैदिक स्वास्थ्य, वैदिक वास्तु, वैदिक कृषि, वैदिक अर्थव्यवस्था, वैदिक प्रशासन, वैदिक रक्षा प्रशासन, वैदिक रक्षा प्रणाली आदि सभी क्षेत्रों की व्यवस्था भारत में रही है। इसीलिए भारत वेदभूमि कहलाता है। वेदभूमि भारत का वैदिक उद्घोष है– **'सर्वम खलु इदं ब्रह्म'** अर्थात सारी सृष्टि, सारा भैतिक जगत ब्रह्म की सत्ता है, ब्रह्म ही है और ब्रह्म का मतलब पूर्ण ज्ञान, वेद। जब सारी धरा वेद का ही पसारा है तो वेद कहाँ हैं अर्थात ज्ञान कहां है? **वेदोऽहम** अर्थात मै ही वेद हूँ। **तत्वमसि** अर्थात तुम भी वेद हो। मै भी पूर्ण ज्ञान हूँ तुम भी पूर्ण ज्ञान हो।

" स्वर्ग कामो यजेत"

"स्वर्ग अर्थात सुख, शान्ति, स्वास्थ्य, दीर्घाय, विद्या, बल, पुत्र, धन, सम्पत्ति, यश, कीर्ति, आदि की इच्छी करने वाला यज्ञ करें"

सभी पूर्ण के बने हैं तो वेदका मतलब हुआ ब्रह्म और ब्रह्म का मतलब सम्पूर्ण ज्ञान। पूरब–पश्चिम, उत्तर दक्षिण, के बाहर–भीतर, मेरा–तेरा, इसका–उसका, सबका ज्ञान। यह वेद की दृष्टि का वैदिकता का सार है। यह बात हुई वेद की, ब्रह्म की, पूर्ण ज्ञान की। अब समझते है कि पूर्ण ज्ञान कहां और कैसे होता है। ज्ञान अव्यक्त में है। भावातीत सत्ता में है। किसी के लिए भी यह सैद्वान्तिक और व्यावहारिक स्तर पर अर्थात ज्ञानात्मक और क्रियात्मक स्तर पर यह समझाना आवश्यक है कि सर्वज्ञता और सर्वसर्थता के लिए इस अव्यक्त सत्ता पर अधिकार पा लेना आवश्यक है। भारतीय वैदिक परम्परा जिस अव्यक्त सत्ता की बात करती आ रही है, उसकी झलक अब आधुनिक विज्ञान ने भी यूनीफाइड़ फील्ड के रूप में पा ली है। वैदिक अर्था में, वैदिक

शब्दावली में इसे योग कहते है। वेदान्त कहते हैं जो कि सभी क्रियाओं का अर्थात् किसी भी क्षेत्र के क्रियान्वित होने का आधार है। इसको एक सरल से उदाहरण से समझते है। बरगद के बीज के भीतर पोलापन अर्थात शून्यता होती है। इस शून्यता में , अर्थात इस अव्यक्त सत्ता में, इस यूनीफाइड फील्ड में क्या है? बीज के इस खोखलेपन में बरगद के पूरे वृक्ष की स्मृति है। उसमें हजारों शाखाओं, पत्तों, फूलों, फलों की स्मृति है। एक छोटे से बीज के भीतर अव्यक्त रूप में उसका सब कुछ है। होना क्या चाहिए ? हमारी सभी की आत्मचेतना इसी भावतीत सत्ता में जागृत होनी चाहिए। हमारी आत्मचेतना इसी सर्वज्ञ और सवसमर्थ अव्यक्त भावातीत सत्ता में जागृत होनी चाहिए। आत्मचेतना इसी सर्वज्ञ और सवसमर्थ अव्यक्त भावातीत चेतना से, ब्रह्मी चेतना जुड़ी रहनी चाहिए। तब क्या होगा? भावातीत सत्ता में जागृत आत्मचेतना में सर्वज्ञता और सर्वसमथर्ता होगी, तब सारे कार्य सुचारू और सफलता पूर्वक होते है। सुफलदायी होते हैं।

ओ३म् शान्ति! शान्ति!! शान्ति!!!

आर्य समाज स्थापना दिवस एवं भारतीय नवसंवत्सर के शुभअवसर पर
नगर के समस्त आर्यजनों को बहुत बहुत बधाई एवं शुभकामनायें!

V.K. Singh *(Verray)*

Advocate

Chamber No. 46
Sanik Solzer Board (West)
Collectrate Compound
Kanpur Court

Office : 108/180, Ram Bagh, Kanpur

Resi. :
119/274, Th. Mana Singh Marg
Gumti No. 5,
Kanpur

Mob. : 9450125008, 7668654141
E-mail : virendraksingh.2010@rediffmail.com

'वेद ज्योति' के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ

Ph.: 2314807

चाँदी के आभूषणों के विक्रेता

हजारी लाल किशोर कुमार सर्राफ

43/206 चौक सराफा, कानपुर

(सौजन्य से : श्री सतीश कुमार शास्त्री)

'ओ३म्, सचिचदानन्दाय नमो नमः

सुभाषित

संकलनकर्ता-चन्द्र प्रकाश
अध्यक्ष-जिज्ञासु सरलतम संस्कृत प्रचार समिति

1. ओ३म् यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय व स्वाय चारणाय।।

2. योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः।।

3. योऽवमन्येत ते मूले हेतुशास्त्राश्रयाद् द्विजः।
स साधुभिबहिष्कार्यो नास्तिको वेदनिन्दकः

4. सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते।
वार्यन्नगोमहीवासस्तिलकानचनसर्पिषाम्

5. अष्टौ गुणाः पुरूषं दीपयन्ति प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुतं च।
पराक्रमश्चाबहुभाषिता च दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च।।

6. ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत धर्माथौं चानुचिन्तयेत्।
कायक्लेशाँश्य तन्मूलान् वेदतत्वार्थमेव च।

7. अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मनः सत्येन शुध्यति।
विद्यातपोभयां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति।

8. दृष्टिपूंत न्यसेत्पदं वस्त्रपूतं जलं पिबेत्।
सत्यपूतां वदेद्वाचं मनः पूतं समाचरेत्।।

9. आचारः परमो धर्मः श्रृत्युक्तः स्मार्त्त एव च।
तस्मादस्मिन्सदा युक्तो नित्यं स्यादात्मान् द्विजः।।

10. वेदास्त्यागश्च यज्ञाश्च नियमाश्च तपांसि च।
न विप्रदुष्टभावस्य सिद्धिं गच्छन्ति कर्हिचित्।।

11. आहारनिद्रा भयमैथुनं च सामन्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।।

12. येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शलं न गुणो नधर्मः।
ते मर्त्यलोके भूविभारभूता मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

13. धृतिः क्षम दमोंऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशंक धर्मलक्षणम्।।

14. अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानं विधीयते।
धर्मं जिज्ञासामानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः।।

15. धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद्धतर्मो . न हातव्यों मा नो धर्मो हतोऽवधीत्।।

16. विद्याधनं श्रेष्ठधनं तन्मूलमितरधनम्।
दानेन वर्धते नित्यं न भाराय न नीयते।।

17. माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा।।

18. नास्ति मातृसमा छाया नास्ति मातृसमा गतिः।
नास्ति मातृसमं त्रांण नास्ति मातृसमा प्रियाः।।

19. सामृतैः पाणिभिर्घ्नन्ति गुरवो न विषोक्षितैः।
लालनाश्रयिणो दोषास्ताडनाश्रयिणों

गुणाः ।।

20. पिता धर्मः पिता स्वर्गः पिता हि परमं तपः।
पितरि प्रीतिमापन्ने सर्वाः प्रियन्ति देवताः ।।

21.अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम् ।।

22.अभिवादयेद् वृद्धांश्च दधाच्चैवासनं स्वकम्।
कृताज्जलिरुपासीत गच्छतःपृष्ठतोऽन्वियात् ।।

23.गुरुभ्यस्त्वासनं देयमभिवाद्याभिपूज्यच।
गुरुमभ्यर्च्य वर्धन्त आयुषा यशसा श्रिया ।।

24. अग्निहोत्री तपस्वी च वेदमध्यापयेच्च यः।
सकल्पं सरहस्यं व तमाचार्य प्रचक्षते ।।

25. अज्ञो भवति वै बालः पिता भवति मन्त्रदः।
अज्ञं हि बालमित्याहुः पितेत्ये व तु मन्त्रदम् ।।

26.न हायनैर्न पलितैर्न वित्तेन न बन्धुभिः।
ऋषयश्चक्रिरे धर्मं योऽनूचानः सः नो महान् ।।

27.वित्तं बन्धुर्वयः कर्म विद्या भवति पच्चमी।
एतानि मान्यथ्थानानि गरीयो यद्यदुत्तरम् ।।

28.अहिंसयैव भूतानां कार्यं श्रेयोऽनुशासनम्।
वांक् चैव मधुरा श्लक्ष्णा प्रयोज्या धर्ममिच्छता ।।

29.योऽहिंसकानि भूतानि हिनस्ति आत्मसुखेच्छया।
स जीवंश्च मृतश्चैव न क्वचित् सुखमेधते।

30. अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी।
संस्कर्त्ता चोपहर्त्ता च खादकश्चेति घातकः ।।

31.सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रूयान्न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्
प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः ।।

32.भद्र भद्रमिति ब्रूयाद्भद्रमित्येव वा वदेत्।
शुष्कवैरं विवादं च न कुर्यात्केनचित्सह ।।

33.योऽन्यथा सन्तमात्मानमन्यथा सत्सु भाषते।
स पापकृत्तमों लोके स्तेन आत्मापहारकः ।।

34.नाभिषेको न संस्कारः सिंहस्य क्रियते मृगैः।
विक्रमार्जितराज्यस्य स्वयमेव मृगेन्द्रता ।।
नीति।

35.यद्यपि बहुनाधीषे तथापि पठ पुत्रः व्याकरणम्।
स्वजनः श्वाजनों या भूत् शकलं सकृच्छकृत् ।।

नजर व धूप के उत्तम चश्में

Mob.: 9415125411

उजाला आप्टीशियन्स

आँखों की जाँच मुफ्त

106/373, दुकान नं0 15 रतन बाजार, पी0 रोड, कानपुर

With Best Compliments From.........

DISTRIBUTORS

PARAS
INDIA
A Touch of Excellence
SWR Pipes & Fittings

INDICA
Rigid PVC Pipes

HI-POWER
Monoblock &
Submersible Pumps

TRIMURTI
PP-RC Pipes & Fittings
Water Storage Tanks

RADHA KRISHNA POLYMERS PVT. LTD.

AMIT TUBE COMPANY

79/17 Latouche Road, Kanpur -208001
80/90 Latouche Road, Kanpur - 208001
Ph.: 2314632, 2304565
Mob.: 9839106026, 9839952991

Ravi Prakash Agarwal
Pawan Agarwal
Amit Agarwal

महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति श्रद्धा सुमन

महर्षि दयानन्द के उपदेशों ने करोड़ों लोगो को नवजीवन, नवचेतना और नया दृष्टिकोण प्रदान किया है। हमें संकल्प लेना चाहिये कि उनके बताये मार्ग पर चल कर देश को सुख, शान्ति और वैभव पूर्ण बनायेंगे। **–डॉ राजेन्द्र प्रसाद (भारत के प्रथम राष्ट्रपति)**

स्वामी दयानन्द मेरे गुरू हैं, वे मेरे धर्म के पिता हैं, ओर आर्य समाज मेरी धर्म की माता ।

– पंजाब केसरी लाला लाजपत राय

सचमुच में वे एक आला इन्सांन ही नहीं फरिस्ते थे। **–कर्नल अलकाट**

निःसन्देह यह परम सन्तोष की बात है कि महर्षि दयानन्द के अध्यात्मिक उत्तराधिकारी आर्यसमाज ने कर्मक्षेत्र में अपना दरवाजा सदा खुला रखा है। **–श्यामा प्रसाद मुखर्जी**

जब अन्य लोग स्वराज का स्वप्न देख रहे थे, तब स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज अपनी पुस्तकों द्वारा उसका प्रचार करने में लगे थे। मै प्रसन्नता के साथ कहता हूँ कि असहयोग आन्दोलन के युग से पहले लगभग 80 प्रतिशत आर्य समाजी स्वराज्य के कार्यो में हिस्सा लेने वाले लीडर थे। **–मौलाना हसरत मोहानी**

महर्षि दयानन्द सरस्वती उन महापुरूषों में से थे, जिन्होंने आधुनिक भारत का निर्माण किया, स्वामी जी को मै एक धार्मिक और सामाजिक सुधारक तथा कर्म योगी मानता हूँ।

–नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

स्वामी दयानन्द ने ऐसे समय देश का नेतृत्व किया जब बुराइयों की और संकेत करना भी कठिन काम था।उन्होंने हिन्दी के राष्ट्रभाषा होने को घोषनाद किया और छूत–छात तथा जात – पात के विरूद्ध आन्दोलन छेड़ा। स्वराज और स्वदेशी की उन्होंने ऐसी लहर चलाई, जिससे इण्डियन नेशनल काग्रंस के निर्माण की पृष्ठ भूमि तैयार हो गई। **– लाल बहादुर शास्त्री**

यदि स्वामी दयानन्द न होते तो हिन्दू समाज की क्या हालत होती इसकी कल्पना भी कठिन है ।आज देश में जो भी सुधार कार्य चल रहे है उनका मार्ग स्वामी जी वर्षो पूर्व बना गये थे शताब्दियों मे ऐसे विरले महापुरूष मिलते हैं। **–सरदार बल्लभ भाई पटेल**

विज्ञान का दावा की मुसलमानों के पूर्वज हिन्दू थे

अभी तक इतिहासकार जो दावे कर रहे थे उस पर चिकित्सा विज्ञान ने अपनी मोहर लगा दी हैं यानी वंशानुक्रम अनुक्रम पर किये गये अध्ययन से पता चलता है कि उत्तर भारत के अधिकांश मुसलमानों के पूर्वज स्थानीय हिन्दू ही थे, जिन्होंने इस्लाम धर्म कबूल कर लिया था। इससे पता चलता है कि वे समय–समय पर भारत आने वाले मुस्लिम शासकों के वंशज नही है। इस बात की पुष्टि डीएनए विज्ञान भी अब कर रहा है। भारत, स्पेन और अमरीकी विज्ञानियों द्वारा किया गया यह अध्ययन बताता है कि उत्तर भारत के शिया और सुन्नी मुसलमानों में से अधिकाश धर्म परिवर्तन करने वाले स्थानीय वाशिदों के ही वंशज है।

हालाकि कुछ शियाओं में विदेशी वंश के भी कुछ अंश पाए गए है। इसके बावजूद अधिसंख्या मुसलमानों में उत्तर भारतीय हिन्दू जनसंख्या के अधिकाधिक वंशानुक्रम लक्षण पाए गए हैं। इसका खुलासा अमेरिकन जनरल ऑफ फिजिकल एंथ्रोपोलॉजी में किया गया है।

अध्ययनकर्ताओं का कहना है कि उनका अध्ययन उत्तर भारतीय मुसलमानों के पूर्वजों की पड़ताल करता पहला शोध हैं इसके लिये अध्ययन का आधार दो तथ्यों को बनाया गया है। एक, उत्तर भारतीय मुसलमान स्थानीय लोगों के वंशज हैं, जिन्होंने इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया हो। दूसरे, क्या वे आठवी से चौदहवी शताब्दी के दौरान समय–समय पर भारत आने वाले मुसलमानों के भी वंशज हो सकते है।।

'द टैलीग्राफ' में संजय गांधी पोस्ट ग्रेज्युएट सांइस, लखनऊ में मेडिकल जैनिटिक्स की प्रमुख और अध्ययन दल की सदस्या सुरक्षा अग्रवाल कहती हैं, ''हमारे अध्ययन का निष्कर्ष बताता है कि धर्म परिवर्तन शिया–सुन्नी दोनों ही मुसलमानों में हुआ, लेकिन शियाओं मं विदेशी वंश के लक्षण अधिक पाए गए।'' इस अध्ययन के तहत मिटोकॉन्ड्रियल डीएनन तकनीक के जरिये मुसलमानों के पूर्वजों के माँ और पिता की तरफ से पता लगाने की कोशिश की गई। इसके तहत माँ को सिर्फ पिता के द्वारा मिलने वाले वाय क्रोमोसोम्स की जांच की गई।

अमेरिका की फ्लोरिडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के जीवविज्ञान रिनी जे हैरेरा कहते है, 'मिटडीनए परीक्षण में हमें भारत के बाहर के संकेत नही मिलें यानी दोनो ही के ज्यादातर पूर्वज

स्थानीय लोग थे जो धर्म परिवर्तन कर मुसलमान बन गए थे।' अपनी तरह का यह पहला अध्ययन है जिसमें डीएनए परिक्षण के जरिये उत्तर भारत के मुसलमानों के पूर्वजो का पता लगाने की कोशिश की गई है।

हैरेरा कहते हैं समय के साथ–साथ इतिहास स्वयं को झुठला सकता है, लेकिन डीएनए झूठ नही बोलते। यहां यह भी कतई नहीं भूलना चाहिये कि विभिन्न इतिहासकार समय–समय पर यही दोहराते है कि भारतीय मुसलमान विदेशी मुसलमानों की संतान नही बल्कि धर्म परिवर्ततन कर मुसलमान बने स्थानीय लागो के ही वंशज है।

(विश्व संवाद केन्द्र, कानपुर)

With Best Compliments From..........

(O) : 0512-2369590, 3251877
(R) : 2643845 (M) 09450936187

P.D. Garg, Anil Garg

Nand Tubes & Fitting Pvt. Ltd.

Stockist : *Jindal Premier & Kinds of steel Tubes & Fittings*

M.S. & Galvanised Pipe G.I. Pipe, Jindal Purshotam & B.P. Or Black, Band, Nipple, Socket, G.M., Fitting, C.I. Fitting PVC Tube, Hand Pump & C.P. Fitting

Sister Concern :

Rahul Tube Company : 97932266 : 9936405555

80/83, Latouche Road, Kanpur - 208001

प्रो0 राजेन्द्र प्रकाश

Mob.: 9369503313

लाला मैकूलाल की पुरानी एवं प्रसिद्ध दुकान

मे० माँ पीताम्बरा ट्रेडिंग कम्पनी

11/54, ग्वालटोली, कानपुर

शुद्ध सरसों तेल एवं शुद्ध देशी घी के विक्रेता

आर्य मुसाफिर पं0 लेखराम जी–एक परिचय

– शिवानी आर्या

वैसे तो संसार सागर मानव रत्नों से भरा पड़ा है किन्तु अधिकांश अपने प्राणों की क्षमता विकसित न कर पाने कारण जीवन के मोह में फंसे जीते जी मर जाते हैं और कुछ लोग अपने जीवन को मानव मात्र के कल्याण हेतु समर्पित कर अमर हो जाते है। ऐसे लोग शरीरान्त के पश्चात भी समाज के माथे पर चमकते रहते हैं एवं हमें जीने की राह दिखाते रहते है। ऐसे ही हमारे आर्य मुसाफिर पं0 लेखराम जी थे।

आर्य जगत ही नहीं अपितु इससे बाहर भी ऐसा कौन व्यक्ति होगा जो आर्य मुसाफिर पं0 लेखराम जी के नाम से अपरिचित हो धन्य है पंजाब के जेहलम जनपद का वह मुसैदपुर ग्राम जिसे पंडित जी ने अपने जन्म से अंलकृत किया। सारस्वत ब्राहाण कुलीन आपके पितामह महतानारायण सिंह पंजाब के सिख कालीन विप्लव के उद्भट योद्धा थे। उन्ही के पुत्र महता तारा सिंह के आत्मतज पंडित लेखराम जी का जन्म 1915 वि0 के चैत मास तदनुसार 6 मार्च सन् 1858 ई0 में हुआ था।

स्वतन्त्र विचारक लेखराम के मानस मे पहले से ही धर्मिकता का अंकुर प्रस्फुटित हो रहा था। इसी कारण अपने चाचा को एकादशी व्रत रखते देखकर आपने भी व्रत रखना प्रारम्भ कर दिया। अपने चाचा गंड़ाराम जो पुलिस इन्सपेक्टर थे, के प्रयास से आप 1932 वि0 के पौष मास में पेशावर पुलिस में सारजेंन्ट के पद पर नियुक्त हुए। एक धर्मनिष्ठ सिख सिपाही से प्रभावित होकर पूजापाठ की ओर आप भी उन्मुख हो गये और गुरूमुखी में लिपिवद्य भगवद्गीता का पाठ भी करने लगे। आपका विश्वास था कि जीव और ब्रह्य अभेद है। 21 वर्ष की अवस्था में माता–पिता ने आपको विवाह के सूत्र में आवद्ध करना चाहा किन्तु आपने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर अपनी वैराग्य भावना का संकेत दिया।

1937 वि0 में आपने सीमा प्रान्त पेशावर नगर में आर्य समाज की स्थापना की। जीव और ब्रह्य की एकता विषय संदेह निवारण हेतु एक माह का अवकाश लेकर 17 मई, सन् 1880 को अजमेर पहुँचे। वहाँ आपने ऋषिवर दयानन्द जी से अनेक शंका– समाधान किए और 25 वर्ष से पूर्व विवाह न करने का संकल्प लिया। स्वामी जी से मिलने का वृतान्त देते हुए आपने स्वयं कहा था कि ''स्वामी दयानन्द के दर्शन से यात्रा के सब कष्ट विस्मृत हो गये और उनके सत्योपदेश से सभी संदेह निवृत हो गये।''

अजमेर से लौटकर आप रात–दिन धर्म प्रचार में लग गये। पेशावर में आर्य समाज की ओर से आपने सम्पादन में "धर्मोपदेश" नामक ऊर्दू मासिक पत्र प्रकाशित कराया तथा मौखिक व्याख्यानों के माध्यम से लोगो में धर्म के प्रति निष्ठा एवं धर्माचरण की शिक्षा देना प्रारम्भ कर दी पेशावर से आपका स्थानान्तरण हो जाने पर धर्म प्रचार का कार्य में बाधा महसूस कर आपने 24 सितम्बर सन् 1885 को नौकरी की तिलाजंलि देकर अपने आपको पूर्ण रुपेण वैदिक धर्म के प्राचारार्थ समर्पित कर दिया और आर्य मुसाफिर के रुप में लोक विख्यात हो गये।

ईसाई पादरियों एवं मुसलमानों के आडम्बरों की पोल खोलकर सर्व साधारण के समक्ष उनकी अल्पज्ञता अपरिपक्वता एवं उनके अज्ञान का वास्तविक रुप प्रदर्शित किया। परिणाम स्वरूप मुसलमानों की ओर से मुहम्मदी तलवार से प्राण लेने की धमकियाँ मिलने लगीं। उन धमकियों के उत्तर में आपका साहस पूर्ण उत्तर था – "संसार के सभी धर्म शहीदों के रूधिर से ही सिंचकर फूले फले है। इसीलिए मैं भी अपनी जान हथेली पर लिए फिरता हूँ।

त्याग एवं संतोष की सजीव मूर्ति पंडित जी पंजाब आर्य सभा से मात्र 25 रू0 ही जीविका के रूप में ग्रहण करते थे। 36 वर्ष की आयु तक रुद्र नैष्टिक ब्रह्मचारी रहकर आपने सं0 1950 में भरी जनपद के मम ग्राम की कुमारी लक्ष्मी देवी से पाणिग्रहण किया। आपकी पत्नी भी धर्म प्रचार कार्य में सहायक होकर सहधर्मिणी के रूप में प्रतिष्ठित हुयी। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु पंडित जी ने स्वयं उन्हें विद्याभ्यास कराया। सं0 1952 में आपको एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुयी जिसे सुखदेव नाम से अभिहित किया गया। वैदिक प्रचार कार्य करने की प्रबल अभिलाषा से पुत्र और पत्नी को भी अपने साथ ले जाते थे। आपके अहर्निशि प्रचार कार्य एवं यात्रा से उद्भूत कष्टों को सहन न कर पाने के कारण पुत्र का देहावसान हो गया। एक मात्र पुत्र का देहावसान भी वैदिक धर्म के दीवाने को धर्म प्रचार से विचलित न कर सका।

आपने ऋषि के जीवन का खूब अनुसंधान किया, बड़ी खोज से जीवन चरित्र संकलित किया जिससे उनके जीवन काल में ही महर्षि दयानन्द का प्रमाणिक जीवन चरित्र प्रकाशित कराया गया।

1897 ई0 के फरवरी के मध्य में एक काल, क्रूर, नाटा मुसलमान अपनी शुद्धि कराने के बहाने से आपके पास आया। मित्र मण्डली द्वारा उस क्रूर से सचेत रहने की चेतावनी दिए जाने के बावजूद भी आप उसे धर्मोपदेश देते रहे। एक दिन सायंकाल ऋषिवर की जीवनी लिखकर, उठकर अंगड़ाई ले रहे थे कि उसी आस्तीन के साँप ने डस लिया। पेट में छूरे के बार से आंते कट गयी। चिकित्सकों का अथक प्रयास भी रक्त प्रवाह को रोकने में समर्थ नही हो सका।

6 मार्च सन् 1897 ई0 को गायत्री प्रार्थना मन्त्रों का उच्चारण करते हुए रात्रि 2 बजे आप

नश्वर कलेवर को छोड़कर यशः विग्रह से सर्वदा के लिए शेष रह गये। महानिर्वाण के समय आर्य जनता को आपका सन्देश था– "आर्य समाज में लेखन कार्य बन्द नहीं होना चाहिए।"

वेदों की इस धरती के सच्चे सपूत ने वैदिक धर्म–तरू को अपने लहू से सींचकर विकसित किया। आर्य समाज का पल्लिवत एवं पुष्पित वृक्ष, जिसे महामानव ने अपने रक्त से सींचा था और जिसकी कीर्ति पताका न केवल भारत में ही वरन् समग्र विश्व में वैदिक धर्म का योगदान कर रही है, के प्रति हमारा कर्तव्य हो जाता है कि हम उसे कभी मलीन न होने दे, उसका गौरव कभी खण्डित न होने दे। यदि हम पं0 लेखराम जी द्वारा रोपित इस पीयूश वर्षी वृक्ष को अपने कर्म के स्वेद कणों से भी सीचेंगे तो यह वृक्ष हमेशा हरा–भरा रहकर अपने सौरभ से मानव जाति को सुगन्धित करता रहेगा एवं युगों–युगों तक मानव जीवन कल्याण एवं शान्ति की शीतल छाव के साथ ही सुख रूपी मधुर फल का रसास्वादन भी करता रहेगा।

'महर्षि दयानन्द सरस्वती उन महा पुरूषो' मे से थे, जिन्होने आधुनिक भारत का निर्माण किया। स्वामी दयानन्द को मै एक धार्मिक और सामाजिक सुधारक तथा कर्म योगी मानता हूँ।

–नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

With Best Compliments From...........

: 2367205
: 2604604
: 9839761751

Radheyshyam Gupta

Proprietor

RAMESH TUBE CORPORATION

-: Dealers In :-

All Type of Steel Tubes

80/85-B, Latouche Road, Kanpur-208 001

वेद–वाणी से उतरे पार

- आचार्या नन्दिता शास्त्री
(चतुर्वेदा)

ओं जातवेद से सुनवाम सोममरातीयतो नि दहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।।

इस मन्त्र का देवता अग्नि है। उस अग्नि विशेषण जातवेदस् है। निरूक्त के दैवत खण्ड में पृथिवी स्थान देवाताओं में सर्वप्रथम अग्निः जातवेदाः वैश्वानरः इन तीनो देवताओं का उल्लेख है। जिनमें अग्नि सर्वप्रमुख है। जातवेदस् और वैश्वानर अग्नि के विशेष अर्थ के ज्ञापक है। वस्तुतः गुण, स्वभाव के भेद से एक ही पदार्थ के अनेक नाम संस्कृत में पाये जाते हैं यह संस्कृत की विशेषता है। अन्यथा एक पदार्थ के लिये अनेक शब्दों का प्रयोग अनुचित ही कहा जाता। यही बात मीमांसा दर्शन के अन्याय्यच्श्चानेकशब्दत्वम् (मी.द. 1/3/26) सूत्र में जैमिनि मुनि ने स्पष्ट की है। अर्थात् अर्थ के लिये अनेक शब्द का होना अन्याय्य अनुचित है । इसलिये एक अर्थ के लिये एक शब्द का प्रयोग उस पदार्थ की नाना वत्ता उसकी विभिन्न प्रकृति तदनुसार उसकी विविध क्रियाशीलता का ज्ञापक है । संस्कृत भाषा के वैदिक शब्द कोष़ निघण्टु तथा लौकिक शब्द कोष अमरकोषादि में एक ही शब्द के अनेक पर्यायवाचियों का उल्लेख इस बात का प्रमाण है। निघण्टु में जल में 101 पर्यायवाची गिनाये गये हैं जो कि जल की विविध गुणवत्ता का उसके अत्यन्त सूक्ष्म स्वभाव का ज्ञापक है।

प्रकृत में अग्नि तो सामान्य अग्नि है किनु जातवेदस् शब्द के द्वारा उस अग्नि की विशेषता का द्योतन होता है। निरुक्त में महर्षि यास्क ने इस शब्द का निर्वचन करते हुए लिखा है–

जातवेदाः कस्मात्? जातानि वेद, जातानि वैनं विदुः, जाते जाते विद्यत इति वा, जातवित्तो वा जातधनः जातविद्यो वा जातप्रज्ञानः। (निरू. 7/5/1)

इस जातवेदस् (जात+विद+असुन्) शब्द मे विद् धातु का प्रयोग है जो कि पाणिनीय धातुपाठमें अनेक अर्थो में पठित है। तद्यथा– **विद ज्ञाने, विद सत्तायाम्, विद्लृ लाभे, विद विचारणे**, जिससे विद् धातु का अर्थ जहाँ ज्ञान है वहीं प्राप्त करना विद्यमान होना व विचार करना भी है इसीलिये इस शब्द की अनेक प्रकार से व्युत्पत्ति महर्षि यास्क ने की है।

इस प्रकार जातेवदा शब्द का अर्थ होगा– जो जात अर्थात् उत्पन्न सृष्टि के सभी पदार्थों में

विद्यमान है (सत्ता), सबके लिए उपलब्ध है (लाभ), सबके द्वारा ज्ञातव्य है (ज्ञान) विचारणीय और व्यवहर्त्तव्य है (विचार), उस अग्नि का नाम जातवेदा है।

आधिभौतिक यज्ञ में अग्नि का अर्थ आग है जिससे हम सब परिचित हैं किन्तु आध्यात्मिक यज्ञ में इसका मुख्य अर्थ परमेश्वर है क्योंकि **अग्निः कस्मात्? अग्रणीर्भवति** (निरु. 7/4/1) वह अग्रणी है सबको आगे ले जाता है सबका प्रेरक है अग्नि के अन्दर भी वही विद्यमान है (सत्ता) वही अग्नि के अन्दर दाहकता गुण का जनक है। वह परमेश्वर सब के द्वारा सहजता से प्राप्तव्य है (लाभ) सभी उत्पन्न पदार्थों के गुण, कर्म, स्वभाव को जानता है (ज्ञान) क्योंकि उसी ने इन्हें उत्पन्न किया है। वह सबके द्वारा जानने योग्य है तथा वह सबको यथावत् जो जैसा है उस प्रकार जानता है। सृष्टि के सभी भोग्य धनों का वह स्वामी है (वित्त–धन) उसी ने सबको यह धन दिया है इस प्रकार अनेक व्युत्पतियों से जातवेदस् शब्द का मुख्य अर्थ परमेश्वर तथा गौण अर्थ भौतिक अग्नि है।

प्रस्तुत मन्त्र में उसी परमेश्वर के लिये कहा है कि हम मनुष्य **जातवेदसे** उस जातवेदस् परम प्रभु के लिये **सोमं सुनवाम** उसके द्वारा सुत अर्थात् उत्पन्न अतएव सोम शब्द से अभिहित भोग्य पदार्थो की आहुति उसके लिये उसकी आज्ञा में वर्तमान ब्रह्माण्ड के देवों के लिये अर्पित करें।

देवान् भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ।।

(गीता. 3/11)

हमनें देवों से प्राप्त किया है हम देवों को दें, फिर देव हमें देंगे। इस प्रकार परस्पर एक दूसरे का सम्मान करते हुए हम परम श्रेय निःश्रेयस् के भागी बनेंगे। यही धर्म है यही धर्म का लक्षण है **यतोऽभ्युदयनिः श्रेयससिद्धिः स धर्मः** (वै.द. 1/2) जिससे अभ्युदय और निःश्रेयस् की सिद्धि होती हो उसका नाम धर्म है।

जो ऐसा नहीं करता परस्पर सम्मान नहीं करता वह इस सृष्टि का समाज का अराति अर्थात् शत्रु होता है और ऐसी अदानरूपी **अरातीयतः** शत्रु वृति का आचरण करने वाले लोगों के **वेदः**= धन को वह परमेश्वर **निदहाति** निश्चय रूप से दग्ध भस्म कर देता है उनसे छीन लेता है।

ऋग्वेद का एक मन्त्र है जिसमें स्पष्ट रूप से जो लोग कहते हैं कि वह परमेश्वर कहाँ है, वह दिखता तो है नहीं अतः हम नहीं मानते उसे हम उस पर विश्वास नहीं करते आदि, उनके लिये वहाँ उसी वेदमन्त्र के उत्तरार्ध में आगे कहा– **सो अर्यः पुष्टीर्विज इवामिनाति दस्मै धत्त स**

जनास इन्द्रः (ऋ. 2/12/5) उसके अस्तित्व का पता तो तब लगता है कि जब वह अतिवृष्टि, अनावृष्टि, दुष्काल, भूकम्प, सूनामी आदि के द्वारा हमारे पुष्टि के भोग के साधनो को **विज इव** तूफान की तरह **आमिनाति** नष्ट कर देता है फिर भी कुछ लोगो को खरोंच तक नहीं आती क्यो? क्योंकि हमारा नियन्ता कर्मफल प्रदाता कोई और है वह हमारे कर्मों के अनुसार हमें मारता भी है और हमारी रक्षा भी करता है। इसलिये उस पर भरोसा करो! विश्वास करो! निश्चय ही पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त उस पर भरोसा करके हमें निश्चिंत रहना चाहिए। लहराती बलखाती समुद्र की लहरों के बीच जैसे नाव पर बैठा मनुष्य **.नावेव सिन्धुं** नाविक पर भरोसा करके सुखपूर्वक समुद्र को पार कर लेता है उसी प्रकार उस परम प्रभु पर विश्वास करके जो उसे अपना तारणहार खेवैया समझ कर अपना सर्वस्व समर्पित कर देता है वह **अति दुर्गाणि अति दुरिता** इस कंटीली पथरीली अन्धेरी दुर्गम पहाड़ियों संघर्षो से युक्त भवसागर से पर्षत् सुखपूर्वक पार हो जाता है।

यह मन्त्र पौराणिक जगत् के कर्मकाण्ड में बहुत प्रसिद्ध है। इस मन्त्र को बोलकर कर्मकाण्डी विद्वान् दुर्गा देवी की आराधना उसका पूजन अर्चन करते है। कारण मन्त्र में दुर्गाणि विश्वा शब्द आया है। यद्यपि यह दुर्गाणि शब्द नपुंसकलिंग दुर्गं शब्द के बहुवचन का रूप है जो कि विश्वानि का विशेषण है। जबकि दुर्गा के लिए इस शब्द का प्रयोग करने पर दुर्गा शब्द को स्त्रीलिंग एकवचन में प्रयुक्त होना चाहिए। वस्तुतः इस मन्त्र का देवता तो जातवेदा अग्नि ही है दुर्गा कथमपि नहीं। स्वयं सायणाचार्य जी का वेद भाष्य इस विषय में प्रमाण है जिसे कोई भी निकाल कर देख सकता है। इसलिये दुर्गा की स्तुति में इस मन्त्र का विनियोग सर्वथा गलत है। इसी प्रकार **अक्षन्नमीमदन्त** मन्त्र बोलकर अक्षत डालना आदि पौराणिक कर्मकाण्ड में अनेक विनियोग ऐसे हैं जो अर्थ की दृष्टि से हास्यास्पद हैं।

इस प्रसंग में मेरी काशी के किन्हीं प्रामाणिक विद्वान् से बातचीत हुई तो वे बोले शब्दों की ही नहीं वर्णों की भी समानता से किये गये ऐसे विनियोगों से अपूर्व की उत्पत्ति होती है जो कि मान्य है । ऐसे विनियोगों में अर्थ को प्रधानता देना ठीक नही। मीमांसा में इस प्रकार के मन्त्रवार्णिक विनियोग स्वीकृत हैं आदि। जबकि मीमांसा दर्शनकार जैमिनी मुनि ने मीमांसा के आरम्भ में ही **औत्पत्तिकस्तु शब्दस्यार्थेन सम्बन्ध ...** (मी.द. 1/1/5) शब्द का अर्थ के साथ औत्पत्तिक (स्वाभाविक) नित्य सम्बन्ध है आरोपित नहीं यह बताया है। वहीं मीमांसा के विनियोग प्रकरण में भी जहाँ यज्ञ में मन्त्रों के विनियोग के छः कारण (श्रुति, लिङ, वाक्य, प्रकरण, स्थान =क्रम, समाख्या=संज्ञा) बताये हैं वहाँ इन सब कारणों के एक साथ उपस्थित होने पर किसके

आधार पर विनियोग करें इसका उत्तर देते हुए अर्थ को ही प्रधान कारण माना है।

श्रुति-लिङ-वाक्य-प्रकरण-स्थान- समाख्यानां समवाये पारदौर्बल्यमर्थवि प्रकर्षात्।

अर्थात् इनमें पूर्व वाले की अपेक्षा बाद वाला दुर्बल माना जाये अर्थात् समाख्या से स्थान, स्थान से प्रकरण, प्रकरण से वाक्य, वाक्य से लिङग, लिङग से श्रुति बलवान् है। श्रुति अर्थात् श्रवण मात्र से जिस अर्थ का बोधन होता है वह अर्थ ही विनियोग में सबसे बलवान् कारण है इसलिये अर्थ को ध्यान में रखकर ही विनियोग करना चाहिये यह स्पष्ट है।

उसी मीमांसा को प्रमाण मानने वाले पण्डित जी इन सूत्रों की कैसी संगति लगाते हैं, भगवान् जाने। इस दृष्टि से पौराणिक कर्मकाण्डियों के अधिकांश विनियोग गलत सिद्ध होते हैं यह ज्ञान तभी संभव है जब हम पाणिनीय संस्कृत व्याकरण, निरूक्त, ज्योतिष, कल्पादि षडंगो का विधिवत् अध्ययन करेंगे। संस्कृत के नाम पर कर्मकाण्ड के नाम पर आज के अज्ञानी पुरोहित क्या करते हैं कोई नही जानता।

अपने विद्यालय की एक स्नातिका **कु. शोभा वेदरत्न** जिसका विवाह मुम्बई के एक प्रसिद्ध आर्य परिवार में **श्री विकास अग्रवाल** के साथ हुआ है जिनके बड़े भाई **श्री पीयूष अग्रवाल** विचार चैनल के लिये हर क्षण विचार करते रहते है। अभी उसका विवाह हुए मात्र दो वर्ष व्यतीत हुआ है। वह कुछ दिनों के लिये गर्मी की छुट्टी में अपने नन्हें बेटे ओजस् के साथ विद्यालय में आई हुई वह बता रही थी कि एक बार परिवार के किसी मांगलिक कार्यक्रम में हम लोग गये थे। वहाँ किन्ही पडित जी को पूजा कराने के लिये बुलाया गया था। वे पण्डित जी संस्कृत में कुछ–कुछ बोलते हुए पूजा करा रहे थे। अन्त में जब पण्डित जी पूजा करा कर चले गये तो एकत्र जनों ने शोभा से पूछा– आप तो संस्कृत पढ़ी हैं बताइये क्या ये पण्ड़ित जी पूजा ठीक करा रहे थे? शोभा ने जब उन्हें बताया कि पण्डित जी यहाँ लक्ष्मी की पूजा कराने आये थे परवे तो संस्कृत का **या कुन्देन्दु तुषार हार धवला...** यह श्लोक पढ़ रहे थे जिसमें सरस्वती की वन्दना की गई है सुनकर सभी जन कहने लगे कि इसने तो हमें अच्छा बेवकूफ बनाया।

अस्तु इसलिये सामान्य संस्कृत का ज्ञान तो सभी को प्राप्त करना ही चाहिये तभी हम सही मन्त्रार्थ को जान तदनुकूल आचरण कर भव सागर से पार हो सकते हैं।

ओ३म्

आर्य समाज स्थापना दिवस एवं भारतीय नव संवत्सर के
शुभ अवसर पर नगर के समस्त आर्यजनों को
बहुत-बहुत बधाई एवं हार्दिक
शुभकामनायें

Balaji Exports

R. K. Kashyap

Ratan Sadan Apartments, No.7, First Floor,
2A/353, Azad Nagar, Kanpur 208 002 (INDIA)

Ph.: (O) +91-512-2218594, (R) +91-512-3291229

आर्य कौन है?

''आर्य'' न धर्म है, न जाति, न वर्ग-विशेष। फिर वह क्या है?

– **सतीश कुमार आर्य,** मंत्री आर्य उपप्रतिनिधि सभा; कानपुर नगर

आर्य शब्द का अर्थ निरुक्त में ''ईश्वर पुत्र'' दिया है जिसका अभिप्राय यह है कि ईश्वर के सच्चे पुत्रों को ''आर्य'' नाम से सम्बोधित किया जाता है। एक पिता के अनेक पुत्र होते हुए भी उसकी आज्ञा पर चलने वाले सदाचारी विनम्र पुत्र को ही वास्तविक पुत्र कहा जाता है। ऐसे ही यद्यपि मनुष्य मात्र ईश्वर के पुत्र हैं तथापि आर्य अर्थात् सदाचारी पुरूषों को ही ''ईश्वर पुत्र'' का नाम दिया जाता है।

प्राचीन ग्रन्थों में 'आर्य' शब्द

वेद :

१. **आर्य वृता विसृजन्तो अधि क्षमि (ऋग्वेद १०-६५-११)**

२. **कृण्वन्तों विश्वमार्यम् (ऋग् ७/१/३०)**

३. **विजानीह्यर्यान् ये च वस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान्** (१-४-१०-८)

इन मन्त्रों में सत्य, अहिंसा, पवित्रादि उत्तर व्रतों को धारण करने वाले को ''आर्य'' कहा गया है और सारे संसार को इस प्रकार आर्य (श्रेष्ठ) बनाने का उपदेश है।

४. **आर्य वृत्त (गौतम धर्म सूत्र १६/६६)**

सदाचारी के अर्थ में 'आर्य' शब्द है।

बाल्मीकि रामायण :

५. **सर्वदाभिगतः सद्भिः समुद्र इव सिन्धुभिः। आर्य सर्वसमश्चैव सदव प्रियदर्शनः।।** (१-१-१६)

श्री रामचन्द्र जी सदा सत्पुरूषो के सहयोग में इस प्रकार वर्त्तमान रहते थे जैसे समुद्र नदियों से सदा मिला रहता है तथा वे 'आर्य' थे, समदृष्टि रखते थे, सबके प्रिय थे। यहाँ सज्जनता से पूर्ण श्री रामचन्द्र जी को 'आर्य' कहा है।

विदुर नीति :

६. **आर्यकर्माणि राज्यन्ते भूतिकर्माणि कुवते।हितं च नाभ्यसूयन्ति पण्डितः भरतवर्षभ।।**
न स्वे सुखे वै कुरूते प्रहर्षः, नान्यस्य दुःखे भवति प्रहष्टः,
दत्वा न पश्चात्कुरूतेऽनुताप, स कथ्यते सत्पुरूषार्यशीलः।।

इन वचनों में अत्यन्त धार्मिक को 'आर्य' कहा है।

चाणक्य नीति :

७. **अभ्यासाद् धार्यते विद्या, कुलं शीलेन धार्यते, गुणेन ज्ञायते त्वार्यः, कोपो नेत्रेण गम्यते।।**

यहाँ गुणी जन को 'आर्य' कहा है।

महाभारत :

८. **स बाल एवार्यमुनिर्नुपोत्तमः (आदि पर्व ४०-७)**

इस वचन में उत्तम राजकुमार के साथ 'आर्य मति' विशेषण लगाया है जो श्रेष्ठ बुद्धि वाले के अर्थ में है।

कौटिल्य अर्थशास्त्र :

९. **व्यवस्थितार्यमर्यादः, कृतवर्णाश्रमस्थितः।**

आर्य मर्यादाओं को जो व्यवस्थित कर सके वह राज्याधिकारी है यहां ऐसा बताया गया है।

गीता :

१०. **कुतस्त्वा कश्मलमिवं विषमे समुपस्थितम्। अनार्यजुष्टम स्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन।। (द्वितीय अध्याय - २/२)**

यहाँ युद्ध में सन्नद्ध कायरता को प्राप्त हुए अर्जुन की वृत्ति को 'अनार्यों' की वृत्ति कहा है। इससे आर्य का अर्थ श्रेष्ठ का होता है।

धर्म्मपद :

११. **अरियप्पवेदिते धर्म्मे सदा रमति पण्डितो।**

पण्डित जन सदा आर्यो के बतलाये धर्म में रमण करता है।

न तेन अरियो होनि येन पाणानि हिंसति। अहिंसा सब्ब पाणानं अरियोति पवच्चति।।

प्राणियों की हिंसा करने से कोई आदमी 'आर्य' नहीं होता। जो किसी भी प्राणी की हिंसा नही करता वही 'आर्य' होता है।

आर्य शब्द और प्राचीन कोष :

<u>शब्द कल्पद्रुम :</u>

मान्यः, उदारचरितः, शांतचित्तः, न्यायपथावलम्बी, प्रकृताचारशीलः सततकर्त्तव्य कर्मानुष्ठाता यदुक्तम् ''कर्तव्यमारचरन् कायम् अकर्त्तव्यमनाचरन्। तिष्ठति प्रकृताचारे स तु आर्य इति स्मृतः।'' धार्मिक धर्मशीलः। यथाह मनु आर्य रूपमिदामार्य कर्मभिः स्वैविभावयेत्।। 10/57।।

मान्यः- जो अपने उत्तम गुणो के कारण सम्मान के योग्य हो।

उदारचरितः- जिसका चरित्र उदार हो, जिसके व्यवहार के अन्दर उदारता पाई जाय, जिसके भीतर संकीर्णता न हो किन्तु जिसका हृदय विशाल हो।

शान्तचितः- जिसका चित्त शान्त हो।

न्यायपथावलम्बीः- जो सदा न्याय के पथ पर चलने वाला हो। जो कभी भूलकर भी अन्याय का अनुसरण न करे।

प्रकृताचारशीलः- जिसका आचार और स्वभाव शास्त्रीय आज्ञाओं के अनुकूल हो।

सततकर्त्तव्यकर्मानुष्ठता - जो करने योग्य कार्यो को निरन्तर करने वाला हो। इसलिए प्राचीन ऋषियों ने कहा है कि जो पुरूष उत्तम कार्यो को करने वाला हो और बुरी क़ार्य को कभी न करे उसे आर्य कहते है। आर्य का अर्थ धर्मात्मा है।

(१) **महाकुल कुलीनार्यः सभ्यः सज्जन साधनः। (अमर कोश)**

जो आकृति–प्रकृति, सभ्यता–शिष्टता, धर्म–कर्म, ज्ञान–विज्ञान, आचार–विचार तथा शील स्वभाव में सर्वश्रेष्ठ हो उसे ''आर्य'' कहते हैं।

(२) **आर्यः- अर्तु प्रकृतमाचरितुं योग्यः।**

अर्थात् शास्त्रोक्त उत्तम मार्ग पर चलने वाला 'पूज्य–श्रेष्ठ' इति। शब्द रत्नावली नामक संस्कृत कोष में आर्य के अर्थ पूज्य और श्रेष्ठ बतलाए गए है। 'संगत इत्यजयः' अजय नामक कोषकार ने आर्य का अर्थ संगत बताया है अर्थात् जिसके सिद्धान्त और व्यवहार बुद्धि संगत हो जिसके विश्वास और आचरण में परस्पर विरोध न हो।

पाश्चात्य विद्वानों की 'आर्य- शब्द की व्याख्या

A tall fair skinned, long headed race whose origin is still doubtful though it was probably in Central Asia and who spread in prehistoric time over the whole of Europe and parts of Asia and Africa Almost all modern Europeans are of Aryan Descent. The family also called Indo-European or Indo-Germanic but these names are open to objection from which the term "Aryan" is free., (Harms worth History of the world).

अंग्रेजी के Pears' Cyclopedea के General Information प्रकरण में 'आर्य' का अर्थ इस प्रकार दिया हुआ है।

Arya- The Word "Arya" derived from the sanskrit, means an Honourable lord of the soil'! अर्थात् संस्कृत के आर्य शब्द का अर्थ भूमि के माननीय स्वामी का है।

Gentleman:- अंग्रेजी में आर्य शब्द का पर्यावाचारी Gentleman समझा जाता है। अंग्रेजी

के प्रसिद्ध लेखक एमर्सन ने इसकी व्याख्या इस प्रकार की है।

Whoever is open, loyal. of humane, and affable demeanor, honorable himself, and in his judgement of others, faithful to his word as to law and faithful alike to God and man, such a man is a true gentleman.

The flowering of the civilization is the finished man-the man of sense, of grace, of accomplishment, of social power of the gentleman.

अर्थात् वही व्यक्ति सभ्य और आर्य होता है जो उदार, निष्ठावान्, सत्य–प्रेमी, दयालु और सरल हो, जो अपनी दृष्टि में स्वयं ऊंचा उठा हो और दूसरों का सम्मान करता हो। जो अपनी बात का धनी हो, जो परमात्मा और मनुष्य के प्रति सच्चा हो।

सुसंस्कृत मनुष्य वही होता है जो बुद्धिमान हो सुन्दर गुणों से अलंकृत हो और सामाजिक शक्तिसम्पन्न हो। (इमर्सन)

ऋषि दयानन्द सरस्वती और आर्य शब्द :

ऋषि दयानन्द सरस्वती जिन्होंने अर्वाचीन काल में आर्य शब्द को उसके वास्तवितक उच्च स्थान पर बिठाने का यत्न किया है, वेद भाष्य में **"अहं भूमिमूददामार्याय"** पर जिसमें परमात्मा का आदेश है कि मै भूमि का राज्य आर्य के लिए देता हूँ लिखते हुए आर्य शब्द की निम्न व्याख्या की है:–

आर्याः श्रेष्ठ गुण, कर्म, स्वभावयुक्ता मनुष्यः। अर्थात् जो श्रेष्ठ गुण कर्म स्वभाव वाले मनुष्य है वे ही आर्य संज्ञा के संज्ञी है।

गुण :

विद्या, विनय, प्रेम–व्यवहार, चातुर्य, योग क्षेम, प्रकृति का ज्ञान और उसके गुणों की पहचान, उनसे लाभ उठाने का सदैव ध्यान, समयानुकूल कार्य करना, जीव और मृत्यु की व्यवस्था को जानकर अधिक शोक, हर्ष में न पड़ना और ईश्वर आज्ञा भंग से डरना इत्यादि गुण है।

कर्म :

इन गुणों के प्रसार में सदा उद्योग इनकी वृद्धि के निमित्त तन, मन, धन का उपयोग, इसके उपाय के लिए सज्जन, गम्भीर और उदार पुरूषो का सहयोग इत्यादि कर्म है।

स्वभाव :

प्रकृति, सौन्दर्य, ओजस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी, सहनशील, परहित विचार, स्वार्थ के वश होकर दूसरो के अपकार का भी ध्यान न आना इत्यादि स्वभाव है।

यह ठीक है कि उक्त गुण, कर्म और स्वभाव से सम्बन्ध रखने वाले नियमों का सर्वांश में तो विकास नहीं होता तथापि जितने अंश में जिस भी समाज में इन गुणो का विकास होगा वह समाज उतनी ही खुशहाली की निराली आभा से चमकेगा।

'ऋ, गतौ', इस धातु से आर्य शब्द सिद्ध होता है जिसके अर्थ ज्ञान, गमन, प्राप्ति है। जिस मनुष्य का ज्ञान, निर्दोष और उसके अनुकूल आचरण हो तो वह मनुष्य ''आर्य पद'' का अधिकारी है।

श्री अरविन्द घोष की आर्य की सुप्रसिद्ध व्याख्या :

श्री अरविन्द घोष ने सुप्रसिद्ध What is significance of the name of Arya लेख में 'आर्य' शब्द की बड़ी विशद व्याख्या की है। व्याख्या का मुख्याँश इस प्रकार है :–

The word Arya expressed a Particula ethical and social ideal, an ideal of well-governed life, eandour, courtesy, nobility, straight-dealing, courage, gentleness purity, humanity, compassion protection of the weak liberality, observance of social duty, eagerness for knowledge, social accomplishment, there, is no word in human speech that has a nobler history.

The Arya is he who strives and overcomes all outside him or within him that stand opposed to the human advance.

In every thing, he seeks truth, in every thing right, and freedom.

Arya Vol. 1P. 61

अर्थात् 'आर्य' शब्द से एक सामाजिक तथा नैतिक आदर्श का, एक मर्यादित जीवन का, उदारता, नम्रता, सज्जनता, सरलता, साहस, सौजन्य, पवित्रता, मानवता, निर्बलो की सहायता, सामाजिक कर्त्तव्यों का अनुष्ठान, ज्ञान प्राप्ति की उत्कण्ठा इत्यादि गुणों का बोध होता है।

वस्तुतः मानवीय भाषा में अन्य कोई शब्द नहीं जिसका इतिहास इस शब्द से उच्च हो।

मनुष्य किसे कहते हैं?

मननशील व्यक्ति को मनुष्य कहते है। मननशील व्यक्ति का यह स्वभाव होता है कि वह हिताहित, सत्यासत्य, न्याय–अन्याय, हानि–लाभ का विचार करके आचरण करता है।

जो व्यक्ति विनय, विवेक और विचार से युक्त और वैर, विरोध, विकार मुक्त होता है वास्तव में वहीं मनुष्य आर्य कहलाये जाने योग्य है।

आर्य कोई भी हो सकता है ?

आर्य संज्ञा वाले पुरुष किसी एक स्थान, किसी एक समाज या किसी एक जाति में नही

होते प्रत्युत सर्वत्र पाए जाते हैं। इन्हें के पुण्य प्रताप से सत्य भाषणादि गुणों से मनुष्य समाज का उत्थान होता है। ऐसे लोग प्रदर्शन के बन्धन से दूर रहने में अपना हित जानते और प्रशंसा के सामने आते ही अपना मुहं दूसरी ओर फेर लेते है। चुपचाप अपना कार्य करते हुए चुपचाप ही इस संसार से कूच कर जाते है, परन्तु संसार के लिए उन्नति और गौरव की सामग्री छोड़ जाते है। ये लोग प्रत्येक अच्छे कार्य को यज्ञ के रूप में करते है। अच्छे गुणों के स्वामी बनने और उनको व्यवहार में लाने पर भी अभिमान या घमण्ड से दूर रहते है।

क्या केवल संध्या हवन इत्यादि करना आर्यत्व का घोतक है?

जो व्यक्ति नित्य सन्धया और हवन करता हो, आर्यसमाज में जाता हो, समय–समय पर दान देता हो और वेदो का स्वाध्याय करता हो उसके लिए प्रायः कहा जायेगा कि उसका आर्य जीवन है। यह तो आर्य जीवन का केवल एक पक्ष है, यद्यपि आवश्यक पक्ष है। इससे भी अधिक आवश्यक एक और पक्ष है।

पौराणिक जगत् में जो पुरूष नित्य प्रातः काल उठता है, संध्या, गायत्री या किसी विशेष देवता की स्तुति करता है या समयानुकूल यज्ञ करता है उसको लोग कर्मकांडी कहते हैं चाहे उसका अन्य जीवन कैसा भी क्यों न हो? ऐसे पण्डित और कर्मकाण्डी सज्जन बहुत से मिलेंगे जिनका अधिकांश जीवन जप, तप तथा यज्ञ की भेट हो जाता है परन्तु उनके शेष जीवन से धार्मिकता प्रकाशित नही होती। ऋषि दयानन्द ऐसे जीवन को कर्मकाण्डी न कहकर पाखण्डी कहते है। पाखण्ड क्या है? रूढ़ियों को मानना और उनके तत्व को ग्रहण करना। इसी प्रकार जो पुरूष केवल संध्या, हवन आदि अनुष्ठान करता है परन्तु उसके शेष जीवनपर उसका प्रभाव न हो तो वह आर्यत्व का द्योतक नहीं है। वहतो उसी प्रकार का आर्य जीवन रखने वाला समझा जायेगा जैसा कि खिलौने का आम या काठ का हाथी। ऋषि दयानन्द का मत है कि जीवन में साम्प्रदायिकता न हो, वही वास्तविक आर्य जीवन है। ऋषि ने कहा कि धर्म को सम्प्रदाय बना देने से आर्यो में भी वे दोष आ जायेंगे जो अन्यों में है। स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश में 666 मतों का वर्णन करते हुए धर्म के मुख्य तत्वों पर बल दिया है। प्रत्येक आर्य को उचित है कि वह साम्प्रदायिकता के दोषों से बचे और अपने जीवन में धर्म के तत्वों के धारण करे।

आर्याब्रता विसृजन्तो अधिक्षभि (ऋग0 10/65/11)

अर्थात् आर्य वे कहलाते है जो इस पृथ्वी पर सत्य, अहिंसा, परोपकार, पवित्रतादि उत्तम व्रतों को विशेष रूप से धारण करते हैं।

श्रृद्धांजलि का वैदिक ढंग

– इन्द्र देव गुलाटी (सिद्धान्त भूषण)
म्यंमार वाले

श्रृद्धांजलि देने का वैदिक ढंग इस प्रकार हो सकता है।

हवन सन्ध्या की पुस्तकों में श्रद्धांजलि देने का ढंग नहीं लिखा होता है। महर्षि दयानन्द की लिखी संस्कार विधि में भी कोई ढंग नहीं लिखा है। वैदिक विद्वांन तथा धर्मार्थ सभायें पत्रों का उत्तर नहीं देती हैं। प्रायः सनातन धर्म की पद्धति से ही सर्वत्र श्रद्धाजंलि दी जाती है। मेरे ज्ञान–अनभुव तथा अध्ययन के अनुसार, वैदिक रीति से श्रद्धाजंलि निम्न प्रकार दी जानी चाहिये –

मृत्यु हो जाने पर तीजा–चौथा– दसवां– तेरहवीं–उठाला–क्रिया–रस्म पगड़ी आदि पर शोक सभा, घर–पार्क–कम्युनिटी हाल– धर्मशाला–होटल आदि सार्वजनिक स्थान पर की जाती है। वहां मृतक की फोटो स्टेज या कुर्सी पर रखी जाती है। वैदिक धर्म के अनुसार फोटो पर फूलमाला–फूल– धूपबत्ती–अगरबत्ती–दीपक जलाना मना है क्योंकि ऐसा सनातन धर्मी करते है जो मूर्ति पूजक होते हैं। अतः पहले वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना–महामृत्युंजय मंत्र – गायत्री मंत्र–ईश्वरस्तुति प्राथनोपासना के मंत्रो– शांति प्रकरण के मंत्रों को उच्चारण किया जाये। समय कम हो तो कुछ मंत्रों का उच्चारण करते हुये सबसे प्रमुख व्यक्तियों का टीका करते हुये कलावा बांधा जाये फिर मुख्य या बड़ी फूलमाला मृतक के पुत्र को या जिसने चिता में अग्नि प्रज्जवलित की हो उसे पहनाई जाये और फूलो की पंखुडियाँ निकट संबंधियों मित्रों आदि पर बरसाई जाये। फोटो पर कुछ भी नहीं करना है। इस प्रकार जीवित व्यक्ति को सम्मान तथा महत्व देना है। फोटो के आगे फूलों की थाली न रखी जाए। मृतक के अधूरे कार्यो को उनके पुत्रों, निकट संबंधियों ने ही पूरा करना है अतः उन्हें ही सम्मानित किया जाये। भजन– व्याख्यान – उपदेश – श्रद्धांजलि – शोक संदेशों को पढ़ने के बाद अंत में शान्ति पाठ करे, सभा समाप्त की जाये।

2. नेताओं/महापुरूषों की समाधियों– प्रतिमाओं–मूर्तियों पर प्रायः जन्म दिवसों–मृत्युदिवसों अथवा अन्य अवसरों पर, समय–समय पर फूल मालाएं पहिनाई एवं फूल बरसाए जाते है। हाथ जोड़कर शीश झुकाकर नमन भी किया जाता है। यह सनातन धर्मी ढंग है। आर्य जन भी ऐसा करके, अज्ञानता के कारण अवैदिक ढंग से ही श्रंद्धाजलि देते है जबकि किसी आर्य समाज अथवा आर्य प्रतिनिधि सभा ने कभी आपत्ति प्रकट नहीं की है।

वैदिक धर्मानुसार जब कोई परिवार–दल– संगठन–संस्था आदि के

पदाधिकारी–कार्यकर्ता सामूहिक रूप से जाएं तब कुछ वेद मंत्रों का उच्चारण करने के बाद मुख्य फूलमाला सबसे प्रमुख व्यक्ति/नेता/अध्यक्ष को पहनाई जाये और मालाएं हों तो अन्यों को उनकी योग्यता पद के अनुसार पहनाई जाये तथा फूलों की पंखडियाँ को शेष लोगों पर बरसाई जाए। अन्त में शान्ति पाठ किया जाए और मन का संकल्प लिया जाए या खुलकर कहा जाये (मृतक का नाम लेकर) कि उनके द्वारा अधूरे छोड़े कार्यों को हम पूरा करेंगे।

संसद भवन तथा विधान मंडलों में भी इसी प्रकार वैदिक रीति से श्रद्धांजलि दी जाय। फोटो को केवल देखना है। उस पर फूल माला–फूल नहीं चढ़ानी। धूपबत्ती अगरबत्ती–दीपक भी नहीं जलाना है। जीवित नेताओं मंत्रियों–सदस्यों आदि को ही महत्व व सम्मान देना है क्योंकि अधूरे कार्यो को तो उन्होने ही पूरे करने है।

मैने आज तक किसी को भी, वैदिक धर्मानुसार श्रद्धांजलि देते हुये न तो देखा है–न सुना है– न ही किसी अखबार में पढ़ा है इसलिये उपरोक्त लेख में श्रद्धांजलि देने का वैदिक धर्म लिखा है। यदि यह ढंग शुरू हो गया तो यह ढंग सनातन धर्मी ढंग से ज्यादा लोकप्रिय हो सकता है और पसन्द आ सकता है। अतः आर्य जनों से अनुरोध है कि वे इस ढंग को अपनायें और इसे लोकप्रिय बनायें ताकि आर्य समाज की अपनी अलग पहचान बनेगी और वैदिक धर्म की श्रेष्ठता का लोगो में प्रचार–प्रसार होगा।

With Best Compliments From............

Sanjay Kumar Agrwal

: 2350407 (S)
: 95515-2835797(R)
: 9415065836
: 9336246782 P.P.

Export Quality
S. T. C.
Brand
I.M.II&Brss Cylinder

KisaN

SHIVANI TRADING Co.

Deals In : All kind of, P.V.C. Pipes & Fitting, Hand Pump Fitting, GI Pipe & Fitting, India Marka Pipe & Fitting Motor Spares etc.

79/23, Lacouche Road, Kanpur - 1

आर्य उप प्रतिनिधि सभा 2011-12 के पदाधिकारीगण

शुभ कुमार वोहरा

प्रधान

सतीश कुमार आर्य

मंत्री

राधेश्याम आर्य

कोषाध्यक्ष

बालगोविन्द आर्य

आय-व्यय निरीक्षक

श्रीमती कैलाश मोंगा

उप प्रधान

विनोद चन्द्र श्रीवास्तव

उप प्रधान

श्याम प्रकाश शास्त्री

उप प्रधान

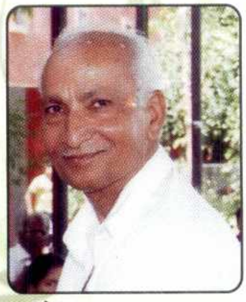

कैलाश चन्द्र गुप्त

उप प्रधान

श्रीमती संतोष अरोड़ा

उप मंत्री

श्रीमती सरोज अवस्थी

उप मंत्री

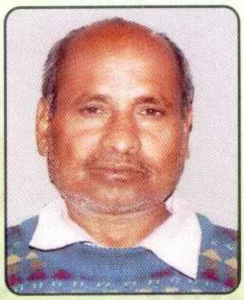

रामलखन आर्य

उप मंत्री

पारस पुरवार

उप मंत्री

सुरेन्द्र गेरा

अधि० आर्यवीर दल

सतीश शास्त्री

पुस्तकालय अध्यक्ष

श्रीमती चन्द्रकान्ता गेरा

महिला संयोजिका

श्रीमती उर्मिला आर्या

उप महिला संयोजिका

भरत की शपथों मे चित्रित हमारी पारिवारिक सामाजिक मर्यादायें

– प्रो0 ओम कुमार आर्य

वेद ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक, उपनिषदादि वैदिक परंपरा के ग्रंथों की तुलना में देखें तो रामायण (महर्षि बाल्मीकि कृत) राम चरितमानस (तुलसीकृत) महाभारत गीतादिग्रन्थ जन साधारण में ज्यादा लोकप्रिय रहें हैं। यह ठीक है कि रामायण महाभारत आदि में जो सत्य पर आधारित सिद्धान्त अथवा मान्यतायें मिलती है उनका स्रोत वेदादि पूर्ववर्ती ग्रंथ ही है किन्तु परवर्ती ग्रंथों के रोचक आख्यान उपाख्यान चाहे जितने हों परन्तु उनमें से बहुत से मनगढ़न्त और काल्पनिक ही हैं, इन ग्रंथों की सरल, सरस सुबोध शैली दैनिक जीवन के साथ इसकी निकटता आदि वे कारक है जिनसे ये परवर्ती ग्रंथ ज्यादा लोकप्रिय हुये और यह भी सत्य है कि अलग या सही रूप में भारतीय आम आदमी इन ग्रंथों से ज्यादा प्रभावित भी हुआ है। यह निर्विवाद सत्य है कि राम और राम के माध्यम से हमारी उच्च वैदिक मर्यादाओं को रामायण (बाल्मीकि) और रामचरित मानस ने जितना सफलतापूर्वक जन साधारण तक पहुँचाया है उतना और कोई ग्रन्थ यह काम नहीं कर सकां बाल्मीकि ने हमें राम का इतिहास दिया लेकिन राम को महलों से लेकर धुर नीचे झोपड़ियों तक पहुँचाने का कार्य मात्र और एक मात्र तुलसी ने किया। कुछ एक गप्प एवं विकृत करके प्रस्तुत की गई मान्यताओं के लिये आप तुलसी को कटघरे में बेशक खड़ा कर दे किन्तु मर्यादा पुरूषोत्तम को हर भारतीय के घर–घर तक पहुँचाने के महनीय श्रेय को तुलसी से कोई भी नहीं छीन सकता। राम का प्रामाणिक जीवन–वृत्त तो बाल्मीकि रामायण में ही मिलता है लेकिन राम को जो लोक–लुभावन लोकरंजन और लोक संग्रह का जो रूप तुलसी ने दिया उसे कोई नही नकार सकता।

यहाँ राम और रामायण के लेखकों के विषय में यह संक्षिप्त चर्चा इसलिये आवश्यक थी कि हम बाल्मीकि रामायण में वार्णित भरत द्वारा माता कौशल्या के सामने खाई गई शपथों में चित्रित अपनी प्राचीन मर्यादाओं की ओर ध्यान दे सकें, उनको समझ सके और यह हिसाब भी लगा सके कि कैसे उन मर्यादाओं की पालना करने से हम उन्नति और गौरव के उच्चतम शिखरों पर आसीन थे और जब से हम मर्यादा भ्रष्ट हुये है तब से कैसे अधोगति और पतन के निम्नतम बिन्दु तक जा पहुँचे हैं। यह अंतर हमारी समझ में आना चाहिये। जैसे जो व्यापारी या व्यवसायी अपने व्यापारादि

से जुड़े लाभ हानि का हिसाब न लगाने के चलते भारी नुकसान उठाता है वैसे ही जो व्यक्ति, समाज या राष्ट्र अपने उत्थान–पतन के कारणो की पड़ताल नहीं कर सकता तो वह नष्ट हो जायेगा। आइये हम उन शपथों और शपथों में चित्रित मर्यादाओं को देखें और उनके परिप्रेक्ष्य में अपने खोये (Loss) पाये (Gain) का आकलन करें।

उक्त शपथ प्रकरण बाल्मीकि रामायण में अयोध्याकाण्ड के 75 वें सर्ग के अन्तर्गत आया है। जब भरत व शत्रुध्न अपने नानिहाल से लौटे और भरत अपनी बड़ी माँ कौशल्या से मिलने गये तब कौशल्या ने भरत को अपनी छाती से लगा लिया। किन्तु दुःख से रो पड़ी और रोती हुई भरत से कहने लगी–

इदं ते राज्यकामस्य राज्यं प्राप्तमकण्टूकम्
सम्प्राप्तं वत कैकेया शीघ्रं क्रूरेणः कर्मणा।।

अयोध्याकाण्ड ७५/११

अर्थात् हे पुत्र जिस राज्य की तुम्हें कामना थी वह निष्कंटक राज्य तुम्हें प्राप्त हो गया है, किन्तु खेद यही है कि कैकेयी ने बड़ी शीघ्रता करके बड़े क्रूर कर्म के द्वारा इसे प्राप्त किया है। चर्चा आगे बढ़ती गई भरत को लगा कि मां कौशल्या को संदेह है कि माँ कैकेयी द्वारा जो पिता दशरथ से दो शेष बचे वचन पूरे करने को कहकर भरतं के लिये राज्य और फिर भ्राता राम के लिये बनवास मांगा गया उस कपट खेल में मै (भरत) भी शामिल था। मेरी भी सहमति थी। इससे भरत के चित्त में बड़ी बेचैनी हुई व विलाप करने लगा, अचेत होकर जमीन पर गिर गया, होश आने पर उसने माता कौशल्या से कहा कि माँ मुझे इस वचन–काण्ड की कोई जानकारी नहीं थी मैं सर्वथा निरपराध हूँ, तो भी आप मुझे दोषी मान रही है आप तो भली भांति जानती है कि भ्राता राम में मेरा कितना प्रगाढ़ प्रेम है। तत्पश्चात उन्होंने बहुत भावुक होकर उन पापकर्मो की ओर इंगित किया है जिनके करने वाले को उनके फलस्वरूप दारूण दुःख झेलना पड़ता है। और कहा है कि उन्हें (भरत को) भी वैसा ही पाप लगे यदि भ्राता राम को वनवास भिजवाने में उनकी जरा भी सहमति रही हो उनकी ये शपथ उक्त सर्ग के श्लोक 21 से 58 तक 38 श्लोकों में मिलती है इनका यदि वर्गीकरण करें तो यह अग्रलिखित 5–6 प्रकार की है– 1. व्यक्तिगत, 2. पारिवारिक, 3. सामाजिक, 4. राष्ट्रीय, 5. धार्मिक तथा 6. मानवतावाद विषयक आदि।

सभी शपथों और उनमें इंगित सभी आदर्शो, परम्पराओं, मर्यादाओं आदि का विस्तार से उल्लेख और वर्णन तो यहां संभव नही, संक्षेप में ही उन पर दृष्टिपात किया जा सकता है, कुछ के

उदाहरण से ही शेष अन्य का अनुमान लगाना होगा। प्रारंभ में ही भरत कहते है यदि राम को वन भिजवाने में मेरी सहमति/अनुमति हो तो मुझे (भरत को) वह पाप लगे जो–किसी गुरूद्रोही, अधम व्यक्ति को लगता है और जिसके चलते वह पापी गुरू से सीखे हुये शास्त्रों के मार्ग का अनुसरण करने वाला न हो अथवा जो सूर्य की ओर मुँह करके मलमूत्र त्याग करने वाले को, गउओ को लात मारने वाले को लगता हो। देखें

हन्तु पादेन गाः सुप्ता यसयायेऽनुमते गतः।

जो पाप सेवक से भारी काम करवाकर समुचित वेतन न देने वाले को लगता है। जो उस अधर्मी राजा को लगता है जो प्रजा से उसकी आय का छठा भाग कर रूप में तो लेता है किन्तु प्रजावर्ग की समुचित रक्षा नही करता है। 'नृपस्यारक्षितुः प्रजाः। वहीं पाप मुझे (भरत को) लगे जो यज्ञो से ऋत्विजादि को दक्षिणा न देने वालों को लगता है।

आज प्रजा आंतकवाद का महा भयंकर दंश झेल रही है, कानून व्यवस्था लगभग चौपट है, किसी की भी जान और माल (Life and property) कहीं पर भी और किसी भी दशा में सुरक्षित नहीं है। शासक गण देखें कि इन शपथों को देखते हुये वे कहाँ खड़े है। वे तथा–कथित धार्मिक और श्रद्धालु जन भी देखें जो पुरोहितों, विद्वानों आदि का शोषण करते है। भरत ने विश्वासघात को भी घृणित पातकों में गिना है और कहा है कि यदि उसकी अनुमति रही हो तो उसे भी विश्वासघात का पाप लगे। सभी श्लोकों के अन्त में लगभग–

यस्यार्योऽनुमते गतः शब्द समान है जिसका अर्थ है कि जिसकी अनुमति से आर्य (राम) वन गये है। इन शपथों में कृतघ्नता, अन्यों की उपेक्षा करके अकेला भोजन करना (देखें वेद मात्र केवलाघो भवति केवलादी) पति पत्नी की आपसी कलह, अग्निहोत्र न करना, सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सोना, प्रातः सायं सन्ध्या वन्दनादि न करना भी पाप में गिना गया। देखे–

उभे सन्ध्ये शयानस्य यत्पापं परिकल्पयते राम से लेकर राणाओं, छत्रपति शिवाजी और हमारे अन्य प्रजापालक राजाओं तक का इतिहास साक्षी है कि स्त्री, बालक, वृद्ध ये सब हमारे लिये पालनीय और संरक्षणीय रहे है, उपेक्षणीय अथवा वध्य कदापि नही। इस उच्च आदर्श की ओर भी भरत ने यह कह कर संकेत किया है–

स्त्री बाल वृद्धानां वधे यत् पापमुच्यते– यही पाप मुझे (भरत) लगे यदि मेरी अनुमति रही हो। हमारे यहाँ शौर्य की अद्‌भुत परंपरा रही है। हम युद्ध में पीठ दिखाकर कभी भागा नही करते। पीठ पर घाव लगाना योद्धाओं के लिये मरण समान है। कवियों ने भी कहा है–

एक शेर एक शूरमा इनके पीछे धरती नाय
जै ये भी पाच्छे पग धरें तो जग प्रलय हो जाय

भरत ने इसी गौरवशाली परम्परा की याद दिलाते हुये कहा–हम सदैव धनधान्य, वैभव संपदा से सम्पन्न रहे हैं। भीख मांगना पाप है हम कभी भिखारी नहीं रहे। हमने सदा नेक कमाई करके अपने खजानों, भण्डारों को धनमाल अन्नादि से परिपूर्ण रखा है। आज के आत्म–सम्मान एवं स्वाभिमान से रहित शासकों ने देश को उधार–लाओं मौज उड़ाओं के व्यसन में फंसाकर सभी प्रकार से दिवालिया बना दिया है। यह पाप है–

भिक्षमाणो यथोन्मतो यस्यार्योऽनुमते गतः इतना ही नही, मंद्यपान, द्यूत क्रीड़ा की गणना भी पाप–कर्मो में की गई है। ये व्यसन हममें नहीं थे, ये निषिद्ध थे यही हमारी मर्यादा थी।

भरत ने अपनी शपथों में जिन अन्य मर्यादाओं की ओर इंगित किया है, निषिद्ध कर्मो का उल्लेख करके उनसे दूर रहने को कहा है, उनमें मित्र द्रोह, परस्त्रीगमन, माता–पिता की सेवा नकरना, किसी धार्मिक कार्य में विघ्न डालना आदि शामिल है। पर्यावरण की दृष्टि से देखें तो भरत का यह कथन कि जल को प्रदूषित करना, उसे विषाक्त करना भी महापाप है, देखे–

पानीयदूषके पापं तथैव विषदायके।
यत्तदेकः स लभतां यस्यार्योऽनुमते गतः।।

चुगली करना चरित्रगत, अशुचिता, दण्डनीय कर्मों में लिप्त होकर राज्य–व्यवस्था से भयभीत रहना आदि निन्दनीय कृत्य भी पाप कर्मो में गिने गये है। भरत ने स्पष्ट कहा कि यदि भ्राता राम को वनवास में भेजने हेतु, उनकी (भरत) लेश मात्र भी सम्मति, सहमति या अनुमति रही हो तो उन्हें भी वही पाप लगे जो उक्त पापियों को लगता है–

मायया रमतां नित्यं पुरूषः पिशुनोऽशुचिः।
राज्ञों भीतस्त्व धर्मात्मा यस्यार्येऽनुमते गतः।

इस प्रकार मोह और शोक से व्याकुल हुये महात्मा भरत विलाप कर रहे थे और माँ कौशल्या को शपथों का वास्ता दे देकर विश्वास दिला रहे थे कि अपने लिये राज्य और देवता तुल्य भाई राम के लिए वनवास मांगने में उनकी (भरत) कोई अनुमति नहीं थी। उनकी शपथों में हमारी वे लगभग सारी मर्यादायें, परम्परायें हमारे उच्च नैतिक मूल्य जीवनादर्श उल्लिखित है जिनके बल पर कभी हम दुनियाँ के सरताज थे, समस्त विश्व में हमारी यशोदुन्दुभि बजती थी, हमारी तूती बोलती थी और हम आसीन थे जगद्‌गुरू के गौरव पूर्ण आसन पर। जिनसे भ्रष्ट होकर आज हम रसातल की ओर जा रहे है। स्वार्थी और सत्तालोलुप नेताओं ने हमारे 'स्व' का पूर्णतया

विदेशीकरण कर दिया है और आज हम भ्रष्टाचारियों, बलात्कारियों, कदाचारियों, कालेधन के बदनाम कुबेरो की पंक्ति में आ खड़े हुये है। क्यों? एक मात्र कारण यह है कि हमने अपने शास्त्रोक्त मर्यादाओं को न केवल छोड़ दिया है बल्कि उनका बुरी तरह से हनन और मर्दन भी कर दिया है।

गोस्वामी तुलसीदास ने भी अपने रामचरितमानस के अयोध्याकांड में लगभग इन्हीं शपथों का उल्लेख किया है। कुछ द्रष्टव्य है–

जे अद्य मात पिता सुत मारें।
माई गोठ महिसुर पर जारे
जे अघतिय बालक बघ कीन्हें।
मीतमहीपति माहुर दीन्हे।
जे पातक उप पातक अहहिं।
करम वचन मन अब कवि कहही
ते पातक मोहि हो विधाता।
जो यहु होई मोर मत माता।।
बेचहि बेदु धरमु दुहि लेहीं।
पिसुन पराय पाप कहि–
कपटी कुटिल कलहप्रिय क्रोधी।
वेद विदूषक विश्व विरोधी लोभी लम्पट लोलुप चारा।
जे ताकहि परधन परदारा।
पावौ मैं तिनके गति घोरा।
जौ जननी यहु संमत मोरा।।
ताजिश्रुतिपंथु बाम पथ चलहीं
वंचक बिरचि बेष जगु छलहि
तिनकै गति मोहि संकर देऊ।
जननी जाँ यहु जानौ भेऊ।। आदि–आदि।

वेद में भी 'सप्तमर्यादा कवयः ततक्षु' कहकर मर्यादापालन पर जोर दिया है। मर्यादा पुरूषोत्तम राम तो थे ही मर्यादाओं के साक्षात् विग्रह। इसलिये इन ग्रंथों से अपने महापुरुषों के

जीवन से हमें यही शिक्षा मिलती है कि अपनी व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, धार्मिक, मार्यादाओं, का सदा पालन करें, अपने जीवन को शुचि बनायें अपने समाज, अपने राष्ट्र और अन्ततोगत्वा समस्त विश्व को शुचि, स्वच्छ, शांत, स्वस्थ और सुखी बनायें। हमें कवि की इन पंक्तियों से प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए।

कुर्सी ना देखो तुम वीरो की संतान हो
राम, भरत बन जाओ भारत देश महान हो।
मर्यादा का पालन, जीवन का आदर्श हो।
अपने शुचि कर्मो से गौरवन्वित भारतवर्ष हो
नौनिहाल भारत के तुम भारत की आस हो।
तुम्हीं तो भारत देश का भावी उज्जवल इतिहास हो।।

– जवाहर नगर, पटियायाला चौक
जौन्द (हरियाणा)

With Best Compliments From............

Cell : 9415051961
(O) : 0512-2332721

SWASTICK ENTERPRISE

-: Stockiest of :-

All kinds of Pipe Sprinker, H.D.P.E. Pipe, Sprinkler H.D.P.E. Fitting,
PVC Regid Pipes, Pipe Fittings, Malleable Fittings,
Mill Stores etc.

E-mail : swastick.1111@gmail.com

79/22, Latouche Road, Kanpur - 208 001(U.P.)

पंजाब केसरी लाला लाजपत राय

जिनके शोक में यूनियन जैक भी झुकाया गया

-रविचन्द्र गुप्ता

28 जनवरी 1865 को पंजाब के लुधियाना जिले के जगराव के पास धुरि नामक गांव में लाला लाजपत राय का जन्म हुआ। 17 वर्ष की आयु में जब यह आर्य समाज के सम्पर्क में आये तभी से इनकी प्रतिभा निखरती चली गई। 20 वर्ष कि आयु में ही इस तेजस्वी बालक ने वकालत आरंभ कर दी। हिसार से फिर लाहौर आ गये। 1888 कांग्रेस के प्रयोग अधिवेशन में भाग लिया। 19वीं सदी के अन्त में भयंकर अकाल से पीड़ित देशवासियों की तन, मन व धन से सहायता की।

लाला जी स्वामी दयानन्द के परम भक्त थे एवं 'आर्य समाज' के अनुयायी व स्तंभ थे। उन्होंने सन् 1924 में अखिल भारतीय अछूतोद्वार कमेटी कि स्थापना की। लाला जी द्वारा प्रतिपादित स्त्री– शिक्षा, पर्दा–प्रथा उन्मूलन, विधवा विवाह, अनाथ उद्वार जैसे समाज सेवा के कार्यो को राष्ट्र भुला नही सकता। आर्य समाज के प्लेट फार्म से जब लाला जी की सिंह गर्जना होती थी, तो ब्रिटिश सरकार भी कम्पायमान हो जाती थी।

1905 में ब्रिटिश सरकार ने बंगाल का विभाजन कर दिया। सारे देश में इसका विरोध हुआ। लाला जी ने पंजाब में बंग–भंग के विरोध का नेतृत्व किया एवं स्थान–स्थान पर कड़े शब्दों में सरकार कि भर्त्सना की। अतः 9 मई 1907 ई0 को इन्हें तथा सरदार भगत सिंह के चाचा अजीत सिंह को गिरफ्तार करके वर्मा की माण्डले जेल में बंद कर दिया गया। इन दोनो की गिरफ्तारी ने सारे देश में आग में घी की चिंगारी का काम किया। सरकार का इतना जबरदस्त विरोध हुआ कि सरकार भयभीत हो उठी ओर इन्हें रिहा करना पड़ा। इस अवसर एक प्रकार से त्रिमूर्ति का संगम हुआ। महाराष्ट्र के श्री बाल गंगाधर तिलक, बंगाल के श्री विपिन चन्द्र पाल और पंजाब के श्री लाला लाजपत राय। यह तीनों की जोड़ी सारे देश में लाल–बाल–पाल के नाम से विख्यात हुई। तीनो के ही विचार और भाषा क्रान्तिकारी थी। तीनों ने ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध संघर्ष का बिगुल बजा दिया।

सन् 1908 में लाला जी को इंग्लैण्ड जाना पड़ा। यहाँ भी इन्होने अपने ओजस्वी भाषणों से भारत में अंग्रेजों द्वारा किये जा रहे अमानुषिक अत्याचारों की पोल खोली। इंग्लैण्ड में श्याम जी

कृष्ण वर्मा,मैडम कामा तथा वीर सावरकर पहले ही भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की ज्योति जलाये बैठे थे। यहाँ इनसे लाला जी ने भविष्य के संग्राम के रूपरेखा पर विचार किया। कुछ समय बाद यह स्वदेश लौट आये।

लाला जी स्वदेश लौटे तो इन्होने देश के हिन्दुओं में स्वाभिमान की भावना जागृत करने हेतु 1910 में हिन्दू महासभा का गठन किया। 1913 में यह पुनः विदेश यात्रा पर चले गये। अमरीका पहुँच कर अपने भाषणों से यहां की जनता के सम्मुख अंग्रेजी सरकार द्वारा भारतीयों पर किये जा रहे अत्याचारों का कोरा चिट्ठा खोला। प्रथम महायुद्ध आरंभ हो गया था। ब्रिटिश सरकार उनके ओजस्वी भाषणों से बहुत घबराई हुई थी। अतः इनके भारत प्रवेश पर पाबंदी लगा दी। पांच वर्षो तक इन्हें अमेरिका में रहना पड़ा। यहाँ रहकर भी इन्होनें क्रान्ति की मशाल को धीमा नहीं होने दिया। इण्डिया होम रूल लीग की स्थापना की। इस दौरान इन्होने अनेक ग्रंथ लिखे। दी आर्य समाज, इंग्लैण्ड डेट टु इण्डिया तथा यंग इण्डिया। इनके द्वारा लिखी गई तरूण भारत ब्रिटिश सरकार द्वारा जब्त कर ली गई।

सन् 1920 में असहयोग आन्दोलन के फलस्वरूप अंग्रेजी स्कूल–कॉलेजों का बहिष्कार किया गया। तभी इन्होंने लाहौर में नेशनल कॉलेज तथा तिलक स्कूल ऑफ पॉलिटिक्स की स्थापना की। सरकार ने लाहौर में विक्टोरिया की मूर्ति स्थापित करने का निश्चय कर लिया था। इन्होंने इसका डटकर विरोध किया। सरकार को अपना इरादा बदलना पड़ा पर इन्हें डेढ़ वर्ष के लिये कारावास में डाल दिया गया। लेकिन जनाक्रोश से बचने के लिये इन्हें रिहा कर दिया गया। जेल से रिहा होते ही सन् 1921 से 9 नवम्बरं को सर्वेन्ट आफ दि पिपुल सोसायटी (लोक सेवा मण्डल) की स्थापना कर दी। यद्यपि इसका उद्घाटन अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी से कराया लेकिन इसमें भाई परमानन्द, सरदार भगत सिंह, सुखदेव, जयपाल व भगवती चरण वर्मा जैसे क्रान्तिकारियों को देश भक्ति का पाठ पढ़ाया जाता था। लाल बहादुर शास्त्री, राजर्षि पुरूषोत्तम दास टंडन भी इस मंडल के सदस्य थे।

अंग्रेज शासन के विरूद्ध क्रान्ति की मशाल को ज्वलित किये जाने के उद्देश्य से ही लाला जी ने दि पिपुल, यंग इण्डिया, अंग्रेजी में और वेदमातरम्, ऊर्दू पत्रो का प्रकाशन आरंभ किया। वंदेमातरम् पत्र जनता में जागृति लाने का सशक्त माध्यम बना। इसी समाचार–पत्र में इन्होंने अपने क्रान्तिकारी विचारों की व्याख्या करते हुये लिखा – मेरा मजहब हकपरस्ती है, मेरी मिल्लत कोम परस्ती है, मेरी इबादत खलक परस्ती है, मेरी अदालत मेरा अन्तःकरण है, मेरा मन्दिर मेरा

दिल है और मेरी उमंगे सदा जवान हैं।

1928 में ब्रिटिश सरकार ने सर जान साइमन की अध्यक्षता में भारत की राजनैतिक स्थिति कि समीक्षा हेतु एक कमीशन भारत भेजा। कमीशन के लाहौर आने पर इनके विरोध जुलूस का नेतृत्व लाला जी ने किया। साईमन कमीशन वापस जाओ और वंदे मातरम् की ध्वनियों के साथ जुलूस जैसे ही आगे बढ़ा कि स्काट ने लाठी चार्ज का हुक्म दे दिया।

भीड़ पर लाठियां बरसनी आरंभ हुई। लाला जी जुलूस में सबसे आगे थे। अतः लाला जी के वक्षस्थल पर लाठियों के प्रहार–पर प्रहार होने लगे। लेकिन वाह रे! भारत माँ के सच्चे सपूत! मौत के आगे भी पीठ नहीं दिखाई। बुढ़ापे का शरीर कहाँ तक वार सहता? लहू लुहान होकर गिर पड़े गिरने के बाद भी डाक्टर सत्यपाल ने लाला जी के ऊपर के लाठियों का प्रहार अपने ऊपर ले लिये। डा0 गोपी चन्द्र ने, डॉ0 सत्यपाल के ऊपर के वारो को झेला। चारों ओर भगदड़ मच गई। सैकड़ो लोगों को चोटें आई। लेकिन लाला जी को चोट गहरी थी। अतः सब अपनी चिन्ता छोड़ लाला जी को उठाने लगे। लाला जी को घटनास्थल से हटा कर अलग ले जाया गया। सभी लोग चिंतित थे। लाला जी कि हालत देखकर कुछ लोगो के नेत्रों में अश्रु फूट पड़े। तभी लाला जी ने उन्हें सात्वना देते हुये जो शब्द कहे वह शब्द भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास के पन्नों में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है आज मेरे शरीर पर किये गये लाठी प्रहार से गिरी लहू की एक–एक बूंद ब्रिटिश साम्राज्य के कफन की कील साबित होगी। लाला जी की दशा चिंताजनक हो गई। इन्हें तुरन्त हॉस्पिटल ले जाया गया। यह चोट तो लाला जी के शरीर पर पड़ी थी लेकिन केवल लाहौर वासी ही नहीं सारे देशवासियों का हृदय हताहत था। लाला जी भारतवासियों के आंखो के नूर बन चुके थे। भीड़ चारों ओर से अस्पताल की ओर उमड़ी चली आ रही थी। अस्पताल के बाहर जनता का ज्वार हिलोंरे ले रहा था। सबकी आंखे लाला जी के स्वास्थ्य के समाचारों पर लगी थी। सभी लाला जी के दर्शनों के लिये व्याकुल थे। नारों की आवाज से लाला जी को बाहर को भीड़ के सम्मुख लाया गया। जब कहीं जनता दर्शनों के बाद अपने घर लौटी। लाठी प्रहार के 17 दिन पश्चात 17 नवम्बर 1928 को लाला जी सबको बिलखता छोड़ इस संसार से सदा के लिये विदा हो गये।

लाला जी जैसे महान राष्ट्रीय नेता का ब्रिटिश सरकार द्वारा बर्बरता पूर्वक लाठी प्रहार से देहान्त हो जाना कोई साधारण घटना नहीं थी। सारा भारत बिलबिला उठा था। देशबन्धु चितरंजन दास की अर्द्धांगिनी श्रीमती बासंती देवी ने कलकत्ता के मैदान में भरी सभा में नौजवानों

को ललकारा क्या देश में मानवता और जवानी अभी बाकी है?...... लाला जी की चिता की राख ठण्डी होने से पूर्व ही देश महान राष्ट्रीय अपमान का जवाब चाहता है और एक माह बाद ही सरदार भगत सिंह और उनके साथियों ने इस महान राष्ट्रीय अपमान का बदला ले लिया। लाला जी के हत्यारे स्काट के भुलावे में साण्डर्स की 17 दिसम्बर 1928 को पुलिस मुख्यालय के सम्मुख ही दिन दहाड़े गोली मार कर हत्या कर दी गई।

लाला जी के निधन का समाचार से सारा देश शोक में डूब गया। लाहौर में सीनियर जज जस्टिस फ्लोर्ड ने लाला जी के शोक में एक दिन हाईकोर्ट बंद रखी। सरकार एवं अर्द्धसरकारी स्कूल व कालेज बंद रहे। इस नर पुंगव के लिये यूनियन जैक भी आधा झुका दिया गया।

फ्रांस के तत्वेता रोमां रोला कि लाला जी के बारे में निम्न टिप्पणी सार्थक ही है–

"have always thought that if Dayannd Saraswati lived in our time he would have thrilled with joy at recognizing in Lajpat Rai the Arya Saamaj, the warrier, the knight without feare and with out Reproach."

– 32, शिवालिक ,अपार्टमेंट्स, दिल्ली– 34

With Best Compliments From........

अनवरत 33 वर्षों से सेवा में तत्पर

: 0512-2344015 (S)
: 9415044513, 9415131434
: 9335995773

Swastick Sales Corporation

80/86, Latouche Road, Kanpur - 208 001(U.P.)

-: Stockiest of :-

All Kinds of Steel Pipes, PVC Rigid Pipes, Pipe Fittings,
G.M. Fittings & PVC Fittings Hardware
& Mill Stores Etc.

आर्य समाज

-श्री रामधारी सिंह 'दिनकर'

स्वाभिमान का उदय–

सत्यार्थ–प्रकाश के एकादश समुल्लास में स्वामी दयानन्द ने ब्राह्म–समाज और प्रार्थना समाज के विषय में निम्नलिखित बातें लिखी हैं–

"जो कुछ ब्राह्म–समाज और प्रार्थना– समाजियों ने ईसाई मत में मिलने से थोड़े मनुष्यों को बचाया और कुछ–कुछ पाषाणादि मूर्ति–पूजा को हटाया, अन्य जालग्रन्थों के फन्दों से भी बचाये इत्यादि अच्छी बातें हैं। परन्तु इन लोगों में स्वदेश–भक्ति बहुत न्यून हैं ईसाइयों के आचरण बहुत–से लिये है। खान–पान, विवाहादि के नियम भी बदल दिये हैं। अपने देश की प्रशंसा ओर पूर्वजों की बड़ाई करनी तो दूर रही, उसके बदले पेट भर निन्दा करते हैं व्याख्यानों में ईसाई आदि अंग्रेजों की प्रशंसा भर पेट करते हैं। ब्रह्मादि महर्षियों का नाम भी नहीं लेते। प्रत्युत, ऐसा कहते है कि बिना अंग्रेजों के सृष्टि में आज पर्यन्त कोई विद्वान् नहीं हुआ। आर्यावर्ती लोग सदा से मूर्ख चले आये हैं। वेदादिकों की प्रतिष्ठा तो दूर रही, परन्तु निन्दा करने से भी पृथक् नही रहते, ब्राह्म–समाज के उद्देश्य के पुस्तक में साधुओं की संख्या में ईसा, मूसा, मुहम्मद, नानक और चैतन्य लिखे हैं। किसी ऋर्षि–महर्षि का नाम भी नही लिखा।"

केशवचन्द्र और रानाडे की तुलना में दयानन्द वैसे ही दीखते हैं, जैसे गोखले की तुलना में तिलक। जैसे राजनीति के क्षेत्र में हमारी राष्ट्रीयता का सामरिक तेज, पहले पहल, तिलक में प्रत्यक्ष हुआ, वैसे ही संस्कृति के क्षेत्र में भारत का आत्माभिमान स्वामी दयानन्द में निखरा। ब्रह्म–समाज और प्रार्थना–समाज के नेता अपने धर्म और समाज में सुधार तो ला रहे थे, किन्तु उन्हें बराबर यह खेद सता रहा था कि हम जो कुछ कर रहे हैं, वह विदेश की नकल है। अपनी हीनता और विदेशियों की श्रेष्ठता के ज्ञान से उनकी आत्मा, कहीं–न–कहीं दबी हुई थी। अतएव, कार्य तो, प्रायः उनके भी वैसे ही रहे, जैसे स्वामी दयानन्द के किन्तु आत्महीनता के भाव से अवगत रहने के कारण वे दर्प से नहीं बोल सके। यह दर्प स्वामी दयानन्द में चमका। रूढ़ियों और गतानुगतिकता में फँस कर अपना विनाश करने के कारण उन्होंने भारतवासियों की कड़ी निन्दा की और उनसे कहा कि तुम्हारा धर्म पौराणिक संस्कारों की धूल में छिप गया हैं इन संस्कारों की गंदे पत्तो को तोड़ फेंको। तुम्हारा सच्चा धर्म वैदिक धर्म है, जिस पर आरूढ़ होने से तुम फिर से विश्व–विजयी हो सकते हो। किन्तु, इससे भी कड़ी फटकार उन्होंने ईसाइयों पर और मुसलमानों

पर भेजी, जो दिन–दहाड़े हिन्दुत्व की निन्दा करते फिरते थे, ईसाई और मुस्लिम पुराणों में घुस कर उन्होंने इन धर्मो में भी वैसे ही दोष दिखला दिये जिनके कारण ईसाई और मुसलमान हिन्दुत्व की निन्दा करते थे। इससे दो बातें निकलीं। एक तो यह कि अपनी निन्दा सुन कर घबरायी हुई हिन्दू जनता को यह जानकर कुछ संतोष हुआ कि पौराणिकता के मामले में ईसाइयत और इस्लाम भी हिन्दुत्व से अच्छे नहीं है। दूसरी यह कि हिन्दुओं का ध्यान अपने धर्म के मूलरूप की ओर आकृष्ट हुआ एवं वे अपनी प्राचीन परम्परा के लिए गौरव का अनुभव करने लगे।

आक्रामकता की ओरः-

राममोहन और रानाडे ने हिन्दुत्व के पहले मोर्चे पर लड़ाई लड़ी थी जो रक्षा या बचाव का मोर्चा था। स्वामी दयानन्द ने आक्रामकता का थोड़ा–बहुत श्रीगणेश कर दिया, क्योकि वास्तविक रक्षा का उपाय तो आक्रमण की ही नीति है। सत्यार्थ–प्रकाश में जहाँ हिन्दुत्व के वैदिक रूप का गहन आख्यान है, वहाँ उसमें ईसाइयत और इस्लाम की आलोचना पर भी अलग–अलग दो समुल्लास हैं। अब तक हिन्दुत्व की निन्दा करने वाले लोग निश्चिन्त थे कि हिन्दू अपना सुधार भले करता हो, किन्तु बदले में हमारी निन्दा करने का उसे साहस नहीं होगा। किन्तु, इस मेधावी एवं योद्धा सन्यासी ने उनकी आशा पर पानी फेर दिया। यही नहीं, प्रत्युत, जो बात राममोहन, केशवचन्द्र और रानाडे के ध्यान में भी नहीं आयी थी, उस बात को लेकर स्वामी दयानन्द के शिष्य आगे बढ़े और उन्होंने घोषणा की कि धर्मच्युत हिन्दू प्रत्येक अवस्था में अपने धर्म में वापस आ सकता है एवं अहिन्दू भी यदि चाहें तो हिन्दू–धर्म में प्रवेश पा सकते हैं। यह केवल सुधार की वाणी नहीं थी, जागृत हिन्दुत्व का समर–नाद था। और सत्य ही, रणारूढ़ हिन्दुत्व के जैसे निर्भीक नेता स्वामी दयानन्द हुए वैसा और कोई नहीं हुआ।

इतिहास का क्रम कुछ ऐसा बना कि स्वामी दयानन्द की गिनती महाराण प्रताप, शिवाजी और गुरू गोविन्द की श्रेणी में की जाने लगी। किन्तु, स्वामी दयानन्द मुसलमानों के विरोधी नहीं थें स्वामीजी का जब स्वर्गवास हुआ, तब सुप्रसिद्ध मुस्लिम नेता सर सैयद अहमद खाँ ने जो संवेदना और शोक प्रकट किया, उससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि मुस्लिम जनता के बीच भी स्वामी जी का यथेष्ट आदर था। स्वामी जी के बाद आर्यसमाज और मुस्लिम–सम्प्रदाय के बीच का सम्बन्ध अच्छा नहीं रहा, यह सत्य है; किन्तु स्वामी जी के जीवन–काल में ऐसी बात नहीं थी।

सच पूछिये तो स्वामी केवल इस्लाम के ही आलोचक नहीं थे, वे ईसाइयत और हिन्दुत्व के भी व अत्यन्त कड़े आलोचक हुए हैं। सत्यार्थ–प्रकाश के त्रयोदश समुल्लास में ईसाई मत की आलोचना है और चतुर्दश समुल्लास में इस्लाम की। किन्तु ग्यारहवें और बारहवें समुल्लासों में जो केवल हिन्दुत्व के ही विभिन्न अंगों की बख़िया उधेड़ी गयी है और कबीर, दादू, नानक, बुद्ध

तथा चार्वाक एवं जैनों और हिन्दुओं के अनेक पूज्य पौराणिक देवताओं में से एक भी बेदाग नहीं छूटा है। वल्लभाचार्य और कबीर पर तो स्वामीजी इतना बरसे है कि उनकी आलोचना पढ़ कर सहनशील लोगों की भी धीरता छूट जाती है। किन्तु, यह सब अवश्यम्भावी था। यूरोप के बुद्धिवाद ने भारत–वर्ष को इस प्रकार झकझोर डाला था कि हिन्दुत्व के बुद्धि सम्मत रूप को आगे लाये बिना कोई भी सुधारक भारतीय संस्कृति की रक्षा नहीं कर सकता था। स्वामीजी ने बुद्धिवाद की कसौटी बनायी और उसे हिन्दुत्व, इस्लाम और ईसाइयत पर निश्छल भाग से लागू कर दिया। परिणाम यह हुआ कि पौराणिक हिन्दुत्व तो इस कसौटी पर खंड–खंड हो ही गया, इस्लाम और ईसाइयत की भी सैकड़ों कमजोरियाँ लोगों के सामने आ गयीं।

किसी का भी पक्षपात नही :–

चूँकि ईसाइयत और इस्लाम हिन्दुत्व पर आक्रमण कर रहे थे, इसलिए हिन्दुत्व की ओर से बोलने वाला प्रत्यके व्यक्ति ईसाइयत या इस्लाम अथवा दोनों का द्रोही समझ लिया गया। किन्तु, इस प्रसंग से अलग हटने पर स्वामी दयानन्द विश्व–मानवता के नेता दीखते है। उनका उद्‌देश्य सभी मनुष्यों को उस दिशा में ले जाना था, जिसे वे सत्य की दिशा समझते थे। उन्होंने सत्यार्थ–प्रकाश की भूमिका में स्वयं लिखा है कि ''जो जो सब मतों मे सत्य बातें हैं, वे वे सब में अविरूद्ध होने से उनका स्वीकार करके जो जो यह मतान्तरों में मिथ्या बातें हैं, उन उन का खंडन किया है। इसमें यह भी अभिप्राय रखा है कि जब मत–मतान्तरों की गुप्त वा प्रकट बुरी बातों का प्रकाश कर विद्वान्–अविद्वान् सब साधारण मनुष्यों के समाने रखा है, जिससे सब से सबका विचार होकर परस्पर प्रेमी होके एक सत्य मतस्थ होवें यद्यपि मैं आर्यावर्त्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूँ, तथापि जैसे इस देश के मत'मतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न करके याथातथ्य प्रकाश करता हूँ, वैसे ही, दूसरे देशस्थ या मतोन्नति वालों के साथ भी वर्त्तता हूँ जैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में वर्तता हूँ वैसा विदेशियों के साथ भी तथा सब सज्जनों को भी बर्त्तना योग्य है। क्योंकि मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता, तो जैसे आजकल के लोग स्वमन की स्तुति, मंडन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्द करने में तत्पर होते हैं, वैसे मैं भी होता, परन्तु, ऐसी बातें मनष्यपन से बाहर हैं।'' अन्यत्र चौहदहवें समुल्लास के अन्त में भी स्वामीजी ने कहा है कि ''मेरा कोई नवीन कल्पना व मत–मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु, जो सत्य है, उसे मानना–मनवाना और जो असत्य है, उसे छोड़ना–छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त्त के प्रचलित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता। किन्तु, मैं आर्यवर्त्त व अन्य देशों में जो अधर्म–युक्त चाल–चलन हैं, उनको स्वीकार नहीं करता और जो धर्मयुक्त बातें हैं, उनका त्याग नहीं करता, न करना चाहता हूँ क्योकि ऐसा करना मनुष्य धर्म के

विरूद्ध है।''

सुधार नहीं, क्रान्ति :–

उन्नीसवीं सदीं के हिन्दु–नवोत्थन के इतिहास का पृष्ठ–पृष्ठ बतलाता है कि जब यूरोप वाले भारतवर्ष में आये, तब यहाँ के धर्म और संस्कृति पर रूढ़ि की पर्तें जमी हुई थीं एवं यूरोप के मुकाबले में उठने के लिए यह आवश्यक हो गया था कि पर्तें एकदम उखाड़ फेंकी जाएँ और हिन्दुत्व का वह रूप प्रकट किया जाय जो निर्मल और बुद्धिगम्य हो। स्वामीजी के मत से यह हिन्दुत्व वैदिक हिन्दुत्व ही हो सकता था किन्तु यह हिन्दुत्व पौराणिक कल्पनाओं के नीचे दबा हुआ था। उस पर अनेक स्मृतियों की धूल जम गयी थी एवं वेद के बाद के सहस्त्रों वर्षो में हिन्दुओं ने जो रूढ़ियाँ ओर अन्धविश्वास अर्जित किये थे उनके ढूहों के नीचे यह धर्म दबा पड़ा था। राममोहन राय, रानाडे, केशवचन्द्र ओर तिलक से भिन्न स्वामी दयानन्द की विशेषता रह रही कि उन्होंने धीरे–धीरे पपड़ियाँ तोड़ने का काम न करके, उन्हें एक ही चोट से साफ कर देने का निश्चय किया। **परिवर्तन जब धीरे–धीरे आता है, तब सुधार कहलाता है। किन्तु, वही जब तीव्र वेग से पहुँच जाता है, तब उसे क्रान्ति कहते हैं।** दयानन्द के अन्य समकालीन सुधारक केवल सुधारक मात्र थे, किन्तु दयानन्द क्रान्ति के वेग से आये और उन्होंने निश्छल भाव से यह घोषणा कर दी कि हिन्दू–धर्म–ग्रन्थों में केवल वेद ही मान्य हैं, अन्य शास्त्रों और पुराणों की बातें बुद्धि की कसौटी पर कसे बिना मानी नहीं जानी चाहिये। छह शास्त्रों और अठारह पुराणों को उन्होने एक ही झटके में साफ कर दिया। वेदों में मूर्तिपूजा, अवतारवाद, तीर्थो और अनेक पौराणिक अनुष्ठानो का समर्थन नहीं था, अतएव स्वामीजी ने इन सारे कृत्यों और विश्वासों को गलत घोषित किया।

वेद को छोड़ कर कोई अन्य धर्म–ग्रन्थ प्रमाण नहीं है, इस सत्य का प्रचार करने के लिए स्वामीजी ने सारे देश का दौरा करना आरम्भ किया और जहाँ –जहाँ वे गये, प्राचीन परम्परा के पंडित और विद्वान् उनसे हार मानते गये। संस्कृत भाषा का उन्हें अगाध ज्ञान था। संस्कृत में वे धारावाहिक रूप से बोलते थे। साथ ही, वे प्रचंड तार्किक थे। उन्होंने ईसाई और मुस्लिम धर्म–ग्रन्थों का भी भली–भाँति मन्थन किया था। अतएव, अकेले ही, उन्होंने तीन–तीन मोर्चों पर संघर्ष आरम्भ कर दिया। दो मोर्चे तो ईसाइयत और इस्लाम के थे, किन्तु तीसरा मोर्चा सनातन धर्मी हिन्दुओं का था, जिनसे जूझने में स्वामीजी को अनेक अपमान, कुत्सा, कलंक और कष्ट झेलने पड़े। अनेक प्रचंड शत्रु ईसाई और मुसलमान नहीं, सनातनी हिन्दू ही निकले और कहते हैं, अन्त में, इन्हीं हिन्दुओं के षड्यंत्र से उनका प्राणान्त भी हुआ। **दयानन्द ने बुद्धिवाद की जो मशाल जलायी थी, उसका कोई जवाब नहीं था। वे जो कुछ कह रहे थे, उसका उत्तर न तो**

मुसलमान दे सकते थे, न ईसाई, न पुराणों पर चलने वाले हिन्दू पंडित और विद्वान्। हिन्दू–नवोत्थान अब पूरे प्रकाश में आ गया था और अनेक समझदार लोग मन–ही–मन, यह अनुभव करने लगे थे कि सच ही, पौराणिक धर्म में कोई सार नहीं है।

आर्य–समाज की स्थापना :–

सन् 1872 ई. में स्वामीजी कलकत्ते पधारे। वहाँ देवेन्द्रनाथ ठाकुर और केशवचन्द्र सेन ने उनका बड़ा सत्कार किया। ब्रह्मसमाजियों से उनका विचार–विमर्श भी हुआ, किन्तु, ईसाइयत से प्रभावित ब्रह्म–समाजी विद्वान् पुनर्जन्म और वेद की प्रामाणिकता के विषय में स्वामीजी से एकमत नहीं हो सके। कहते हैं कलकत्तें में ही केशवचन्द्र सेन ने स्वामीजी को यह सलाह दी कि यदि आप संस्कृत छोड़कर हिन्दी में बोलना आरम्भ करें तो देश का असीम उपकार हो सकता है। तभी से स्वामी जी के व्याख्यानों की भाषा हिन्दी हो गयी और हिन्दी–प्रान्तों में अन्हें अगण्ति अनुयायी मिलने लगे। कलकत्ते से स्वामीजी बम्बई पधारे और वहीं 10 अप्रैल सन् 1875 ई. को उन्होंने आर्य–समाज की स्थापना की। बम्बई में उनके साथ प्रार्थना– समाजवालों ने भी विचार–विमर्श किया। किन्तु यह समाज तो ब्राह्म–समाज का ही बम्बई–संस्करण था। अतएव स्वामी जी से इस समाज के लोग भी एकमत नहीं हो सके।

बम्बई से लौटकर स्वामीजी दिल्ली आये। वहाँ उन्होंने सत्यानुसन्धान के लिए ईसाई, मुसलमान और हिन्दू पंडितों की एक सभा बुलायी। किन्तु, दो दिनों के विचार–विमर्श के बाद भी लोग किसी निष्कर्ष पर नहीं आ सके। दिल्ली से स्वामीजी पंजाब गये। पंजाब में उनके प्रति बहुत उत्साह जागृत हुआ और सारे प्रान्त में आर्य–समाज की शाखाएँ खुलने लगी। तभी से पंजाब आर्यसमाजिकों का प्रधान गढ़ रहा है।

थियोसोफी और स्वामी दयानन्द :–

जब थियोसोफिस्ट लोग भारत आये, तब थोड़े दिन उन लोगों ने भी आर्य–समाज से मिल कर काम किया। किन्तु, थियोसोफिस्टों की भी बहुत–सी बातें स्वामीजी के सिद्धान्तों के विपरीत पड़ती थी। अतएव, वे लोग भी आर्य–समाज से अलग हो गये। किन्तु, अलग होने पर भी स्वामी जी पर थियोसोफिस्टों की भक्ति ज्यों–की–त्यों बनी रही। स्वामीजी के देहावसान के बाद **मैडम ब्लेवास्की ने लिखा था कि– "जन–समूह के उबलते हुए क्रोध के सामने कोई संगमर्मर की मूर्त्ति भी स्वामी जी से अधिक अडिग नहीं हो सकती थी।** एक बार हमने उन्हें काम करते देखा था। उन्होंने अपने सभी विश्वासी अनुयायियों को यह कह कर अलग हटा दिया कि तुम्हें हमारी रक्षा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। भीड़ के सामने वे अकेले ही खड़े हो गये। लोग उतावले हो रहे थे, क्रुद्ध सिंह के समान वे स्वामीजी पर टूट पड़ने को तैयार थे। किन्तु, स्वामी जी

की धीरता, ज्यों–की– त्यों, बनी रही। ....यह बिल्कुल सही बात है कि शंकराचार्य के बाद से भारत में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ जो स्वामी जी से बड़ा संस्कृत, उनसे बड़ा दार्शनिक, उनसे अधिक तेजस्वी वक्ता तथा कुरीतियों पर टूट पड़ने में उनमें अधिक निर्भीक रहा हो।'' स्वामीजी की मृत्यु के बाद थियोसोफिस्ट अखबार ने उनकी प्रशंसा करते हुए लिखा था कि ''उन्होंने जर्जर हिन्दुत्व के गतिहीन ढूह पर भारी बम का प्रहार किया और अपने भाषणों से लोगो के हृदयों में ऋषियों और वेदों के लिए अपरिमित उत्साह की आग जला दी। सारे भारतवर्ष में उनके समान हिन्दी और संस्कृत का वक्ता दूसरा कोई और नहीं था।''

आर्य-समाज की विशेषता :-

कहा जाता है कि जैसे सिक्ख–धर्म, सनातन–धर्म का अरबी अनुवाद है, वैसे ही, आर्य–समाज भी इस्लाम की संस्कृत–टीका है। सिक्ख धर्म के विषय में यह उक्ति कुछ दूर तक सही समझी जा सकती है, किन्तु आर्य–समाज के विषय में यह कहाँ तक सत्य है, यह बताना कठिन है। स्वामीजी ने ईश्वर, जीव और प्रकृति, तीनों को अनादि माना है, किन्तु, यह तो इस्लाम से अधिक भारतीय योग–दर्शन का मत है। भिन्नता यह है कि स्वामीजी यह नही मानते कि भगवान् पापियों के पाप को क्षमा करते हैं बल्कि, भगवान् की कृपा के सहारे पाप करने की बात के लिए उन्होंने इस्लाम और ईसाइयत की बार–बार आलोचना की है। हाँ, जिन बुराईयों के कारण हिन्दू धर्म का ह्रास हो रहा था तथा अन्य धर्मो के लोग जिन दुर्बलताओं का लाभ उठा कर हिन्दुओं को ईसाई बना रहे थे, उन बुराइयों को स्वामीजी ने अवश्य दूर किया, जिससे हिन्दुओं के सामाजिक संगठन में वही दृढ़ता आ गयी जो इस्लाम में थी। स्वामीजी ने छूआछूत के विचार को अवैदिक बताया और उनके समाज ने सहस्त्रों अन्त्यजों को यज्ञोपवीत देकर उन्हें हिन्दुत्व के भीतर आदर का स्थान दिया। आर्य–समाज ने नारियों की मर्यादा में वृद्धि की एवं उनकी शिक्षा–संस्कृति का प्रचार करते हुए विधवा–विवाह का भी प्रचलन किया। कन्या शिक्षा और ब्रह्मचर्य का आर्य समाज ने इतना अधिक प्रचार किया कि हिन्दी प्रान्तों में साहित्य के भीतर एक प्रकार की पवित्रवादी भावना भर गयी और हिन्दी के कवि कामिनी नारी की कल्पना मात्र से घबराने लगे। पुरूष शिक्षित और स्वस्थ हों, नारियाँ शिक्षिता और सबला हों, लोग संस्कृत पढ़ें और हवन करें, कोई भी हिन्दू–मूर्त्ति पूजा का नाम न ले, न पुरोहितों, देवताओं और पंडो के फेर में पंड़े, ये उपदेश उन सभी प्रान्तो में कोई पचास साल तक गूँजते रहे, जहाँ आर्य–समाज का थोड़ा–बहुत भी प्रचार था।

यह विस्मय की बात है कि स्वामीजी ने संहिताओं को तो प्रमाण माना, किन्तु, उपनिषदों पर वही श्रद्धा नहीं दिखायी। वेद से उनका अभिप्राय केवल 'चार वेद (विद्या–धर्म–युक्त, ईश्वरप्रणीत संहिता, मंत्र–भाग) और चारों वेदो के ब्राह्मण, छह अंग, छह उपांग, चार उपवेद और 1127 वेदो

की शाखा'' से है। इसी प्रकार युग–युग से पूजित गीता को उन्होंने कोई महत्व नहीं दिया और कृष्ण, राम आदि को तो परम पुरूष माना ही नहीं। वर्णाश्रम का आधार उन्होंने गुण–कर्म को माना। उन्होंने 'देव' का अर्थ विद्वान् 'असुर' का अविद्वान् 'राक्षस' का पापी और 'पिशाच' का अन्तचारी माना। पुरूषार्थ को उन्होंने प्रारब्ध से बड़ा बताया तथा सुख–भोग को स्वर्ग तथा दुःख–भोग को नरक कहा। यह हिन्दू धर्म की बुद्धिवादी टीका थी। यह विज्ञान की कसौटी पर चढ़े हुए हिन्दुत्व का निखार था।

किन्तु स्वामीजी ने भी देश में एक नूतन अन्ध–विश्वास को जन्म दिया। उनके पूर्व भी वेद हिन्दुओं के पूज्य ग्रन्थ थे और आज भी वे पूज्य हैं किन्तु, पूज्य होने का अर्थ यह तो नही है कि वेद में त्रिकाल का ज्ञान समाहित है। स्वामीजी ने कहा है कि वेद में केवल धर्म की ही बातें नहीं है, उसमें विज्ञान का भी सारी बातें प्रच्छत्र है। पुराणो, शास्त्रों और स्मृतियों के पाश से मुक्त करके जनता को वेदों की ओर ले जाने का यह ढंग प्रशंसनीय अवश्य था, किन्तु वेदों को सभी ज्ञानों का कोष मान लेने से लोगों के ज्ञानोन्मेष में बाधा भी पड़ी। आश्चर्य की बात है कि श्री अरविन्द ने स्वामी दयानन्द का समर्थन ही नहीं किया है, प्रत्युत, यह भी शिकायत की है कि स्वामीजी ने वेदों के महत्व को घटा कर ही कहा है।''

आर्यवाद का एक दुष्परिणाम :-

उन्नीसवीं सदी के नवोत्थान से एक और बात निकली, जिसका कुफल देश को आज भी भोगना पड़ रहा है। जब इस्लाम और ईसाइयत से हिन्दुत्व संघर्ष कर रहा था, उस समय नेताओं, सुधारकों और पंडितों ने हिन्दुत्व की ओर से जो कुछ प्रमाण दिये, संस्कृत को लेकर दिये और यह ठीक भी था, क्योंकि सारे देश में फैले हुए हिन्दुत्व की भाषा संस्कृत थी। पीछे, जो यूरोपीय इतिहासकार भारत के अतीत का इतिहास तैयार करने लगे, उसमें भी मूल उद्धरणा संस्कृत से ही आये। किन्तु, स्वामी दयानन्द ने तो संस्कृत की सभी सामग्रियों को छोड़कर केवल वेदों को पकड़ा और उनके सभी अनुयायी भी वेदों की दुहाई देने लगे। परिणाम इसका यह हुआ कि वेद और आर्य भारत में ये दोनों सर्व प्रमुख हो उठे और इतिहास वालों में भी यह धारणा चल पड़ी कि भारत की सारी संस्कृति और सभ्यता वेद वालों अर्थात् आर्यो की रचना है। भारत में जो अनेक जातियों का समन्वय हुआ था, उसकी ओर उस समय किसी ने देखा भी नही। हिन्दू केवल उत्तर भारत में ही नहीं बसते थे और न यही कहने को कोई आधार था कि हिन्दुत्व की रचना में दक्षिण भारत का कोई योगदान नहीं है। फिर भी, स्वामीजी ने आर्यावर्त्त की जो सीमा बाँधी है, वह विन्ध्याचल पर समाप्त हो जाती है।' आर्य–आर्य कहने, वेद–वेद चिल्लाने तथा द्राविड़ भाषाओं में सन्निहित

हिन्दुत्व के उपकरणों से अनभिज्ञ रहने का ही यह परिणाम है कि आज दक्षिण भारत में आर्य–विरोधी आन्दोलन उठ खड़ा हुआ है। हिन्दू सारे भारत में बसते हैं तथा उनकी नसों में आर्य के साथ द्रविड़ रक्त भी प्रवाहित है। हिन्दुत्व के उपकरण केवल संस्कृत में ही नही, प्रत्युत, संस्कृत के ही समान प्राचीन भाषा तमिल में भी उपलब्ध हैं और दोनो भाषाओं में निहित उपकरणों को एकत्र किये बना हिन्दुत्व का पूरा चित्र नहीं बनाया जा सकता। इस सत्य पर यदि उत्तर के हिन्दू ध्यान देते तो दक्षिण के भाइयों को वह कदम उठाना नहीं पड़ता, जिसे वे आज उपेक्षा और क्षोभ से विचलित होकर उठा रहे हैं।

हिन्दुत्व की वीर भुजा :-

यह दोष चाहे जितना बड़ा हो, किन्तु, आर्य–समाज हिन्दुत्व की खड्गधर बाँह साबित हुआ। स्वामीजी के समय से लेकर, अभी हाल तक इस समाज ने सारे हिन्दी–प्रान्त को अपने प्रचार से औंट डाला आर्यसमाज के प्रभाव में आकर बहुत से हिन्दुओं ने मूर्ति पूजा छोड़ दी, बहुतों ने अपने घर के देवी–देवताओं की प्रतिमाओं को तोड़ कर बाहर फेंक दिया, बहुतों ने श्राद्ध की पद्धति बन्द कर दी और बहुतों ने पुरोहितों को अपने यहाँ से विदा कर दिया। जो विधिवत् आर्यसमाजी नहीं बने, शास्त्रों और पुराणों में उनका भी विश्वास हिल गया और वे भी मन–ही–मन शंका करने लगे कि राम और कृष्ण ईश्वर है या नहीं और पाषाणों की पूजा से मनुष्य को कोई लाभ हो सकता है या नहीं। आर्य–समाजियों ने जगह–जगह अपने उद्देश्यानुकूल विद्यालय स्थापित किये, जिनमें संस्कृत की विशेष रूप से पढ़ाई होती है और जहाँ के स्नातक स्वामी दयानन्द के उद्देश्यों के मूर्तिमान् रूप बन कर बाहर आते हैं। इन विद्यालयों में कन्या और युवक ब्रह्मचर्य वास भी करते है।

आगे चलकर आर्य–समाज ने शुद्धि और संगठन का भी प्रचार किया। सन् 1921 ई. में मोपला (मालाबार) मुसलमानों ने भयानक विद्रोह किया और उन्होंने पड़ोस के हिन्दुओं को जबर्दस्ती मुसलमान बना लिया। आर्य–समाज ने इस विपत्ति के समय संकट के सामने छाती खोली और कोई ढाई हजार भ्रष्ट परिवारों को फिर से हिन्दू बना लिया। इसी काण्ड के बाद आर्य–समाजियों ने राजस्थान के मलकाना राजपूतों की शुद्धि आरम्भ की, जिससे मुस्लिम सम्प्रदाय में क्षोभ उत्पन्न हुआ और लोग कहने लगे कि आर्य–समाजी मुसलमानों से शत्रुता कर रहे हैं शत्रुत्रा की इसमें कोई बात नहीं है। जब अन्य धर्मवालों को यह अधिकार है कि वे चाहें जितने हिन्दुओं को क्रिस्तान या मुसलमान बना सकते है, तब धर्म भ्रष्ट हिन्दुओं को फिर से हिन्दू

बना लेने में ऐसा क्या अन्याय है? किन्तु, आर्य–समाजियों के इस साहस से मुसलमान बहुत घबराये एवं भारतीय एकता का शकट कुछ पीछे की ओर लुढक गयां।

आर्य–समाजियों ने अपने साहस का दूसरा परिचय सन् 1937 ई. में दिया जब हैदराबाद की निजाम सरकार ने यह फरमान जारी किया था कि हैदराबाद राज्य में आर्य–समाज का प्रचार नहीं होने दिया जाएंगा। इस आज्ञा के विरूद्ध आर्य–समाजियों ने सत्याग्रह का शस्त्र निकाला और एक–एक करके कोई बारह हजार आर्यसमाजी सत्याग्रही जेल चले गये।

ईसायत और इस्लाम के आक्रमणों से हिन्दुत्व की रक्षा करने में जिनती मुसीबतें आर्य–समाज ने झेली है, उतनी किसी और संस्था ने नही। सच पूछियें तो उत्तर भारत में हिन्दुओं को जगा कर उन्हें प्रगतिशील करने का सारा श्रेय आर्य–समाज को ही है। पंडित चमूपति ने सत्य ही कहा है कि– **'आर्य समाज के जन्म के समय हिन्दू कोरा फुसफसिया जीव था। उसके मेरूदंड की हड्डी थी ही नहीं। चाहे कोई उसे गाली दे, उसकी हँसी उड़ाये, उसके देवताओं की भर्त्सना करे या उसके धर्म पर कीचड़ उछाले, जिसे वह सदियों से मानता आ रहा है, फिर भी इन सारे अपमानों के सामने वह दाँत निपोर कर रह जाता था।** लोगो को यह उचित शंका हो सकती थी कि वह आदमी भी है या नहीं, इसे आवेश भी चढ़ता है या नहीं अथवा वह गुस्से में आकर प्रतिपक्षी की ओर घूर भी सकता है या नहीं। किन्तु आर्य–समाज के उदय के बाद, अविचल उदासीनता की यह मनोवृति विदा हो गयी। हिन्दुओं का धर्म एक बार फिर जगमगा उठा है। आज का हिन्दू अपने धर्म की निन्दा सुनकर चुप नहीं रह सकता। जरूरत हुई तो धर्म–रक्षार्थ वह अपने प्राण भी दे सकता है।'

("संस्कृति के चार अध्याय" पुस्तक से साभार)

☎ 0512-2328266

'वेद ज्योति' के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ :

संस्थापक स्व0 चन्द्रिका प्रसाद तिवारी

इन्दिरा निकेतन विद्यालय

274/1-A, रेल बाजार, कानपुर

प्रधानाचार्या
हेमा तिवारी

प्रबन्धक/सचिव
संजय कुमार तिवारी

With Best Compliments From

50th Year of Service

NMT

New Malik Transport Co. (Regd.)

Fleet Owner & Transport Contractors

H.O.: 241, Transport Nagar, Kanpur-23

Ph.: 2613000, 2605625

Fax : 0512-2614040, E-mail: nmtknp@sify.com

Booking Office :
Tel.: 2600610
Mo.: 9918800231

Delivery Office :
Tel.: 2644207
Mo.: 9918800230

Surat Office:
Godown No. K5&6, Bharat nagar, Bhatena, Surat.
Tel. No. : 0261-2918483,3106690 (M) 09374513202

Qts Service for Gorakhpur, Basti, Khalilabad, Siswabazar, Nautanwa, Anandnagar, Naugarh, Shohratgarh, Gonda, Domariaganj, Barahni, Lucknow Itwabzar, Hata, Pandrauna, Tamkohi Road, Fazil Nagar, Kasia, Ramkola, Kaptan Gan, Bansi, Deoria, Salempur and all important Stations of Eastern Uttar Pradesh

Direct Service From Surat to Kanpur, Gorakhpur Deoria, Khalilabad Varanasi and Allahabad Prompt Service for all above Stations

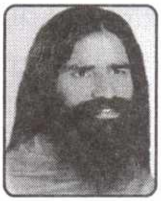

राष्ट्रहित में तीन माँगें

- बाबा रामदेव जी

"भ्रष्टाचार मिटाओं सत्याग्रह" में राजनैतिक लाभ–हानि से ऊपर उठकर श्रेय व प्रतिष्ठा आदि की परवाह किए बिना, भ्रष्टाचार मिटाने व कालाधन देश को दिलाने के लिए योगऋषि बाबा रामदेव जी द्वारा प्रस्तावित राष्ट्रहित में तीन मुद्दों व तीन माँगों पर सभी देशभक्त राष्ट्रवासियों का चिन्तन व समर्थन अपेक्षित है – सम्पा0

1. लगभग चार सौ लाख करोड़ रूपये का कालाधन जो राष्ट्रीय सम्पत्ति है यह देश को मिलना चाहिए।
2. सक्षम लोकपाल का कठोर कानून बनाकर भ्रष्टाचार पर पूर्ण अंकुश लगाना।
3. स्वतंत्र भारत में चल रहा विदेशी तंत्र (ब्रिटिश रूल) खत्म होना चाहिए जिससे कि सबको आर्थिक व सामाजिक न्याय मिले।

1\. गैर कानूनी तरीके व अनैतिक या अवैध रूप से अर्जित धन जो देश के बाहर व देश के आन्तरिक अर्थव्यवस्था में लगभग 400 लाख करोड़ रूपये के रूप में विद्यमान है इसे कालाधन की संज्ञा दी जाती है चाहे वह अवैध खनन, विकास के धन की चोरी, टैक्सचोरी अथवा रिश्वतखोरी करके लूटा हो, यह कालाधन यथार्थ में राष्ट्रीय सम्पत्ति है। अतः देश का यह कालाधन किसी भी कीमत पर देश को मिलना ही चाहिए।

(क) गैर–कानूनी तरीके से भारतीय नागरिकों को जो भी धन विदेशों में जमा है उसे सरकार बिना किसी विलम्ब के, बिना किसी भ्रामक तर्क–वितर्क के राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित करने हेतु कानून बनाए तथा अवैध रूप से विदेशों में धन जमा करने को राष्ट्र के विरूद्ध अपराध (देश द्रोह) घोषित किया जाए तथा भारतीय नगारिकों द्वारा विदेशों में चलाई जा रही आर्थिक अनियमितताओं को दूर करने के लिए एक स्वस्थ स्पष्ट व पारदर्शी (विदेशी खाता नीति) बनाये। विदेशों में अवैध रूप से लगभग 300 लाख करोड़ रूपये जमा करने वाले इन सभी अज्ञात–लोगों पर अमेरिका व जर्मनी की तरह कार्यवाही करके देश की सम्पत्ति देश को दिलवाए।

(ख) विदेशों मे अवैध रूप से जमा कालेधन को राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित करने के बाद भारत वापस लाने के लिए 2005 से लम्बित " यू.एन. कन्वेन्शन अगेस्ट करप्सन' का तुरन्त संसद में अनुमोदन करके यू.एन. भेजे जिससे कि 140 देशो से भारत का धन तुरन्त वापस लाया जा सके।

दुर्भाग्य से वर्तमान केन्द्र सरकार दूसरे देशों के साथ जो एग्रीमेन्ट व ट्रीटी करती है उसके लिए तो बहुत जोर लगा रही है परन्तु अपने देश में जो कार्य हमें तत्काल करना चाहिए उसमें वह तत्परता दिखाई नहीं देती है।

(ग) देश की आन्तरिक अर्थव्यवस्था में जमा कालेधन (अन्अकाउण्टिड मनी) को समाप्त करने हेतु करेंसी डिमोनोटाइज अथवा करेंसी रिकॉल के तहत सौ, पाँच सौ व हजार के बड़े नोट वापस लेने चाहिए। इससे एक साथ कई काम हो जायेंगे। कालेधन से ही सारे काले काम होते हैं अतः अवैध कार्यों को रोकना है तो तुरन्त बड़े नोट वापस ले लेने चाहिए। बड़े नोटो के रूप में जमा कालेधन से ही रिश्वतखेरी, आर्थिक भ्रष्टाचार, जमाखोरी व वायदा परिणामतः महंगाई, नकली मुद्रा व उसके परिणाम स्वरूप आतंकवाद, चुनावों में पैसे का दुरूपयोग से लेकर सट्टा आदि सारे अनैतिक व असंवैधनिक कार्यों में बड़ी मुद्रा की (अर्थात् 500 व 1000 रूपये के बड़े नोटो) की ही 99 प्रतिशत भूमिका होती है। सभी गलत कार्यो में आर्थिक लेन–देन बड़ी मुद्रा होता है। अतः विश्व के किसी भी देश में बड़ी मुद्रा नहीं है। कालेधन की अर्थव्यवस्था के बारे में बनी लगभग सभी 40 पार्लियामैन्ट्री कमेटीज व आयोगों का निर्विवादित रूप में यह मानना है कि आन्तरिक अर्थव्यवस्था के कालेधन को खत्म करने के लिए करेन्सी डिमोनाइज करना एक निर्विवादित व प्रभावशाली समाधान है। पहले भी भारत में तीन बार करेंन्सी रिकॉल हो चुका है लेकिन उस समय हमारी अर्थव्यवस्था मे बड़ी मुद्रा बेशुमार नहीं थी। विश्व के अन्य देशों में भी जैस–रूस, अमेरिका, जर्मनी आदि में समय–समय पर यह कार्य होता रहा है साथ ही किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में 2 से 3 प्रतिशत करेंन्सी नोट के रूप में होती है तथा मुद्रा बहुत बड़ी नहीं होती है फिर भारत में लगभग 20 प्रतिशत मनी इन सर्क्यूलेशन क्यों? भारत में 1935 में रिजर्व बैंक की स्थापना से पहले बड़ी मुद्रा प्रचलन में नही थी। आज भी विश्व के किसी भी देश में यूरो, डॉलर, पाउण्ड आदि के बड़े नोट नहीं है तथा भारत में जहाँ लगभग 84 करोड़ लोग मात्र 20 रूपये में जिन्दगी बसर करते हैं ऐसे देश में 500 व 1000 रूपये के बड़े नोटो का औचित्य ही क्या है। बड़ी मुद्रा होने से अवैध कार्यों को अंजाम देना अत्यन्त आसान होता है। क्योंकि किसी भी तरह के भ्रष्टाचार में धन का इस्तेमाल प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से (हीरे, सोना, भूमि व शेयर आदि के खरीदने में) होता ही है। इस गैर कानूनी आर्थिक लेन–देन में 99 प्रतिशत ट्राजेक्शन 100, 500 व 1000 रूपयें की मुद्रा का ही प्रयोग होता है। अतः एक बार बड़ी मुद्रा को पूरी तरह वापस लेने के बाद दोबारा बड़ी मुद्रा छापनी ही नहीं चाहिए इससे आन्तरिक अर्थव्यवस्था का अनअकाउण्टिड मनी तथा 90 से 99 प्रतिशत अवैध कार्यो पर नियन्त्रण स्वतः आ जायेगा।

नोटः– दुर्भाग्य से हम जिसे कालाधन कहते है, वहीं कालाधन स्विट्जरलैण्ड आदि 70 टैक्स हैवन्स देशों के बैंको में जमा हो जाता है और अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस व इटली आदि में वह कालाधन एक्सट्रनल डैट अथवा फॉरेन इन्वैस्टमैन्ट के रूप में पहुँच जाता है तथा भारत में भी वही कालाधन जब मॉरीशस रूट से आता है तो वही अनैतिक रूप से अर्जित धन अपने देश में भी फॉरेन इन्वैस्टमैन्ट के रूप में वापस आ रहा है।

उदाहरण के रूप में– यूरोप के कुछ देशों पर ऋण की स्थिति इस प्रकार हैः–

बाहर के देशों से लिया हुआ ऋण

अमेरिका– 14.39 ट्रिलियन डॉलर, 647.55 लाख करोड़ रूपये। **जर्मनी**– 4.7 ट्रिलियन डॉलर, 212.8 लाख करोड़ रूपये। **फ्रांस**– 4.69 ट्रिलियन डॉलर, 211.1 लाख करोड़ रूपये। **इंग्लैण्ड**– 8.98 ट्रिलियन डॉलर, 404.1 लाख करोड़ रूपये। **इटली**– 2.22 ट्रिलियन डॉलर, 100.3 लाख करोड़ रूपये। **स्पेन**– 2.16 ट्रिलियन डॉलर, 97.2 लाख करोड़ रूपये। **हॉलैण्ड**– 2.34 ट्रिलियन डॉलर, 100.35 लाख करोड़ रूपये। **आयरलैण्ड**– 2.13 ट्रिलियन डॉलर, 95.85 लाख करोड़ रूपये। **लग्जम्बवर्ग**– 1.89 ट्रिलियन डॉलर, 85.5 लाख करोड़ रूपये।

देश के अन्दर से लिया हुआ ऋण :

अमेरिका– 8.62 ट्रिलियन डॉलर, 388.29 लाख करोड़ रूपये। **जर्मनी**– 2.60 ट्रिलियन डॉलर, 117.37 लाख करोड़ रूपये। **फ्रांस**– 2.15 ट्रिलियन डॉलर, 96.9 लाख करोड़ रूपये। **इंग्लैण्ड**–1.71 ट्रिलियन डॉलर, 77.11 लाख करोड़ रूपये। **इटली** – 2.42 ट्रिलियन डॉलर, 108.9 लाख करोड़ रूपये। **स्पेन** – 0.887 ट्रिलियन डॉलर, 39.94 लाख करोड़ रूपये। **हॉलैण्ड** – 506.0 ट्रिलियन डॉलर, 22.75 लाख करोड़ रूपये। **आयरलैण्ड**–192.41 ट्रिलियन डॉलर, 8.64 लाख करोड़ रूपये। **नार्वे**– 197.69 ट्रिलियन डॉलर, 8.88 लाख करोड़ रूपये। **लग्जम्बवर्ग**– 8. 49 ट्रिलियन डॉलर, 380.7 लाख करोड़ रूपये।

इस प्रकार लगभग इस 2 हजार लाख करोड़ रूपये में ही भारत का 300 से 400 लाख करोड़ कालाधन तथा देश की आन्तरिक व्यवस्था में भी लगभग 100 लाख करोड़ रूपये कालाधन विद्यमान है। इससे बड़ी दुःखद घटना, आश्चर्य, अन्याय और क्या होगा कि भारत व एशिया के अन्य देशों के कालेधन से यूरोप के देश विकास व विलासिता करें तथा भारत व एशिया के लोग भूखों मरें। यह कितनी शर्म, आश्चर्य व अन्यायपूर्ण बात है। यह पाप तुरन्त बन्द होना चाहिए। भारत में गरीबी के कारण भूख व कुपोषण से मरने वालों की संख्या ग्लोबल हंगर रिपोर्ट के अनुसार

प्रतिदिन एक मिनट में 13, एक घण्टें में 883 और एक दिन में 20,000 है।

जिस दिन भारत से भ्रष्टाचार खत्म हो जायेगा तथा देश का लूटा हुआ धन वापस मिल जायेगा उस दिन भारत की अर्थव्यवस्था व मुद्रा इतनी मजबूत होगी कि 1 रूपये की कीमत 50 डॉलर के बराबर होगी तथा भारत विश्व की सबसे बड़ी आर्थिक महाशक्ति होगा। आज भी भ्रष्ट व्यवस्था एवं भ्रष्टाचार के बावजूद दुनिया के अन्य देशों की तुलना में भारत पर बाहर के देशों का लिया गया ऋण मात्र 0.237 ट्रिलियन डॉलर, 10.66 लाख करोड़ रूपये तथा आन्तरिक ऋण मात्र 0.855 ट्रिलियन डॉलर, 38.48 लाख करोड़ रूपये है। भारत के बाद भ्रष्टाचार व कालेधन की अर्थव्यवस्था को मिटाने का अभियान अन्य एशिया के देशों में भी स्वतः ही चल पड़ेगा तथा भारत व एशिया का उत्थान तथा यूरोप का पतन होगा।

2. एक निष्पक्ष, स्वायत्त एवं सक्षम लोकपाल बिल बनाना चाहिए तथा उसके ड्राफ्ट में तीन बातें मुख्यरूप से अवश्य समाहित होनी चाहिए। तथा उसी स्वरूप में उसे संसद में पारित करना चाहिए। पहली बात लोकपाल को, सभी संवैधानिक पदों पर बैठे लोगों पर असंवैधानिक कार्य करने पर कार्यवाही करने का अधिकार होना चाहिए। दूसरी बात–देश का कोई भी नागरिक देश में किसी स्तर पर भ्रष्टाचार देखता है तो उसके खिलाफ वह एफ.आई.आर. कर सके, इसके लिए विशेषाधिकार बाधा न बनें और शिकायत यदि तथ्य, सत्य व प्रमाणों पर आधारित हो तो उस पर लोकपाल कार्यवाही कर सके। तीसरी अत्यन्त महत्वपूर्ण बात–फास्टट्रैक कोर्ट एवं पारदर्शी व्यवस्था के तहत जब भ्रष्टाचार प्रमाणित हो जाये तो सम्बन्धित व्यक्ति की सम्पत्ति जब्त होनी चाहिए तथा लूटे हुए धन की वसूली होनी चाहिए तथा अपराध के अनुसार छोटे दण्डो के साथ–साथ आजीवन कारावास से लेकर सैकड़ो हजारों व लोखों करोड़ रूपये के घोटाले करने वाले को मृत्युदण्ड की सख्त सजा होनी चाहिए। दण्ड व्यव्स्था इतनी कठोर होनी चाहिए कि देश में लालच से भ्रष्टाचार करने का कोई भी बुरा व्यक्ति साहस न कर पाये भ्रष्टाचारियों को जब तक मृत्युदण्ड का भय नहीं होगा तब तक वे इससे बाज आने वाले नहीं है। क्योंकि भ्रष्टाचार दो ही बातों से रूक सकता है। (1) कठोर दण्ड व्यवस्थ, (2) उच्च नैतिक मूल्य व संस्कारयुक्त आदर्श जीवन।

3. अंग्रेजों के जमाने से चल रही विदेशी व्यवस्थाओं के स्थान पर तुरन्त स्वदेशी शासन व्यवस्था को लागू करना चाहिए। महात्मा गाँधी जी ने बार–बार 'हिन्द स्वराज' नामक पुस्तक से लेकर अपने सम्पूर्ण साहित्य में इस बात को दोहराया था कि देश आजाद होने के बाद हमें विदेशी तन्त्र अथवा अंग्रेजी तन्त्र के स्थान पर स्वदेशी तन्त्र को लागू करना होगा।

(क) 1894 के बने भूमि अधिग्रहण एक्ट के तहत देश के अन्नदाता भूमिपुत्र किसान का शोषण क्यों? इस कानून में तुरन्त संशोधन होना चाहिए। जी.एम. फूड को पूर्णतः प्रतिबन्धित करके तथा विषमुक्त कृषि की नीति को अपनाकर सम्पूर्ण देशवासियों को स्वस्थ आहार उपलब्ध कराने की जैविक खेती की व्यवस्था करनी चाहिए।

(ख) भाषा के नाम पर देश के 99 प्रतिशत आम लोगों के साथ अन्याय क्यो? जापान, जर्मनी, फ्रांस, चीन व एशिया आदि सभी सभ्य देश अपने नागरिकों का अपने देश की भाषा में शिक्षा देते हैं, भारतीय नागरिकों को विदेशी भाषा में शिक्षा देकर स्वदेशी भाषा राष्ट्रीय भाषा एवं भारतीय भाषाओं का अपमान क्यों? तकनीकी व विज्ञान भाषा में नहीं अपितु मस्तिष्क में होता है और भारतीय मेधाशक्ति विश्व में सर्वश्रेष्ठ है। उच्च तकनीकी शिक्षा, उच्च, उच्चतम न्यायलायों में भारतीय भाषा ही होनी चाहिए। स्वदेशी भाषा में शिक्षा व्यवस्था होने पर गरीब, मजदूर, किसान व आम लोगों के बच्चे भी डॉक्टर, इंजीनियर, साइन्टिस्ट, आई.ए.एस. ऑफिसर बन सकेंगे साथ ही सबका समान शिक्षा का अधिकार होना चाहिए। शिक्षा व चिकित्सा के नाम पर पक्षपात व अन्याय लोकतन्त्र के नाम पर कलंक है।

(ग) आजादी के 64 वर्षो के बाद भी टी.बी. मैकाले द्वारा निर्धारित संस्कार एवं आध्यात्मिक मूल्यों से रहित शिक्षा व्यवस्था, भूमि अधिग्रहण कानून से लेकर सभी 34735 कानून व्यवस्था अंग्रेजों के बनाये कानूनों के आधार पर चल रही है। जो कानून अंग्रेजो ने हमारा शोषण करने हमें गुलाम बनाने व हम पर अत्याचार करने के लिए बनाये थे वे कानून आजाद भारत में लगाकर न्याय के नाम पर अन्याय क्यों कर रहें हैं?

(घ) भारत ने दुनिया को सबसे पहली संस्कृति सभ्यता व भाषा दी। कला संगीत व साहित्य से लेकर गणित (मैथमैटिक्स) फिजिक्स, कैमिस्ट्री, माइक्रो–बायोलॉजी से लेकर भूगर्भ विद्या, अन्तरिक्ष विद्या, सूर्यग्रहण व चन्द्रग्रहण आदि के बारे में सबसे पहले हमने दुनिया को शिक्षा व्यवस्था, चिकित्सा व्यवस्था, कानून व्यवस्था, अर्थव्यवस्था, शासन व्यवस्था से लेकर आदर्श समाज व्यवस्था का दर्शन पूरी दुनिया को दिया। विकेन्द्रित विकासवाद व आध्यत्मिक समाजवाद का एक समग्र विकास का आदर्श दर्शन था हमारा, जिसमें सबकों आर्थिक व सामाजिक न्याय की व्यवस्था है तो फिर विकास के नाम पर कभी एशिया व कभी अमेरिका अथवा पश्चिम का अन्धानुकरण क्यों?

(ङ) यद्यपि लोकतांत्रिक शासन प्रणाली विश्व की श्रेष्ठ व्यवस्था है तथापि इसमें अच्छाई के साथ–साथ कुछ खामियाँ भी हैं। यदि हमारी दोषपूर्ण शासन व्यवस्था नहीं होती तो देश के साथ

इतना बड़ा धोखा नहीं होता। देश की यह दुर्दशा व चारों तरफ भ्रष्टाचार नहीं होता। अतः लोकतंत्र को षड्यंत्र करके जो लोग लूटतंत्र व भ्रष्टतंत्र बना रहे हैं उससे देश को बचाने के लिए चुनाव व्यवस्था में संशोधन बहुत ही जरूरी है। उसमें स्टेट फण्डिग ऑफ इलेक्शन, अनिवार्य मतदान एवं प्रधानमंत्री के निर्वाचन की जनता द्वारा सीधे चुनाव की व्यवस्था होनी चाहिए इससे निष्कलंक व योग्य व्यक्तियों को राजनीति में स्थान मिल पायेगा और एक मजबूत लोकतंत्र व आदर्श संसद का निर्माण होगा। यहाँ एक बात हम पूरी तरह सुस्पष्ट करना चाहते हैं कि हम डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर जी के द्वारा निर्मित संविधान को नहीं बदलना चाहते, हम तो क्रूर अंग्रेजों द्वारा बनाये गये कुछ कालेधन व ब्रिटिश सिस्टम को बदलना चाहते है। उदाहरण के तौर पर भूमि अधिग्रहण एक्ट बाबा साहेब ने नहीं बल्कि ब्रिटिश सरकार ने बनाया था, वर्तमान में चल रही अंग्रेजी शिक्षा पद्धति बाबा साहेब ने नहीं बल्कि टी.बी. मैकाले ने बनाई थी।

इस प्रकार निष्कर्ष के रूप में भारत के उपरोक्त तीन प्रकार के भ्रष्ट लोगों की तिकड़ी को नष्ट करना ही **''भ्रष्टाचार मिटाओं सत्याग्रह'** का उद्देश्य है।

With Best Compliments From............

Vijay Jain
09936496688

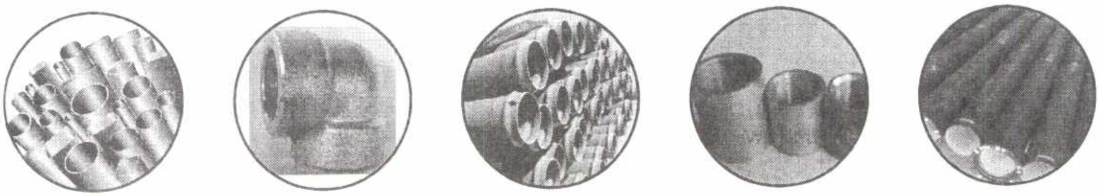

M/S. SHREE LAXMI TUBE

-: Authorised Distributer :-

VISION PIPE FITTINGS, APNA PIPE & WATER STORAGE TANKS

79/23, Latuche Road, Kanpur

धन की मादकता

- राम लखन आर्य
मन्त्री- आर्य समाज उद्योग नगर, शास्त्री नगर कानपुर महानगर

ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता वभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।। (ऋ० १०/१२/१३)

अर्थः हे सब प्रजा के स्वामी, आप से भिन्न दूसरा कोई उन इन सब उत्पन्न हुए जड़ चेतन आदि को नहीं तिरस्कार करता है अर्थात् आप सर्वोपरि हैं। जिस–जिस पदार्थ की कामना वाले होकर हम लोग आप का आश्रय लेवें, उस उस की कामना हमारी सिद्ध होवे, जिससे हम लोग धनैश्वर्यों के स्वामी होवें।

धन की निन्दा मै नहीं करता और न वेद करता है न हमारे दूसरे शास्त्र करते हैं। आप धन कमाना चाहते है तो अवश्य कमाइये।

शत हस्त समाहर, सहस्त्र हस्त संकिर

अर्थात् सौ हांथों से धन कमाओ और हजार हाथों से दान करो।

आज ही क्या किसी भी युग में धन के बिना मनुष्य का काम नहीं चलता। मनुष्य तो क्या भगवान नारायण भी लक्ष्मी के साथ रहते हैं, लोग नारायण का नाम लेने से पहले लक्ष्मी का नाम लेते हैं। नारायण जी महाराज को 'नारायण' कम लोग कहते हैं लक्ष्मी नारायण कहने वाले बहुत हैं।

एक दिन की बात है नारायण जी लक्ष्मी के साथ बैठे थे। दोनो में बाते हो रही थी।

नारायण बोले– "देखो प्यारी लक्ष्मी! दुनिया कितनी अच्छी है, प्रातः ही प्रातः मन्दिरों में शंख बजते है घड़ियालों की ध्वनि गूंजती है, मन्दिरों, मस्जिदों, गुरूद्वारा और दूसरे धर्म स्थानों में लोग मुझे याद करते हैं मेरे प्यार में पागल हुए जाते हैं घरों में बैठकर मेरी पूजा करते हैं बहुत अच्छे हो गये हैं दुनिया के लोग"

लक्ष्मी ने हँसते हुए कहा– "आप बहुत भोले हैं महाराज। बहुत भ्रम में हैं।

नारायण बोले– "भ्रम। कैसा भ्रम "?

लक्ष्मी ने कहा– "ये लोग आप को नहीं, मुझे याद करते हैं। आप के लिए नहीं मेरे लिये पागल हुए जाते हैं। उन्हें पता है कि मैं आपके साथ रहती हूँ। आप को ये लोग इस लिए बुलाते हैं कि यदि

आप उनके यहाँ पहुँचेंगे तो मैं भी पहुँच जाँऊगी, आपकी नहीं मेरी आवश्यकता है उन्हें।
नारायण बोले– ''यह तो गलत बात है। तुम मेरे भक्तों पर व्यर्थ का आरोप करती हो।''
लक्ष्मी ने हँसते हुए कहा– ''इतना भरोसा है अपने भक्तों पर तो इनकी परीक्षा कर लीजिए। आप ब्राह्मण का रूप धारण करें किसी ग्राम में जाइए जहाँ आप के भक्त बहुत हों, मैं वहाँ एक वृद्धा स्त्री बनकर आऊँगी, फिर देखिए क्या होता है"।

नारायण ने यह बात मान ली। ब्राह्मण का रूप बनाया– सिर पर सुन्दर बाल, चेहरे पर तेज आँखों मे चमक, होठों पर मुस्कान, कन्धे पर रेशमी चादर, गले में सुन्दर माला, कमर में लम्बी लॉग वाली धोती, चरणों में सुन्दर खड़ाऊँ, आवाज में मन को मोहने वाली मिठास, पहुँच गये एक बड़े नगर के अन्दर। ''नारायण! नारायण! नारायण! नारायण!" गाते हुए आगे बढ़े तो कितने ही लोगों ने हाथ जोड़कर कहा– ब्राह्मण – देवता! मेरे घर चलिए, ! आप थक गये होंगे, थोड़ा आराम कीजिए।''

नारायण जी एक सेठ के घर पहुँचे। सेठ ने बहुत प्यार से उन्हें खाना खिलाया। उनका स्वागत किया! बोला–आप परदेसी हैं,मेरे यहाँ रहिए, आप के सत्संग से मेरा घर पवित्र हो जाएगा। नारायण जी ने कहा– ''ऐसे ही सही हम वहीं रह लेगें"।
सेठ ने पूँछा – ''पण्डित जी आप कथा भी करते होंगे, नारायण जी ने कहा– हाँ! कथा भी करते है आप प्रबन्ध कीजिए, हम प्रति दिन कथा करेंगे ।
सेठ जी बोले– ''मैने एक बहुत बड़ी धर्मशाला बनवा रखी है, वहीं आप की कथा का प्रबन्ध करता हूँ। वहाँ बहुत जगह है हजारों लोग आप की कथा से लाभ उठा सकेगें। लो जी, हो गया प्रबन्ध, आरम्भ हुई कथा। पहले दिन लोग कुछ कम आये, दूसरे दिन उससे दुगना, तीसरे दिन उससे भी दुगने। चौथे दिन धर्मशाला में तिल रखने की जगह नहीं थी नारायण जी की आवाज में मन मोहिनी मिठास थी, कथा में मोहक शक्ति, सुनने वाले मोहित हो जाते, झूम उठते। कई दिन यह कथा चलती रही। लोग कथा के समय से दस पन्द्रह मिनट पहले ही धर्मशाला में इकट्ठा हो जाते, धर्मशाला का आँगन भर जाता कमरे भर जाते, बरामदे भर जाते, छतें भर जातीं, कथा का समय होते ही कोई भी अपने घर में रहना नहीं चाहता था। सब लोग धर्मशाला की तरफ भागते थे।

कई दिन बीत गये तो लक्ष्मी ने सोचा, अब मैं भी चलूँ, अपना रंग जमाऊं।

एक वृद्धा का रूप धारण किया, उन्होंने– एक निर्धन, निर्बलसी वृद्धा स्त्री, कमर झुकी हुई, चेहरे पर झुर्रियाँ, मैले से कपड़े हाथ में लाठी।

लाठी टेकते हुए वह एक मकान के द्वार पर पहुँची। घर की स्वामिनी द्वार से निकल कर धर्मशाला की ओर जाने की तैयारी में थी।

लक्ष्मी जी ने कहा– माँ, थोड़ा सा पानी पिला दो, बहुत प्यास लगी है, जान निकली जाती है।

घर की मालकिन क्रोध से बोली– ''अरी! तू कहाँ से आ मरी इस समय परे हट मुझे कथा में जाना है समय हो गया है, देर हुई तो वहाँ खड़े होने का स्थान भी नहीं मिलेगा।''

लक्ष्मी जी ने नम्रता से कहा– ''नहीं माँ। मुझे थोड़ा पानी अवश्य पिला दो। मैं मर जाऊँगी।

मालकिन क्रोध से बोली– ''कैसी आफत है, इधर कथा का समय हो गया है इधर यह आ मरी। अच्छा ठहर मै देती हूँ पानी'' और वह अन्दर से एक लोटे में पानी भर लायी, वृद्धा को देती हुई बोली– ''ले पी, जल्दी कर, मुझे कथा में पहुँचना है।

लक्ष्मी जी ने लोटा हाँथ में लिया, पानी पिया, पीकर कहा– "धन्यवाद तुम्हारा, लो अपना लोटा ले लो"।

मालकिन ने लोटा लिया तो उसे देखकर चकित होकर बोली– ''अरे! यह लोटा तो सोने का हो गया, मैंने तो पीतल का लोटा दिया था, यह सोने का कैसे हो गया?''

लक्ष्मी जी ने कहा– ''मुझमें यह गुण है कि जिस बर्तन को हाथ लगाती हूँ वह सोने का हो जाता है।

मालकिन उनका कन्धा पकड़ कर बोली, ''अन्दर मकान में चलो न! तुम बहुत थकी मालूम होती हो, चलो तुम्हे खाना खिलाऊँ''

लक्ष्मी जी मुस्कुराते हुए बोली– "तुम कथा में जा रही थी, देर हो रही थी तुम्हें"

मालकिन बोली– ''अजी कथा तो प्रतिदिन होती ही रहती है, आओ तुम्हें खाना खिलाऊँ, तुम्हारे पाँव दबाऊँ"।

लक्ष्मी जी मकान में चली गयीं। दूसरे दिन प्रातः काल हर ओर यह बात फैल गई कि एक वृद्धा देवी ग्राम में आई है, उसके छूने से पीतल के बर्तन सोने के हो जाते है और दूसरे दिन से ही कई लोग उस वृद्धा देवी को देखने के लिए आने लगे हर मनुष्य उसे अपने घर चलने को कहता। हर आदमी उसे अपना अतिथि बनाने के लिए बेचैन हो उठा लक्ष्मी जी प्रातः एक घर में, दोपहर दूसरे घर में, सायं तीसरे और रात चौथे घर में । लोग पालकी लेकर आते और उन्हें अपने कन्धों पर बिठाकर ले जाते।

उधर नारायण जी की कथा में दूसरे दिन आधे आदमी थे, तीसरे दिन उससे भी आधे, चौथे दिन केवल बीस– तीस और पांचवे दिन के बाद तीन चार वृद्ध बैठे थे वहाँ और नारायण जी गला फाड़–फाड़ कर कथा कह रहे थे।

जिस सेठ के घर में नारायण जी रहते थे, वे भी लक्ष्मी जी के पास पहुँचे, बोले ''माता जी! आप मेरे घर चलकर रहिए। वहाँ आपको हर प्रकार का आराम मिलेगा मैंने अपना घर एयर कंडीशन करा रखा है। संगमरमर के फर्श है, संगमरमर के स्नानागार। कितने ही नौकर हर समय आप की सेवा में रहेंगे। मैं कार लेकर आया हूँ।

लक्ष्मी जी ने कहा– ''चली तो चलूंगी मैं परन्तु तुम्हारे घर में वह पण्डित रहता है जहाँ वह रहता है, वहाँ मैं नही जा सकती। मुझे ले जाना है तो पहले उस ब्राह्मण को अपने घर से निकालो''

सेठ जी घर में आये ब्राह्मण से बोले– ''पण्डित जी। यहाँ रहते आपको कई दिन हो गये।''

नारायण जी ने कहा – ''हाँ भाई। बहुत कृपा की तुमने, बहुत सुख दिया तुमने''

सेठ बोला– '' तो फिर अब आप किसी दूसरी जगह पर चले जाइए न।''

नारायण जी ने दिल ही दिल में सोचा– आ गई है वह चुड़ैल। अब मुझे यहाँ रहने भी नहीं देगी।

सेठ बोला– ''धर्मशाला में चले जाइए। वहाँ आपको एक कमरा दिया जाएगा, तीन दिन तो वहाँ रह सकते हैं, फिर और ठिकाना देख लीजिए।''

नारायण जी ने कहा– ''परन्तु मैं यहीं रहना चाहता हूँ।

सेठ क्रोध मे आकर बोला– ''यह कैसे हो सकता है? उठाओ अपना बोरिया बिस्तर चले जाओं यहाँ से।''

तभी लक्ष्मी जी वहाँ आ गयीं। हँसती हुई बोली – देख लिया किसको चाहते हैं लोग? किसके लिए पागल हैं? मुझे सब लोग कहते हैं हमारे घर चलो, हमारे घर आओ आप को यह सेठ भी निकाले देता है, आइए अब चलें यहाँ से यह खेल समाप्त हुआ।

और नारायण जी लक्ष्मी का हाथ पकड़ कर सिर झुकाकर चल पड़े। यह है दुनिया का हाल। लोग धन के पीछे भाग रहें हैं, शासन और अधिकार के पीछे।

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः।

धन से मनुष्य की तृप्ति कभी नहीं होती, बहुत अधिक कमाओगे तो इनकम टैक्स दोगे डाक्टर को दोगे आदि। मनुष्य इतना कमाने में व्यस्त हो गया है कि उसे पत्नी एवं बच्चों का ध्यान नहीं, स्वास्थ्य की चिन्ता नहीं, बस वह धन कमाने की मशीन बन गया है।

इति ओ३म्

संगीत एवं चिकित्सा

- ज्ञानेन्द्र कुमार मिश्र

संगीत नैसर्गिक रूप से हृदय के संवेगों एवं भावनाओं को प्रकट करने की कला है और इसीलिए इसे सर्वश्रेष्ठ ललित कला का स्थान प्राप्त है। ऋग्वेद के निम्नलिखित मन्त्र में संगीत चिकित्सक का उल्लेख है:–

गाथपतिं मेधपतिं रूद्रं जलाषभेषजम्। तच्छंयोः सुम्नमीमहे।

(ऋ. मण्डल 1 सूत्र 43, 4)

इस मन्त्र में तीन प्रकार के वैद्यों का वर्णन है:–

1. गाथपति अर्थात् संगीत द्वारा चिकित्सा, शरीर की रक्षा करने वाला, 2. मेधपति अर्थात् सत्, अर्क, कषाय, सार आदि औषधियों द्वारा चिकित्सा' करने वाला, 3. जलाषभेषजः अर्थात् जल द्वारा चिकित्सा करने वाला वैद्य।

इस प्रकार संगीत भी एक चिकित्सा है। जिसमें संगीतज्ञ गायन, वादन तथा नृत्य के प्रयोग से प्राणियों की चिकित्सा करता है जो निम्नलिखित मन्त्र से स्पष्ट है–

हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां जिह्वा वाचः पुरोगवी।
अनामयित्लुभ्यां त्वा ताभ्यां त्वोप स्पृशामसि।।

(ऋ. मं.१० सू. १३७ मं. ७)

मनुष्य की सभी उँगलियों और हथेलियों से विद्युत् तरंगे निकलती है, मनुष्य के हृदय में जिस प्रकार के विचार होते हैं तथा जिस प्रकार के शब्दों का उच्चारण वह करता है उसी प्रकार का प्रभाव व गुण मानवीय विद्युत् में पैदा हो जाता है इसलिए रोगी को छूने से रोगी को आराम मिलता है। रोगी व्यक्ति के हृदय और शरीर के अंगो पर संगीत का तुरन्त प्रभाव दिखाई देता है क्योंकि संगीत की उत्पत्ति नाद से हुई है और नाद ब्रह्म कहलाता है। नाद (अव्यक्त), ब्रह्म से आकाश, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथ्वी की उत्पत्ति हुई है। मनुष्य का शरीर भी इन्ही तत्वों से बना है इसलिए नाद का उसके मन, मस्तिष्क और शरीर के अंगो पर शीघ्र प्रभाव पड़ता है। षड्ज, मध्यम और पंचम के नाद से वात, पित्त और कफ प्रधान रोग दूर हो जाते है। नारद मुनि ने स्वरों के रंगो और प्रवृतियों का वर्णन किया है। यथा –

षड्जः– इसका रंग गुलाबी, स्वभाव ठंडा और प्रकृति चित्त को प्रसन्न करने वाला तथा यह पैत्तिक

उन्माद, पित्तज मिरगी, पित्तज सिर दर्द, उच्च रक्तभार, पैत्तिक प्रदर तथा शुक्रमेह आदि रोगों को दूर करता है।

ऋषभः— इसका रंग हल्का हरा, स्वभाव ठंडा और व खुश्क। प्रसन्नता कारक तथा पित्त और कफ प्रधान रोगों को दूर करता है।

गांधार :— रंग सुनहरा, स्वभाव ठंडा, प्रकृति करूणाजनक यह पित्त प्रधान रोगो को दूर करता है।

मध्यमः— इसका रंग नारंगी, प्रकृति चंचल और स्वभाव गर्म खुश्क है। इसका नाद वात व कफ़ प्रधान रोगों को दूर करता है।

पंचमः— इसका रंग लाल, प्रकृति जोशीली तथा स्वभाव शुष्क है। इसका नाद कफ़ प्रधान रोगों को दूर करता है।

धैवतः— इसका रंग पीला, स्वभाव कभी गर्म कभी ठंडा प्रकृति कभी मोदकारी कभी उदासीन होता है।

निषादः— इसका रंग लाल है जो पंचम के रंग से भिन्न है। स्वभाव ठंडा व शुष्क तथा प्रकृति जोशीली व मोदकारी है।

वात प्रधान रोगों में तालवाद्य को विलम्बित लय में बजाने से वायु की चंचलता गति कम हो जाती है इसमें तीनताल और चारताल का वादन उत्तम रहता है। चिन्ता या आमाशय की खराबी से उत्पन्न रोगो को दूर करने के लिए ताल द्रुत लय में बजायी जाती है।

नृत्य करते समय पैर के तलवों, एडी, अँगुलियों तथा उनके नीचे की गद्दियों में दबाव पड़ता है जिनका सम्बन्ध शरीर के विभिन्न अंगो से होता है इसलिए नर्तक का स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

संगीत— मकरंद के संगीताध्याय के चतुर्थ पाद में नारद ने कहा हैः —

आयुर्धर्मयशोबुद्धि धनधान्यफलं लभेत्।
रागाभिवृद्धिसन्तानं पूर्णरागाः प्रगीयते।।
संग्रामरूपलावण्यं विरहं गुणकीर्तनम।
षाडवेन प्रगातव्यं लक्षणं गदितं यथा।।
व्याधिनाशे शत्रुनाशे, भयशोकविनाशने।
व्याधिदारिद्रयसंतापे, विषमग्रहमोचने।।
कायाडम्बरनाशे च मंगल विषसंह्वते।
औडवेन प्रगातव्यं ग्रामशान्त्यर्थ कर्मणि।।

अर्थात्– आयु, धर्म, बल, बुद्धि, धन, धान्य, फल, लाभ, संतान की अभिवृद्धि इत्यादि के लिए संपूर्ण जाति के रागों का गायन करना चाहिए। संग्राम, रूप, लावण्य, विरह और किसी के गुण–कीर्तन की दशाओं में षाडव रागों का गायन करना चाहिए। व्याधि को दूर करने, शत्रु–नाश करने, भय–शोक विनाश किसी व्याधि या दरिद्रय के संताप या विषम ग्रह मोचन के लिए शारीरिक अस्वास्थ्य तथा मंगल के लिए औडव रागों का गायन करना चाहिए।

बहार और बागेश्री रागों के गायन या वादन से वातज उन्माद रोगों में आराम मिलता है इसी प्रकार खमाज राग से पित्तज उन्माद रोग का निवारण होता है तथा केदार और ललित राग के गायन वादन से कफज उन्माद रोगों से मुक्ति मिलती है।

उपर्युक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि आध्यात्मिक साधना एवं शास्त्रीय संगीत रोगो के उपचार में अत्यन्त लाभकारी है किन्तु अभी भी संगीत द्वारा चिकित्सा विषय पर और अधिक प्रामाणिक अध्ययन होना चाहिए जिससे संगीत के द्वारा परमानन्द एवं मोक्ष प्राप्ति के साथ–साथ स्वास्थ्य लाभ को भी एक उचित एवं प्रमाणिक दिशा मिल सके।

★ ★ ★

गायत्री मन्त्र व अर्थ

ओं भूर्भुवः स्वः।
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्॥

तूने हमें उत्पन्न किया,
पालन कर रहा है तू।
तुझसे ही पाते प्राण हम,
दुखियों के कष्ट हरता है तू॥

तेरा महान् तेज है,
छाया हुआ सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु-वस्तु में,
तू हो रहा है विद्यमान्॥

तेरा ही धरते ध्यान हम,
माँगते तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धि को,
श्रेष्ठ मार्ग पर चला॥

धर्म निरपेक्षता का पागलिया डान्स भारत भूमि पर बन्द हो

- ओम प्रकाश (नेताजी)
पूर्व मन्त्री-आर्य उप प्रतिनिधि सभा, कानपुर नगर

हमारे देश के तमाम राजनीतिक दलों के विद्वानों और विचारकों ने भारत के संविधान में आये सेक्युलर शब्द का अर्थ धर्म निरपेक्ष किया है जबकि संविधान का जो हिन्दी अनुवाद है उसमें 'पंथनिरपेक्ष' शब्द का प्रयोग किया गया है। वास्तव में सेक्युलर शब्द का अर्थ होता है – पंथ, सेक्ट, सम्प्रदाय, मजहब निर्पेक्ष आदि होता है धर्म निर्पेक्ष नहीं परन्तु हमारे देश के तमाम विद्वानों और विचारकों ने पंथ, मत, सेक्ट और सम्प्रदाय, मजहब, रिलीजन आदि को धर्म मान लिया है। इसीलिये ये लोग, इस्लाम धर्म, ईसाई धर्म, पारसी धर्म, जैन–धर्म, बौद्ध धर्म, हिन्दू धर्म आदि का प्रयोग करते हैं।

इस वक्त हमारे देश मे उक्त तथा कथित विद्वान और विचारक (सेक्युलर) धर्म निर्पेक्षता का मतलब अल्पसंख्यक यानि मुस्लिम और ईसाई तुष्टिकरण और हिन्दू विरोध मानते हैं। अल्पसंख्यक समुदायों की जायज और नाजायज मार्गों का समर्थन करना और हिन्दुओं की जायज मांगों का विरोध करना और उन्हें साम्प्रदायिक कहना। यह सब कार्य वोटों की राजनीति के लिये किया जा रहा है। जबकि हमारे देश में ही नहीं पूरे विश्व में मजहब और तथा कथित धर्म के नाम पर खून खराबा, दंगे–फसाद, नरसंहार हुआ और हो रहा हैं। आदमी–आदमी का दुश्मन बना हुआ है। भारत में यह सब धर्म निर्पेक्षता के नाम पर हो रहा है। भारत को एक अन्तर्राष्ट्रीय धर्मशाला बनाने का काम और मुस्लिम तुष्टिकरण का काम गांधी जी ने किया जिसको भारत की जनता ने माना और परिणाम सामने है जिसकी वजह से भारत का विभाजन हुआ। गांधी जी एक भजन गाया करते थे 'ईश्वर अल्ला एको नाम सबको सम्मति दे भगवान, रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम' यह सब हिन्दुओं और मुसलमानों में एकता स्थापित करने के लिये किया गया। उक्त भजन को हिन्दुओं ने अपने मन्दिरों में गाना शुरू किया पर इसे मस्जिद और चर्च में गांधी जी नहीं पढ़ा सके। एक बार हिन्दुओं के कहने पर गांधी जी उक्त भजन को मस्जिद में गाने के लिये चले जैसे ही मुसलमानों को यह पता चला तो मुसलमानों ने इसका जबरदस्त विरोध किया। मुसलमानों ने गांधी जी से कहा कि ऐ गांधी! तू यह अपना काफिराना अन्दाज सिर्फ हिन्दुओं के मन्दिरों में करो मस्जिद में करने की चेष्टा करोगे तो खून खराबा हो जायेगा। गांधी जी डर गये और वापस चले आये। मुस्लिम मौलवियों ने कहा कि एक गुमराह और भटका हुआ मुसलमान गांधी से कई गुना

अच्छा है क्योकि वो मुसलमान है और गांधी एक काफिर है। इस पर गांधी जी ने कहा था कि हिन्दू जन्म से कायर है और मुसलमान जन्म से गुण्डा है। गांधी जी व उनके अनुयायी यह भूल गये कि मुसलमानों का इस्लाम पूरी दुनियाँ को दो भागों मे बाँटता है पहला वो भाग जहाँ इस्लामी राज्य है, उसे वो दारूल–ए–इस्लाम कहता है और दूसरा जहाँ मुस्लिम राज्य नहीं है उसे वो दारूल–ए–हरब कहता है और प्रत्येक मुसलमान का फर्ज है कि वो दारूल–ए–हरब को दारूल–ए–इस्लाम में बदले। यह सब जानने के बाद भी, और डायरेक्ट एक्शन' के नाम हुये भीषण दंगो और हिन्दुओं के संहार को भूलकर गांधी जी और उनके अनुयायियों ने भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित कर दिया। इसी धर्म निरपेक्षता का फायदा ये मजहबी लोग उठा रहे हैं। इसी आड़ में और संविधान के दिये गये धर्म की स्वतन्त्रता की आड़ में धर्म और सेवा के नाम पर 'धर्म परिवर्तन' करने में लगे हैं। आज देश में मौजूद तथाकथित राजनीतिक दल जो अपने को धर्म निरपेक्ष कहते हैं क्या वे आज भी चर्च और मस्जिदो में गीता और रामायण का पाठ व वेद मन्त्र का पाठ करा सकते हैं यदि नहीं तो बन्द करे धर्म निर्पेक्षता का ढोंग और सावधान हो जाये इन साम्प्रदायिक मजहबी लोगों द्वारा किये जा रहे धर्म परिवर्तन से। क्योंकि इनके इरादे नेक नहीं है, कारण आपके सामने है कि जो विदेशी ईसाई पति–पत्नी अपने माता–पिता की सेवा नहीं करते व अपने बच्चों को शिशु पालन केन्द्र भेज देते हैं अपने बच्चों की सेवा नहीं करते, और बूढ़े असहाय माता पिता की सेवा नहीं करते वे हजारों मील दूर से विदेशी ईसाई हमारे देश में आकर हमारे भोले–भाले अनपढ, गरीब, पिछड़े लोगों को पैसों व नौकरी का लालच देकर तथा मुफ्त दवा बीमारों को देकर सेवा का ढोंग करते हैं। ऐसी सेवा पर रोक लगनी चाहिये। अब सारी दुनिया इस तथा कथित धर्म के नाम पर अशान्त ही अशान्त नजर आती है। इसका कारण एक ही है कि सारी दुनिया के मनुष्यों का झुकाव मतवाद, सम्प्रदाय वाद की तरफ है, सच्चे धर्म की तरफ नहीं है। क्योंकि धर्म एक अलग अनादि सत्ता है। जिसका नाम है 'सत्य सनातन वैदिक धर्म' जो मानव को इन्सान बनाने का एक मात्र धर्म है। जो सभी मनुष्यों को जोड़ने का कार्य करता है। क्यों न आप गोरे हों या काले हों, मुसलमान हों, ईसाई हों, हिन्दू हों आदि बल्कि ये जितने मत–मजहब, या सम्प्रदाय है वो जनता को आपस में बाँटने का काम करते हैं। इस सम्प्रदायवाद के कारण सारी दुनिया में दंगे–फसाद, आतंकवाद, जातिवाद, ऊँच–नीच आदि की भावनायें फैली हुई हैं। क्योंकि अगर महात्मा बुद्ध न होते तो बौद्ध मत का, ईसा मसीह न होते तो ईसाई मत का मोहम्मद साहब न होते तो इस्लाम मत का और अगर वाल्मीकि, तुलसीदास न होते तो रामायण मत का ही पता नहीं होता। अब देखें सत्य सनातन वैदिक धर्म को इसमें से आप ब्रह्मा, विष्णु, महेश, दुर्गा, काली, बजरंग बली, साँई बाबा, शानि देव, गणेश आदि को अलग कर दें या निकाल दें तो फिर भी 'सत्य सनातन वैदिक धर्म में कोई फर्क नहीं पड़ेगा। अतः मनुष्य को मनुष्य बनाने का एक मात्र धर्म है वो

है वैदिक धर्म जो सारे संसार के प्राणी मात्र को प्रेम, अंहिसा व आनन्द का सन्देश देता है। वेद में मनुष्य को आदेश किया गया है कि 'मनुर्भव' अर्थात् मनुष्य बनो। अब समय आ गया है यदि मानवता को बचाना है तो वेद मार्ग पर आना होगा। नहीं तो हिन्दू, मुस्लिम, और ईसाई मतवाद के नाम पर दुनियाँ में दंगे–फसाद, लूटमार और भय का साम्राज्य रहेगा। उक्त वैचारिक एकता के लिए विश्व क्रान्ति के लिये दयानन्द कृत 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ें व पढ़ावें ताकि सारी दुनिया के मानव शान्ति प्रेम और सद्‌भाव से रहकर सारे संसार को स्वर्ग बना दें।

ऋग्वेद | ओ३म् | यजुर्वेद

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

एक शाम ऋषि के नाम (जीवन के कुछ पल प्रभु की गोद में)

मन को असीम शान्ति देने वाले प्रभु भक्ति के भजन तथा ऋषि दयानन्द से संबंधित भजनों का कार्यक्रम सुनने के लिये, अपने घरों में समय–समय पर संगीतमय वेदकथा कराने हेतु सम्पर्क करें। हमारे पास मानव जीवन संबंधित सभी संस्कारों को कराने हेतु पुरोहितों की व्यवस्था है। वैदिक विधि से संस्कार कराने हेतु कृपया नीचे लिखे नंबरों पर सम्पर्क करें। धन्यवाद!

पं० रवीन्द्र आर्य वैदिक

सामवेद | पताः डी0-305 विश्व बैंक कालोनी बर्रा कानपुर नगर (उ0प्र0)। फोन : 09389172290 | अथर्ववेद

With Best Compliments From............

044- 2460335, 39279319

The Battery House

2A/396 Azad Nagar, Kanpur

PANTHER

Motor Cycle & Automotive Batteries

Authorised Super Distributors

Om Prakash Gupta

Mo.:9839211828

Factory : Pakkudi Road, Mathur -622 515. TAMIL NADU

Regd. Office : ESVIN HOUSE, PERUNGUDI, CHENNAI 600 096.

email : info@highenergyltd.com

HIGH ENERGY

आर्यत्व एवं कर्मठता के प्रतीक

स्व० श्री शिवशंकर लाल जी आर्य (जीवन परिचय)

दातागंज, तिलहर, शाहजहाँपुर

प्रस्तुतकर्ता – आर्य उपप्रतिनिधि सभा, कानपुर नगर

श्री शिव शंकर लाल जी का जन्म शाहजहाँपुर जनपद के उप नगर तिलहर में एक प्रतिष्ठित आर्य परिवार में दि. 07 अक्टूबर 1926 को हुआ था। उनके पिता स्व0 श्री प्रभूदयाल आर्य एक धार्मिक मृदुभाषी एवं सज्जनता की प्रतिमूर्ति थे। उनकी माता का नाम श्रीमती सुख देवी था।

अपने पिता के तरह श्री शिवशंकर लाल जी आर्य एक धार्मिक, मृदुभाषी, सज्जन एवं वैदिक धर्म की मान्यताओं को मानने वाले व्यक्ति थे। अपने जीवन काल में वह नित्य सन्ध्या एवं दैनिक हवन करने के पश्चात् ही कुछ ग्रहण करते थे। आर्य समाज एवं वैदिक धर्म के प्रति उनका अटूट लगाव था। आर्य समाज तिलहर के किसी कार्यक्रम में आपका सहयोग एवं सानिध्य सभी साथियों को प्राप्त होता था। वे स्वयं कार्यक्रमों में खर्च हुये धन में कम पडी राशि का वह अपने पास से व्यवस्था करते थे। वेद प्रचार सप्ताह के प्रति उनकी अनन्य श्रद्धा थी।

श्री शिवशंकर लाल जी आर्य की प्राइमरी शिक्षा तिलहर में हुई। तिलहर में अध्यापन करने के बाद वह पढ़ने के लिये चन्दौसी गये लेकिन स्वतन्त्रा आन्दोलन के दौरान शिक्षण संस्थायें बन्द होने के कारण उनकी शिक्षा में विध्न पड़ा और वह अपने पिता की दुकान पर पिता जी के साथ बैठने लगे। दुकान पर बैठने के बाद उन्होनें अपने कारोबार का चहुँ ओर प्रसार किया। व्यापारियों में उनकी एक अलग ही धाक थी। उनकी ईमानदारी और कार्य के प्रति समर्पणता से सभी लोग प्रभावित थे। अपने व्यवसाय काल में जो सज्जन उनकों धोखा या चार सौ बी सी भी कर गये दुबारा आने पर उन्होनें उसका कार्य भी पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ किया। श्री शिव शंकर लाल जी आर्य वैदिक धर्म के मानने वालों एवं अन्य सामाजिक कार्यो के प्रति काफी उदारतापूर्वक दान देते थे। उनकी उदारता की चर्चा काफी दूर–दूर तक थी। विशेष रूप से उन्होंने तिलहर नगर के ग्राम– रूद्रपुर में स्थित गुरूकुल महाविद्यालय रूद्रपुर की सहायता की वह उसके प्रधान एवं बाद में आजीवन संरक्षक के रूप में रहे। वह तिलहर आर्य समाज के भी प्रधान एवं सरक्षक के

रूप में मनोनीत हुये एवं समय–समय पर पाणिनी कन्या विद्यालय बनारस को भी उचित धनराशि दान स्वरूप दी। उनको किसी भी समय खाली बैठा नहीं देखा जा सकता था। वह हर समय कोई न कोई कार्य करते रहते थे।

अपने जीवन काल के अन्तिम दिनों में दुर्भाग्यवश वह मधुमेह एवं उच्चरक्त चाप से पीड़ित हो गये थे। जिसके कारण उनके गुर्दे खराब हो गये। उनके परिवार वालो नें उनके उपचार की उत्तम व्यवस्था की लेकिन ईश्वर की मर्जी के आगे किसी की भी न चली 27 जुलाई सन् 1995 को अस्पताल में डाक्टरों की मौजदूगी में ही उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया। वह अपने पीछे अपनी पत्नी, पुत्री एवं पाँच पुत्रों का भरा पूरा परिवार छोड़ गये। वर्तमान में उनके पुत्र श्री चन्द्रप्रकाश, श्री ज्ञान प्रकाश, और श्री प्रेम प्रकाश कानपुर नगर के हालसी रोड में प्रकाश एजेन्सीज के नाम से पेन्ट्स का व्यवसाय कर रहे है और अपने पिता जी की तरह ही आर्य समाज एंव वैदिक धर्म के प्रति निष्ठा से समर्पित है और साथ ही आर्य समाज सीसामऊ के सदस्य भी है। समय–समय पर दान देकर आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर नगर को सहयोग भी प्रदान करते रहते है।

With Best Compliments From............

TIN No.: 09937800788
C.S.T.No.: KR-5577252
S.S.I.Regd. No. 04687

ISO 9001 : 2000

UKAS

ENGINEERS & CONSULTANTS

YOTECH ENGINEERING PVT. LTD.

0512- 2691519
2692562

44, UPTRON ESTATE PANKI,
KANPUR - 208022

E-mail : yotech44@yahoo.co.in

'खुद एवं खुदा पर भरोसा करो'

- **कैलाश मोंगा** एम.ए. साहित्यरत्न
प्रधाना-आर्य समाज गोविन्द नगर,

शुभ एवं अशुभ हमारे मन के अन्दर है।

शुभ क्या है?– यह प्रश्न बार–बार हमारे सामने उपस्थित हो समाधान चाहता है क्योंकि हर व्यक्ति अशुभ से भयभीत रहता है। हम बचपन से ही सुनते आये हैं कि अशुभ कार्य न करो। अशुभ से बचने के लिये हम पूजा–पाठ करते है और जीवन का कोई भी प्रमुख निर्णय लेने से पहले हम शुभ घड़ी लग्न शुभ मुहूर्त निकलवाते हैं। दिनों में शुभ–अशुभ की विवेचना होती है, ग्रहों में शुभ–अशुभ को खोजते हैं, दिशाओं में भी शुभ–अशुभ निर्मित कर लेते हैं। पाणि ग्रहण, उपनयन, नामकरण आदि संस्कारो का प्रसंग हो या फिर विशेष स्थान को प्रस्थान का अवसर हम बार–बार शुभ–अशुभ के प्रति आशंकित रहते हैं और हम निकल पड़ते हैं उन लोगो की तलाश में जो ज्ञानी कहलाते हैं या फिर पढ़ने लगते हैं पंचागों के अन्दर अपना राशिफल ग्रहों की दशा व दिशाओं में दोष एवं दिशा शूल आदि ढूंढने लगते हैं।

मनुष्य सब जगह ठोकरे खाकर सब प्रकार का प्रयत्न करने के बाद भी जब धोखा खाता है– तो निराश और मायूस होकर भाग्य के भरोसे बैठ जाता है या फिर नास्तिक होकर रह जाता है, लेकिन कभी यह सोचने का साहस नही करता कि शुभ क्या है। यह हम स्वयं से पूछें और एक क्षण के लिए मौन हो जाये। समाधान अपने आप भीतर से निकलेगा। दूसरे लोग हमें धोखा दे सकते हैं परन्तु तुम अपने आप को धोखा नहीं दे सकते। क्योंकि तुम अपने–आप को अच्छी प्रकार से जानते हो। क्या दुनिया के तमाम देशो में भारत की भांति शुभ–अशुभ के मापदण्ड है। नहीं, हमने व्यर्थ के भ्रम पाल रखे हैं। बिल्ली रास्ता काट गई तो अशुभ हो गया, छींक आ गई तो अशुभ हो गया। छींक आ गई तो क्या हआ यह तो शरीर की सामान्य प्रक्रिया है। इसमें अशुभ क्या है?

यह बात तो समझ में आती है कि जब तुम्हारे समाने से जंगली जीव गुजरे तो हम उन्हें

जाने दे। हम थोड़ी देर ठहर जायें क्योंकि रास्ते पर चलने का उन्हें पहले अधिकार है। परन्तु उनके द्वारा रास्ता काटना अशुभ है यह कैसी भ्रान्ति है। कुछ खाने–पीने से पहले भी हम सोचते है कि अमुक दिन माँस आदि खाना हमारे लिये शुभ है या नहीं? जब भी हम कोई काम करें बस थोड़ी देर के लिए मौन होकर स्वयं ही अपनी आत्मा से पूछ लेना और भीतर से जो भी आवाज उत्पन्न हो बस उसे ध्यान से सुनकर जैसा आदेश आए वैसा कर लेना। आपको कभी भी धोखा नही होगा। जब भी हम कोई अच्छा काम करने के लिए सोंचते हैं तो भीतर एक आनन्द, उत्साह व प्रसन्नता का भाव होता है तो समझ लेना चाहिये कि भीतर का गुरू, ज्योतिष शास्त्र एवं परमात्मा तुम्हें उस कार्य को करने के लिए प्रेरित कर रहा है। वह हमारे लिए शुभ है। जब भी हम कुछ गलत करने जाते हैं तो भीतर से अपने आप भय उत्पन्न होता है, आशकिंत होते हैं, लज्जा, घृणा का भाव पैदा होता है तो यह समझ लेना चाहिये यह हमारे लिए अशुभ है। दिशाएं, दिन, घड़ी, मुहूर्त सब परमात्मा के बनाए हैं। ये सब शुभ है। दूसरों पर भरोसा करने के बजाय खुद व खुदा पर भरोसा करें सब कुछ शुभ होगा।

With Best Compliments From............

Tel.: 0512-2301028
Mobile : 9936200984

Prop. Narendra Bhatia

Bhatia Plastics

38/163, Arya Samaj, Meston Road, Kanpur

आर्य उप प्रतिनिधि सभा 2011-12 के पदाधिकारी एवं अंतरंग सदस्य

बुद्धिराम शर्मा

सह कोषाध्यक्ष

वीरेन्द्र कुमार कुन्दरा

सह अधि0-आर्यवीर दल

डा0 अयोध्या प्रसाद साहू

सह पुस्तकाध्यक्ष

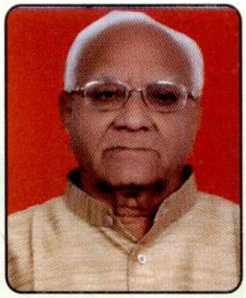

शिवकुमार आर्य

अंतरंग सदस्य

श्रीमती सरला वोहरा

अंतरंग सदस्य

श्रीमती मिथलेश शुक्ला

अंतरंग सदस्य

कृष्णपाल राजपूत

अंतरंग सदस्य

हनुमान प्रसाद आर्य

अंतरंग सदस्य

चन्द्रमोहन गोयल

अंतरंग सदस्य

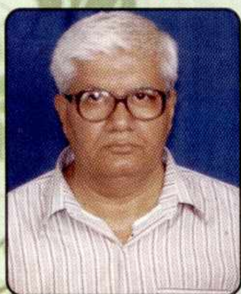

रिपुदमन कुमार भल्ला

अंतरंग सदस्य

श्रीमती कृष्णा गुप्ता

अंतरंग सदस्य

श्रीमती मौसमी आर्या

अंतरंग सदस्य

कमल कुमार पाण्डेय

अंतरंग सदस्य

उमांशकर सिंह

अंतरंग सदस्य

रामसेवक आर्य

अंतरंग सदस्य

छायाचित्र उपलब्ध नहीं

भैरव प्रसाद गुप्ता

अंतरंग सदस्य

With best compliments from:

HOUSE OF BHARTIYAS- NAVSHEEL

Kishore Bandhu Private Limited

15/239, Civil Lines Kanpur
Ph: +91-0512-2306879, 2304895
E- Mail: kishorebandhu@yahoo.com

We Make Your Dream House A Reality.

On Going Projects :

Navsheel Jyoti Apartments
Juhi, Kanpur
1-2-3 Bed Room Flats

Navsheel Udai
Tohdakpur, Kanpur
1-2-3 Bed Room
Independent & Expandable
Houses

Navsheel Dham - II
Kalyanpur, Kanpur
1-2-3 Bed Room
Independent & Expandable
Houses

पर्यावरण संतुलन में यज्ञ का महत्व

- विनोद कुमार आर्य
सदस्य उद्योग नगर आर्य समाज कानपुर

प्रास्तवना

आज के समय की ज्वलन्त समस्या है प्रदूषण। समस्या इतनी गम्भीर है कि आज कोई पढ़ा लिखा व्यक्ति स्टेशन या बस स्टैण्ड पर खुला पानी कभी नहीं पीता, बल्कि साथ में लेकर चलता है। सोचनीय विषय है कि कल इसी प्रकार साँस लेने के लिए आक्सीजन का सिलेण्डर पीठ पर बाँधकर न घूमना पड़े। प्रदूषण को इतना बढ़ाने में जितना योगदान मनुष्यमात्र का है उतना किसी अन्य प्राणी का नहीं। ज़रा घर से निकलकर वन, नदी, झरने की तरफ जाएं तो मिलेगा कि कितनी सुन्दरता ईश्वर ने हमें दी है। हर तरफ भागती कारें, ट्रक, गाडियाँ और फैक्ट्रियों से निकलता हुआ धुँआ और गंदा पानी इन सबने हमारे वा़यु, जल और भूमि को प्रदूषण के उच्च स्तर पर पहुँचाने में पूर्ण योगदान दिया है, इसलिए प्रत्येक मानव का यह परम कर्तव्य है कि वह देश, धर्म और जाति से उठकर पर्यावरण को सुन्दर, स्वच्छ व संतुलित रखने में अपना पूरा योगदान दे।

वेदों के आधार पर प्राचीन ऋषियों ने यज्ञ का महत्व मनुष्यमात्र तक पहुँचाया। वैदिक काल में प्रत्येक व्यक्ति अपने घर में यज्ञ किया करता था। वेदों के अनुसार यज्ञ करने के तीन कारण बताये गए हैः– दान, पूजा और संगतिकरण। स्थानाभाव के कारण हम यहाँ अपने मुख्य विषय पूजा के बारे में विस्तार से लिखेंगे। आम व्यक्ति पूजा का अर्थ सिर्फ दीपक जलाना, भोग लगाना इत्यादि समझता है। परन्तु वास्तव में पूजा का अर्थ है सत्कार। सोचनीय विषय है कि यज्ञ के द्वारा किसका और क्यों सत्कार करना चाहिए। जैसे वृद्धावस्था में माता–पिता, दादा–दादी का सत्कार उन्हें स्वादिष्ट भोजन व सुन्दर वस्त्र देकर करते हैं उसकी प्रकार हम वायु, जल तथा भूमि इत्यादि का सत्कार यज्ञ से करते हैं। यज्ञ में घृत, मेवा, हवन सामग्री तथा लकड़ियाँ (समिधा) का प्रयोग होता है। जैसे जलती हुई अग्नि मे एक लालमिर्च डालने से कई लोग परेशान हो जाते हैं और वहाँ पर बैठना कठिन हो जाता है, क्योंकि अग्नि, मिर्च के कणों को हजारों गुना विघटित कर वायुमण्डल में छोड़ देती है उसी प्रकार घृत, सामग्री इत्यादि को यज्ञ में डालने पर अग्नि उसे सूक्ष्मरूप में विघटित करके हजारों गुना बनाकर वायुमण्डल में छोड़ देती है, जिससे वायु शुद्ध

होती है। हवन सामग्री में मुख्यतः चार प्रकार की चीजों का प्रयोग होता है पुष्टिकारक, कीटनाशक और सुगन्धिकारक एवं मीठा। हवन सामग्री में जो मेवे, मिष्ठान्न डालते हैं वे पुष्टिकारक हैं, बत्तीस प्रकार की औषधियाँ डालते हैं वे कीटनाशक का कार्य करती हैं और चन्दन इत्यादि सुगन्धिवर्धन का कार्य करती हैं। यज्ञ के अन्त में स्विष्टकृत आहुति डालते हैं उसमें भात की आहुति दी जाती है। हाल ही के प्रयोगों में पता चला है कि इसके द्वारा ओज़ोन लेयर के छिद्र ठीक हो जाते हैं। यज्ञ में उन लकड़ियों (समिधा) का प्रयोग होता है जिसमें तेल न हो जैसे बड़, पीपल, आम तथा पलाश इत्यादि इनके अपने–अपने औषधीय गुण होते हैं। घर में पूजा करके मिष्ठान कुछ ही लोगों को खिलाया जा सकता है परंतु यज्ञ करके पूरी मानव जाति ही नहीं वरन् प्राणिमात्र के कल्याण की कामना की जा सकती है। वर्षाऋतु की प्रथम वर्षा में एसिड रेन नहीं वरन् सुगन्धित जल की वर्षा सम्भव है। जिससे हमारी भूमि, भूमि के नीचे का जल, वायुमण्डल और हमारे मन, मस्तिष्क और आत्मा की शुद्धि भी होगी, इसलिए ऋषियों ने कहा है

यज्ञो वै श्रेष्ठतमम् कर्म

An ISO 9001 : 2008

600+ School Natiionwide

BAMBI'S KAIR STUD

BACHPAN
a play school
SWAROOP NAGAR

Registration Opens For New Session

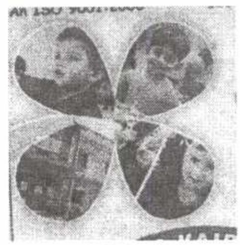

INDIA KA FAVOURITE PLAY SCHOOL

P.G. Nursery, K.G. Activity Centre N.T.T.

7/182(2), SWAROOP NAGAR, OLD SALETAX ROAD KANPUR

Mob.: +91-9335048580, Ph.: 0512-2543659

Corp. Office - S.K. Tower, 9988/B-1, Sarai Rohilla, New Rohtak Road N. Delhi-05

कम्प्यूटराइज मशीन द्वारा मनचाहे रंग प्राप्त करने का एकमात्र स्थान ....

प्रकाश एजेन्सीज

पेन्ट सामग्री के थोक विक्रेता

50/276, हालसी रोड, कानपुर। मो0 9415045245, 9453027784, 9839351661

आर्य समाज स्थापना दिवस एवं भारतीय नव संवत्सर के शुभ अवसर पर नगर के समस्त आर्यजनों को बहुत-बहुत बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाओं सहित

दयानन्द शिक्षा संस्थान, उ० प्र०

15/96, सिविल लाइन्स, कानपुर द्वारा संचालित महाविद्यालय

कानपुर

१.डी० ए० वी० कालेज
२.डी० बी० एस० कालेज
३.दयानन्द महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय
४.दयानन्द विधि महाविद्यालय
५.दयानन्द गर्ल्स कालेज
६.महिला महाविद्यालय
७.डी० ए० वी० इन्टर कालेज
८.दयानन्द हंसमुखी देवी इण्टर कालेज
९.डी० एम० यू० कालेज
१०.डी० ए० वी० प्रशिक्षण महाविद्यालय कानपुर

उन्नाव

१.डी० एस० एन० कालेज, उन्नाव
२.डी० वी० डी० टी० इण्टर कालेज, उन्नाव

देहरादून

१.डी० ए० वी० पी० जी० कालेज
२.डी० वी० एस० कालेज
३.दयानन्द महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय
४.डी० ए० वी० इण्टर कालेज, करनपुर
५.डी० ए० वी० इण्टर कालेज, प्रेमनगर
६.एकेडमी आफ मैनेजमेन्ट स्टडीज,
७.नन्दा की चौकी, प्रेमनगर, देहरादून

लखनऊ

१.दयानन्द कन्या विद्यालय इण्टर कालेज महानगर, लखनऊ

रायबरेली

१. दयानन्द बछरावाँ महाविद्यालय, बछरावाँ

जगेन्द्र स्वरूप

एम० एल० सी०

महामंत्री

दयानन्द शिक्षा संस्थान उ० प्र० कानपुर

योगदर्शनम्

– हनुमान प्रसाद आर्य
डी-६-ऐश्वर्य विला ११७/के/१३ मोती विहार,
सर्वोदय नगर, कानपुर

वेद में जड़ चेतन, लोक, परलोक, धर्म, अधर्म इत्यादि लौकिक, अलौकिक विषयों के सम्बन्ध में जो सच्चाईयां बतलाई गई है, योग उनके प्रत्यक्ष देखने का मार्ग है। योग मार्ग पर चलकर हम अपनी आत्मा को प्रत्यक्ष देख सकते है। वस्तुतः योग हमारे पास वह साधन है, जो हर बात को असली रूप में दिखला देता है। योग का उद्देश्य यही है कि वह हर एक वस्तु को प्रत्यक्ष दिखलाता हुआ प्रकृति और पुरूष के भेद को प्रत्यक्ष दिखलाकर प्रकृति की सारी फांसो को तोड़कर पुरूष को उससे मुक्त कर देता है।

योग के पाद

योग दर्शन के चार पाद है– **1. समाधिपाद, 2. साधन पाद, 3. विभूतिपाद और 4.कैवल्य पाद। समाधिपाद** में सबीज और निर्बीज समाधि और उसके उपयोगी सारे विषयों का वर्णन है। **साधन पाद** में योग के साधनो का वर्णन है। **विभूतिपाद** में योग की विभूतियों का वर्णन है, और **कैवल्यपाद** में मोक्ष का वर्णन है। इनमें से पहले दो पादों का विषय अधिक उपयोगी है, क्योंकि उपाय से किया हुआ यत्न फलवान है, सो कैवल्य का उपाय सामधि और समाधि का उपाय योग के अङ्ग हैं, यही इन दोनों पादों का विषय है। इतने से मनुष्य कृत कृत्य हो जाता है, प्रकृति की फांसों से छूट जाता है, और अपने स्वरूप को प्रत्यक्ष देख लेता है।

योंग का मूल

योग का सबसे पहला बीज हमें वेद संहिता में मिलता है, वहाँ हमें यह उपासना और ज्ञान के रूप में मिलता है। परमात्मा के दर्शन का यह उपाय जो वेद में वर्णन किया हे, सर्वाङ्गपूर्ण है। उपनिषदों मे आत्मा के साक्षात् दर्शन का उपाय योग को बताया है। योग दर्शन हमे बतलाता है, कि जब हम आत्मा अपने आपकों देख लेता है तो वह परमात्मा को भी देख लेता है, यह मुक्ति है।

<u>समाधि पाद–</u> आत्मा और परमात्मा का साक्षात् दर्शन चाहने वालों के लिये योग ही एक उपाय है, उस योग की शिक्षा पतंजलि ऋषि समाधि पाद से आरम्भ करते है, जिसमे पहला सूत्र है–

1. <u>अथ योगानुशासनम्–</u> अब आरम्भ करते है योग की शिक्षा देने वाले शास्त्र का।

2. योगश्चित्त वृत्ति निरोधः– योग चित्त की वृत्तियों का निरोध (रोकना) है। ये वृत्तियाँ असंख्य है, चित्त सर्वदा इन्ही वृत्तियों में बदलता रहता है। जिस अवस्था में ये सारी वृत्तियाँ लीन हो जाती है, उस अवस्था का नाम योग है।

3. तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्ः– तब द्रष्टा (आत्मा) की स्वरूप में ठहरना है। अर्थात् आत्मा की अपने स्वरूप में स्थिति हो जाती है।

प्रश्न– क्या चित्तवृत्तियों का निरोध होने के पहले द्रष्टा अपने स्वरूप में स्थित नही रहता? इस पर कहते है – समाधि पाद का चौथा सूत्र– 4. वृत्ति सारूप्यमितरत्र– वृत्ति के समान रूपता दूसरी अवस्था में। अर्थात द्रष्टा वृत्ति के समान रूप वाला होता है, चित्त की वृत्तियों के निरोध होने से पहले। चित्त को निर्मल बनाने का सुगम उपाय बतलाते हैं –

'मैत्री करूणा मुदितो पेक्षाणां सुख दुःख पुण्या पुण्य विषयाणां भावनातश्चित्त प्रसादनम्'–यह समाधिपाद का 33 सूत्र है। – यह सूत्र बतलाता है कि – 1. सुखी मनुष्यों में मित्रता की भावना करने से चित्त में निर्मलता बढ़ती है। 2. दुखी मनुष्यों में दया की भावना करने से चित्त में निर्मलता बढ़ती है। 3. पुष्याला पुरूषों में प्रशन्नता की भावना करने से चित्त में निर्मलता बढ़ती है। 4. पापियों में उपेक्षा की भावना करने से चित्त के राग, द्वेष, घृणा, ईर्ष्या और क्रोध आदि मलों का नाश हो जाता है। प्रत्येक को इसका अभ्यास करना चाहिये। इस प्रकार समाधि पाद में 51 सूत्र है। इस सूत्रों में योग के अंङ्गो का अनुष्ठान करने से चित्त के मल का अभाव होक चित्त सर्वथा निर्मल हो जाता है। योग के 8 अंग निम्न प्रकार हैं – **यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि है**। यम–5 हैं – **अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह**। नियम भी 5 हैं – **शौच, संतोष, तपः स्वाध्याय और ईश्वर प्राणिधान**। इस प्रकार निरन्तर अभ्यास करने से जब सारी वृत्तियाँ रूक जाती है तो द्रष्टा के सामने कोई दृश्य नही रहा, बस अब वह अपने आप में आ जाता है यानि अपने स्वरूप में अवस्थित होता है। अपने स्वरूप में अवस्थित होते ही अपने अन्दर अन्तर्यामी शुद्ध परमात्मा के दर्शन करता है जिसके विषय में यह कहा है–

यदात्मतत्त्वेन तु ब्रह्मतत्त्वं दीपोपमेनेह युक्तः प्रपश्येत्
अजंध्रुवं सर्व तत्त वैर्विशुद्धं ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्व पाशैः।।

जब योग युक्त होकर दीपक के तुल्य आत्मतत्त्व से ब्रह्मतत्त्व को देखे, जो अजन्मा अटल, और सब तत्वों से विशुद्ध है, उस देव को जानकर सब बन्धनों से छूट जाता हैं।

आर्य समाज स्थापना दिवस एवं भारतीय नव संवत्सर के शुभ अवसर पर नगर के समस्त आर्यजनों को बहुत-बहुत बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ...

भारत वर्ष के महान सन्त शिरोमणि शिक्षाविद अधिवक्ता युगपुरुष पण्डित पृथ्वीनाथ चक्र जिनकी पुण्य स्मृति में स्थापित पी.पी.एन. मेमोरियल सोसाइटी सामाजिक शिक्षा तथा अधिवक्ता हितार्थ निरन्तर कार्यरत है।

संस्था द्वारा संचालित लोक हितार्थ कार्य

शैक्षिक

- पी0 पी0 एन0 डिग्री कॉलेज
- पी0 पी0 एन0 गर्ल्स कॉलेज
- पी0 पी0 एन0 इण्टर कॉलेज
- पी0 पी0 एन0 प्राइमरी कॉलेज
- बी0 बी0 ए0 इंस्टीट्यूट

अधिवक्ता हितार्थ

- बार एसोसिएशन हाल में बालकनी का निर्माण
- बार एसोसिएशन में महिला अधिवक्ता कक्ष का निर्माण
- स्वच्छ पेयजल हेतु नलकूप
- अधिवक्ता हितार्थ कार्यक्रमों हेतु पं0 पृथ्वीनाथ चक्र विधि पुस्तकों का विवरण
- देवेन्द्र स्वरूप पालीक्लीनिक की स्थापना

जन हितार्थ

- न्यायिक सेवा अध्ययन कक्ष की स्थापना
- लायर्स एसोसिएशन के पुस्तकालय का विस्तार एवं नवीनीकरण
- वादकारियों हेतु सार्वजनिक प्याऊ बार के लिये ठण्डे पानी की मशीन।

योगेन्द्र स्वरूप एडवोकेट
सदस्य एवं पूर्व अध्यक्ष : बार कौंसिल उ0 प्र0
सचिव : पी.पी.एन. मेमोरियल सोसाइटी
सिविल लाइन्स, कानपुर
फोन : 2306208, 2306209 मो0 9414161027

"मनुर्भव"

- चन्द्र कान्ता गेरा
महिला संयोजिका- आर्य उप प्रतिनिध सभा, कानपुर
मंत्री- स्त्री आर्य समाज गोविन्द नगर कानपुर
प्रवक्ता- आर्य कन्या इण्टर कालेज गोविन्द नगर कानपुर

मनु शब्द का अर्थ है– मननशील, समझदार, सोचविचार कर कार्य करने वाला व्यक्ति। मानव बुद्धि प्रधान है जबकि पशु–पक्षी भोग प्रधान हैं। परमात्मा ने कृपा करके मनुष्य को विवेक प्रदान किया तथा विवेक का प्रयोग कर सत्य और असत्य,शुभ और अशुभ को जानने के लिए मानव सृष्टि के आदि में ही समस्त ज्ञान भण्डार वेद भी प्रदान किया अब यह मानव के ऊपर निर्भर है कि वेद अनुकूल मार्ग पर चलकर धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के पुरूषार्थ चतुष्टय को जीवन में धारण कर जीवात्मा के अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर ले इसलिए महर्षि वेद व्यास जी ने कहा– **''नाहि मानुषात श्रेष्ठतरं किचिंत''** अर्थात सृष्टि के प्राणियों में मनुष्य से बढ़कर कोई नहीं है।

प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि प्रभु प्रतिनिधि बनकर सृष्टि में मानवता का प्रादुर्भाव एवं प्रकाश करे यही मानव धर्म है, यही उसकी सच्ची मानवता है लेकिन आज न जाने मानव को क्या हो गया है? न वह अपने को मानव कहता है न ही मानवता को अपना धर्म समझता है आज उल्टी गंगा बह रही है। एक कुत्ते से पूछिए तू कौन है? उत्तर मिलेगा कुत्ता , गधे से पूछिए तू कौन है? उत्तर मिलेगा –गधा हूँ, परन्तु आप मानव से पूछिए कि आप कौन है? मैं मानव हूँ ऐसा उत्तर न मिलेगा, कोई कहेगा मै हिन्दू हूँ, कोई कहेगा मैं मुसलमान हूँ, कोई कहेगा मैं ईसाई हूँ आदि। आज मनुष्य–मनुष्य का वैरी हो रहा है एक उर्दू के शायर ने लिखा है–

''सब लुट गया सरे आम सपन बाकी है। अब तो शबनम की जगह तपन बाकी है।
आज आँख भी हैरत में परेशां है, इंसान लापता है कफन बाकी हैं।

अतः वेद कहता है कि मानव बन हिन्दू मुसलमान आदि बनने में वह आनन्द नहीं जो मानव बनने में है जो मानव बनकर समूची मानवता से प्यार करेगा उसका हृदय अति उदार होगा। आज पिता– पुत्र, भाई–भाई, पुत्रवधू और सास आदि के झगड़े छल–कपट, चोरी, झूठ, व्यभिचार, हिंसा आदि ये सब इसलिये हो रहे हैं क्योंकि मानव मानवता से गिर गया है उर्दू शायर ने लिखा है–

''कुरान की आयात से यह आवाज है आती। गीता भी तुम्हें रोज-रोज है यह सुनाती।।

क्या ग्रंथ क्या अजील और क्या वेद हैं कहते। सब एक ही के बन्दे किसी की कोई नहीं जाति।

यह ख्याल मजहब तूने ही नादान बनाया''।।

वस्तुतः मानव बनना संसार में शान्ति स्थापना करने का एक मात्र साधन है। यदि सभी मनुष्य मानव बन जाये, यह मारकाट लूट–खसूट उसी क्षण समाप्त हो जाये किन्तु यह अत्यन्त कठिन है उर्दू शायर अशोक साहिल लिखते हैं–

मुझको मजहब के तराजू में न तोला जाये। मैं तुम्हें अपने उसूलों की कसम देता हूँ।।

मैने इंसान ही रहने की कसम खाई है। मुझको हिन्दु या मुसलमान न समझा जाये।।

आधुनिक मानव क, ख, ग, घ और म वर्णो का शिकार होकर रह गया है इन वर्णो का अर्थ है क से कमाना, ख से खाना, ग से गाना–बजाना, घ से घर बनाना, म से मर जाना अर्थात मनुष्य का जीवन पशु तुल्य है। उसने केवल भौतिक सुख सुविधाओं को अपनाया परन्तु आत्मिक विकास नहीं किया है जीवन में सुख शान्ति एवं आनन्द के लिए यह दोनों ही आवश्यक हैं अकबर इलाहबादी लिखते है–

''हम क्या कहें अहबाब क्या, कारे नुमाया कर गये

बी.ए. हुए, नौकर हुए, पेंशन मिली मर गये।''

अब प्रश्न उठता है कि विश्व में सुख शान्ति एवं आनन्द का साम्राज्य कैसे स्थापित किया जाये। इसके लिए आवश्यक है प्रत्येक मानव का समग्र विकास किया जाये। इसके लिए आवश्यक है पहले प्रत्येक व्यक्ति का आत्मिक सुधार किया जाये फिर उसका चरित्र निर्माण किया जाये। यूनेस्कों के सर्वेक्षण के अनुसार लगभग 65% प्रतिशत अपराधी पारिवारिक कुसंस्कारो से ही बनते है । यदि परिवार में आध्यत्मिक वातावरण कायम हो जाये तो विश्व सुधार स्वयं हो जायेगा। हमारे वेद उपनिषदों ने भी इसी सिद्धान्त को आधार बनाकर स्वकल्याण द्वारा विश्व कल्याण की भावना पर बल दिया है । दुर्भाग्य का विषय है कि संसार में सब कुछ हो रहा है परन्तु यदि नहीं हो रहा तो एक मानव निर्माण नहीं हो रहा। फलो फसलों की किस्में एवं पशु पक्षियों की नस्ल सुधारने की योजनायें तो प्रायः बनती रहती हैं परन्तु मानव निर्माण की योजना कोई भी सरकार नहीं बनाती जैसा कि खुमार बाराबंकी ने लिखा है–

''सब कुछ हो रहा है इस तरक्की के जमाने में, मगर यह क्या गजब है, कि आदमी इंसान नही होता''रूसी भाषा में मैकिसम गोर्की लिखते है जिसका हिन्दी अनुवाद है हम पक्षियों की भाँति आकाश में उड़ना सीख गये और जल में मछलियों की भाँति तैरना भी हमे आ गया परन्तु धरती पर

कैसे रहे हम यह नहीं जान पाये है''

यदि व्यक्ति सच्चे अर्थों में मानव बनना चाहता है तो उसे अपने जीवन में आठों दिशाओं में आठों बल को संचित करना होगा तभी उसका सर्वांगीण विकास होगा। ये बल हैं–1. स्वास्थ्य बल 2. विद्या बल 3. धन बल 4. मित्र बल 5. प्रतिष्ठा बल 6. चातुर्य बल 7. साहस बल 8. आत्म बल।

इसके अतिरिक्त सच्चे अर्थो में मानव बनने के लिए पाँच विकारों काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को नियन्त्रण करके इनके स्थान पर कामना, मन्यु, पुरूषार्थ, गौरव की भावनाओं को अपनाना होगा साथ ही साथ सत्य, सरलता, शुद्धि परोपकार, उदारता, श्रद्धा, विश्वास प्रेम आदि दिव्य गुणों को अपनाकर वास्तविक अर्थो में मानव बन कर सारी सृष्टि का कल्याण करना होगा तभी मानवता का प्रचार प्रसार होगा जिससे समूचे संसार में सुख शान्ति और आनन्द फैल जायेगा–

''तुम न इस संसार को शमशान बनाना सीखो , बल्कि अभिशाप को वरदान बनाना सीखो ।
ठहरो विज्ञान को भगवान बनाने वालो, पहले इन्सान को इन्सान बनाना सीखो।।

आज राष्ट्र के हर कोने से आवाज आ रही है ''सच्चे मानव चाहिए''। हाड़माँस के मनुष्य तो बढ़ रहे हैं परन्तु मानवता के परवाने मानवों का अकाल पड़ गया है। आर्य समाज ही इन पापों से बचाकर सच्ची आस्तिकता द्वारा आदर्श मानवों का निर्माण कर इस अभाव को दूर कर सकता है क्योंकि आर्य समाज मानव निर्माण आन्दोलन है । आर्य समाज मानवता से युक्त मानवों को बनाने का कारखाना है अतः आर्य समाज के दस नियम सार्वभौमिक हैं। मानव धर्म के दस सुनहरे सिद्धान्त हैं– वे धर्म व वेद की सद् शिक्षाओं के सार हैं।

मानवता भवन, मोटर कार, वेशभूषा नौकरी धन–दौलत, डिग्रियों आदि में नहीं है मानवता तो उसके सद्व्यवहार उसके आचरण में निहित है।

आचार्य– चन्द्रशेखर के शब्दों में –

''दर्द दूसरों को जो बाँटे उसे शैतान कहते हैं।
दर्द दूसरों का जो बाँटे उसे इंसान कहते है।
गिरतों को न उठाये कोई गम नहीं
किसी को गिरने ही ना दे, ये भी तो कोई कम नहीं।
देवता न बन सके कोई गम नहीं
मनुष्य ही बन जाये यह भी तो कोई कम नहीं।।''

वैदिक आर्यो की सभ्यता

-आनन्द स्वरूप आर्य
पूर्व प्रधान- आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर नगर

धर्म अर्थ काम और मोक्ष आर्यों की सभ्यता की आधार शिला है। आर्यों ने वेदों के माध्यम से अपनी सभ्यता को विकसित किया। उन्होंने अपना अन्तिम ध्येय मोक्ष को ही माना है। संसार का तत्व ज्ञान और उसका उचित उपयोग ही मोक्ष का साधन है। इसीलिये आर्यों ने संसार का उपयोग करते हुए मोक्ष प्राप्त करने की विधि को अपनी सभ्यता का मूल ठहराया है और उस विधि को चार भागों में धर्म, अर्थ, काम मोक्ष के नामों से विभक्त किया है। इस लेख में काम की प्रधानता पर प्रकाश डाला गया है।

काम की प्रधानता

आर्य सभ्यता के प्रधान चार स्तम्भों में काम का बहुत बड़ा महत्व है। काम और अर्थ एक दूसरे के पूरक है। काम ही अर्थ को मर्यादित करता है। यदि मनुष्य काम को मर्यादित न करे तो वह अर्थ को मर्यादित कर ही नहीं सकता। और न अर्थ मर्यादा के कभी मोक्ष प्राप्त कर सकता है। इसलिये आर्यो ने काम के विषय में बड़ा गम्भीरता से विचार किया। संसार में आज तक आर्यों के अतिरिक्त किसी भी सभ्य जाति ने इस अर्थ शुद्धि की मूलाधार काम पर इतना विचार नहीं किया। सबने अर्थ और काम को एक में मिला दिया, परन्तु आर्यों ने इन दोनो को पृथकता से विचार किया। आर्यों ने शरीर से सम्बन्ध करने वाले अर्थ को और मन से सम्बन्ध रखने वाले काम को एक दूसरे से पृथक कर दिया है। जिस प्रकार शरीर से सम्बन्ध रखने वाले भोजन, वस्त्र, गृह और गृहस्थी को अर्थ के अन्तरगत कर दिया है उसी तरह मन से सम्बन्ध रखने वाले ठाट–बाट, शोभा, श्रृङ्गार, स्त्री, पुत्रादि को काम के अन्तर्गत कर दिया है, क्योंकि ये सभी पदार्थ मन संतुष्टि के लिये है।यदि अपना मन काबू में हो तो इन में से एक भी पदार्थ की आवश्यकता नहीं है, लेकिन इन सब से मन को एकदम हटा लेना बहुत ही कठिन हैं शोभा, श्रृङ्गार, ठाट–बाट से एक बार मन को हटा भी लिया जाय, परन्तु पुरूष को स्त्री से और स्त्री को पुरूष से मन हटाना बड़ा ही दुस्तर हैं सच पूछो तो स्त्री पुरूष के स्वाभाविक बन्धन को ही काम कहा गया है। यही कारण है कि मानस शास्त्र का प्रसिद्ध ज्ञाता शार्ङ्गधर काम का लक्षण करता हुआ लिखता है कि –

स्त्रीषु जातो मनुष्याणां स्त्रीणां च पुरूषेषुवा । परस्परं कृतः स्नेहः काम इत्यभि धीयते।।

अर्थात् स्त्रियों में पुरुषों का और पुरुषों में स्त्रियों का जो परस्पर स्वाभाविक स्नेह है उसी

को काम कहते है।

स्त्री–पुरूष का इस पारस्परिक स्नेह और स्वाभाविक आर्कषण के दो कारण हैं–पहला कारण तो यह है कि मनुष्य अनन्त जन्म–जन्मान्तरों से अनेक योनियों में स्त्री–पुरूष शक्ति के सम्मेलन के ही द्वारा पैदा होता हुआ और उसी सम्मेलन के द्वारा अन्य जीवों को पैदा करता हुआ चला आ रहा हैं। दूसरा कारण यह है कि वीर्य में पड़े हुए जीवों के भोग जीवों को बाहर निकालने और नवीन शरीर धारण करने की प्ररेणा करते है। इन्ही कारणों से स्त्री पुरूष में एक विलक्षण आकर्षण उत्पन्न होता है और मनुष्य रति करने के लिये विवश हो जाता है। यह प्राणी मात्र का अनादि अभ्यास है। किन्तु मनुष्य के लिये यह अभ्यास अच्छा भी है और बुरा भी है। इस अभ्यास से जहाँ आर्य सभ्यता का सम्बन्ध है वहाँ तक तो अच्छा है, परतु जहाँ अनार्यता का संचार होता है, वहाँ से इस का रूप भयंकर हो जाता है। मन को काबू रखकर और आवश्यक सन्तान को उत्पन्न करके उसको मोक्ष मार्गी बनाना आर्य सभ्यता है। परन्तु शोभा श्रृङ्गार ठाट–बाट के द्वारा कामुकता को बढ़ाकर अनावश्यक सन्तान को उत्पन्न करके राष्ट्र के लिये एक सकंट उत्पन्न करना अनार्य सभ्यता है। पच्चतन्त्र में विष्णु शर्मा ने ठीक कहा है कि

निःस्पृहो नाधिकारी स्यन्नाकामी मण्डनप्रियः। ना विदग्धः प्रियं बूयात्स्फुटवक्ता न वन्चकः।।

अर्थात् निःस्पृह मनुष्य अधिकारी नहीं होता बनाव चुनाव और शोभा श्रृगांर प्रिय मनुष्य अकामी नहीं होता, मूर्ख कभी प्रिय बोलने वालों नही होता और स्पष्ट बोलने वाला वन्चक नहीं होता। अतः आर्यों ने सन्तति निरोध के लिये इन्द्रियनिग्रह, संयम और अखण्ड ब्रह्मचर्य को धारण किया जाय, अपनाया। वहीं पर पाश्चात्य विद्वानों ने सन्तति निरोध के तीन तरीके निश्चित किया। पहला तरीका में कुछ ऐस यन्त्रो का प्रयोग किया जाय, जिस से गर्भ ही न ठहरे। दूसरे में ऐसी औषधियाँ खा ली जायें कि जिस से सन्तान उत्पन्न होना ही बन्द हो जाय। तीसरा तरीका संयम और ब्रह्मचर्य का पालन किया जाय। यन्त्रों और औषधियो से अनेक प्रकार की व्याधियाँ उत्पन्न हुयीं जिसके कारण लाखों स्त्री पुरूष दुःख उठा रहें हैं। इन्द्रिय निग्रह साधारण मनुष्य का काम नहीं है।

इन जटिल समस्याओं से निपटने के लिये आर्यों ने कुछ नीतियां बनायी जिनका पालन करके गृहस्थ जीवन, सामाजिक जीवन सुखमय हो सके। इसके अन्तर्गत आर्यों ने आश्रम व्यवस्था तैयार की। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास, आश्रम के अन्तर्गत ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और सन्यास के पचहत्तर वर्ष अखण्ड ब्रह्मचर्य अवस्था बिताने के लिये जोर दिया हैं। गृहस्थों को अधिक रति से बचने के लिये यज्ञोपवीत संस्कार, सन्ध्योपासना, प्राणायाम, सादगी तपस्वी जीवन और मोक्ष मार्ग का ध्येय बतलाकर अमोध वीर्यत्व सम्पादन करने का उपदेश दिया। निरोध की शक्ति अमोध वीर्य

पुरूष में ही हो सकती है और वही आवश्यकतानुसार एक दो या दस सन्तान कर सकता है और यदि चाहे तो सन्तान का उत्पन्न करना एकदम बन्द कर दे। आर्य सभ्यता के इतिहास में इस प्रकार के प्रजा उत्पन्न करने के तीन सिद्धान्त हैं और तीनों के ऐतिहासिक प्रमाण मिलते हैं।

पहला प्रमाण ऐसे महापुरूषों का मिलता है जिन्होंने सन्तान उत्पन्न ही नहीं की और सीधे मोक्ष मार्ग का अवलम्ब किया। वृहदारण्यक उपनिषद में लिखा है कि

पूर्व विद्वयंसः प्रजा न कामयन्ते कि प्रजया करिष्यामः।

अर्थात् पूर्व समय मे विद्वान लोग संतान की कामना ही नहीं करते थे। ऐसे आजीवन ब्रह्मचारी इस देश मे हजारों लाखों हो चुके है। मनुस्मृति में लिखा है–

अनेककानि सहस्त्राशिा कुमार ब्रह्मचारिणाम्। दिवं गतानि वि प्राणामकृत्वा कुल सन्ततिम्।।

अर्थात् हजारों ब्राह्मण ब्रह्मचारी बिना सन्तान के कुमार अवस्था से ही मोक्षमार्ग हो गये। इतना ही नहीं पूर्व काल में कन्यायें भी कुमारी रहकर आजन्म ब्रह्मचारिणी रहकर मोक्ष भागिनी होती थी।

महाभारत में लिखा है कि लोमश ऋषि युधिष्ठिर से कहते है–

अत्रैव ब्राह्ममणी सिद्धा कौमर ब्रह्मचारिणी। योग युक्ता दिवं यात्रा तपः सिद्धा तपस्विनी।।
वभूव श्रीमती राजन शांडीलस्य महात्मनः। सुता धृतवती साध्वी नियता ब्रह्मचारिणी।।
सातु तप्तवा तपो धोरं दुचरं स्त्री जनेन च। गता स्वर्ग महाभाग देव ब्राह्ममण पूजिता।।

(महा. शल्य. अ. ५४)

अर्थात इसी स्थान में शांडिल्य ऋषि कन्या धृतवती ने आजन्म ब्रह्मचारिणी रहकर और विद्वानों से सत्कृत होकर मोक्ष लाभ किया था। यही नहीं भरद्वाज की पुत्री श्रतावती ने भी आजन्म ब्रह्मचर्य पालन किया था। याज्ञवल्कय और मैत्रेयी ने विवाह कर के सन्तान उत्पन्न नहीं किया। इन ऐतिहासिक प्रमाणों से पाया जाता है कि आर्य लोग आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करके मोक्ष प्राप्त करते थे। अथर्ववेद में लिखा है–

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युम पाध्नतं

अर्थात तपस्वी विद्वान आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत से ही मृत्यु को मार कर मोक्ष प्राप्त करते हैं। यह महाव्रत है। सब के मान का नहीं है सब मनुष्य तो संतान की इच्छा ही करते हैं। इस लिये दूसरे प्रमाण भी मिलते हैं। इससे दो लाभ हैं। पहला लाभ तो यह है कि इस से सृष्टि क्रम बना रहेगा, गृहस्थाश्रम कायम रहेगा, जिसके आश्रित सारा मनुष्य समाज जीविका प्राप्त करता है। दूसरा वीर्य मे पड़े जीव बाहर आकर मोक्ष मार्गी होकर साधना करते हैं। इसलिये यह आवश्यक है कि योग्य पुरूष एक या दो संतान अवश्य उत्पन्न करें और शिक्षा दीक्षा से योग्य बना कर समाज

का कल्याण करें, मार्ग दर्शन दें। यह बात आर्य सभ्यता में बड़े महत्व की है और आर्य समाज को बलवती बनाने वाली है।

स एव धर्मज पुत्रः काम जानि तरान्विदुः।। (मनु ६/१०७)

अर्थात् पहला पुत्र धर्मपुत्र और दूसरा काम होता है। वेद स्वयं आज्ञा देता है कि बहुत सी सन्तान उत्पन्न नहीं करना चाहिये।

बहु प्रजा निर्ऋतिमा विवेश (ऋ.१/१६४/३२)

अर्थात बहुत सन्तान वालों को बहुत दुःख उठाना पड़ता है।

सना अत्र युवतयः सयोनिरेक गर्भ दधिरे सप्त वाणीः।

अर्थात सप्तपदी (विवाह) की हुयी स्त्रियां एक ही गर्भ धारण करे। सामाजिक आवश्यकता पूर्ति के लिये आर्यों को एक ही संतान उत्पन्न करने की आज्ञा है। परन्तु ऋग्वेद ने दत्तक पुत्र गोद लेने का निषेध किया है।

नहि ग्रभायारणः सशेवोण्न्योदर्यो मनसा मन्तवाउ अधाचिदोक पुन रित्स एत्या नो वाज्यभी षाडेतु नव्य।
(ऋ.७/४/८)

अर्थात् जो दूसरे के पेट से उत्पन्न हुआ है उस को कभी अपना पुत्र नहीं समझना चाहिये। वहीं पर वेद नियोग द्वारा सन्तानोत्पत्ति की आज्ञा देता है। राष्ट्रीय हित में दो से भी अधिक सन्तान पैदा की जा सकती हैं। आपत्ति के समय के लिये वेद में **दशास्या पुत्रानाधेहि** अर्थात दस पुत्रों तक उत्पन्न करने की प्रार्थना की गयी हैं। इस प्रकार अमोध वीर्यत्व की शक्ति आर्यो की विशेष उपज है। इस शक्ति के उत्पन्न होने पर काम वासना अपने आप भाग जाती है। उसमें वह शक्ति आ जाती है कि जब चाहे सन्तान पैदा करें, जब चाहे न करें। वेद व्यास ने जब चाहा धृतराष्ट्र पाण्डु और विदुर को जन्म दिया और जब चाहा इस कृत्य से बिलकुल अलग हो गये। यह अमोध वीर्यत्व शक्ति प्राप्त करने के लिए श्रृंगार वर्जित, सादा, तपस्वी और मोक्षा भिमुखी जीवन बिताना पड़ता है। जो आज के परिपेक्ष मे असंम्भव सा प्रतीत होता है। पश्चात्य संस्कृति एवं सभ्यता से ओत प्रोत विद्वान लोग श्रृंगार मण्डित जीवन की अवस्था में ही केवल यन्त्रों के सहारे केवल सन्तति निरोध कराना चाहते हैं। वह सुखपूर्वक सन्तति निरोध नहीं कर सकते। क्योंकि यन्त्रो और औषधियों के द्वारा प्रयोगकर्ताओ को रोगी हो जाना अनिवार्य है। अगर इसको मान भी लिया जाय तो वह उतना ही पाप है जितना गर्भपात से होता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि आर्य सभ्यता में अमोध वीर्यत्व शक्ति द्वारा मन चाही एक या दो या न सन्तान पैदा की जाती है। यही सिद्धान्त ऋषियों द्वारा प्रतिपादित और वेदानुकूल हैं आशा है पाठक वृन्द आर्य जीवन को सुख समृद्धि और आनन्द से परिपूर्ण करेंगे।

चार वेद छैः शास्त्र में लिखी है बातें दोय।
दुःख दीन्हें दुःख होत है, सुख दीन्हें सुख होय।।

संकट मोचन भवन

VKE

वी.के.इण्टरप्राइज

शूटिंग

शर्टिंग

लेडीज सूट

49/8-9 जनरल गंज, कानपुर – 208 001

दुकानः 0512–2302266, 2377509, 3017230, 3291439, मो.: 919839033796

फैक्स : +91–512–2391343, निवास : 0512–2306430, 2306452

स्वास्थ के लिये शाकाहारी या मांसाहारी भोजन

- डॉ. रवीन्द्र कुमार तोमर
एम. बी. बी. एस.

"एक वैज्ञानिक विश्लेषण"

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद जहां अन्य दिशाओं में देश को निराशा का सामना करना पड़ा है वहाँ सबसे अधिक निराशाजनक वातावरण खान–पान के विषय में दिंखायी पड़ता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व अण्डे, मांस मदिरा का सेवन शिष्ट जनानुमोदित आचरण का अंग नहीं माना जाता था। उस समय के अभिजात वर्ग में भी इन चीजों के प्रति वितृष्णा थी, आम जनता तो घृणा करती ही थी। आज स्थिति बदल गयी है मॉंसाहारी भोजन (Non Vegeta rian Diet) एक (Status Symbol) बन गया है और सामान्य जन भी प्रवाह पतित तिनके की तरह विवश होकर इसी विचार धारा में बहा जा रहा है। आज का चिकित्सक वर्ग भी अपने आपको इस धारा में बहने से नहीं रोक पा रहा है।

क्या मॉंस मनुष्य का स्वाभाविक भोजन है? आइये इस पर विचार करें–

1. जीव विज्ञान (BIOLOGY) की राय में
2. शरीर विज्ञान (ANATOMY & PHYSIOLOGY) की राय में
3. मनोविज्ञान (Psychology) की राय में
4. धर्म शास्त्रों (Scriptures) की राय में

1. **जीवन विज्ञान की राय में :–**

डार्विन की विकास वाद की परिकल्पना (Theory) के अनुसार मनुष्य का विकास वानर जाति से हुआ जो मॉंस नहीं खाते थे अतः ये कैसे संभव है कि शुद्ध शाकाहारी पूर्वजों की सन्तान मॉंसाहारी हो।

2. शरीर विज्ञान की राय में :–

(अ) मांसाहारी जानवरों के Canine teeth लम्बे और नुकीले (Sharp) होते हैं

(ब) मांसाहारियों के जबड़े केवल उपर नीचे खुलते हैं अतः चबा नहीं सकते।

(स) आहारनाल छोटी होती है

शाकाहारियों की आहारनाल लम्बी होती है क्योकि शाक सब्जियों में Roughage अधिक

होता हैं इसे पचाने के लिए नली में देर तक रहना पड़ता है।

(द) मुंह की लार (Salive)

शाकाहारी – Alkaline (क्षारीय) – इसमें Ptyalin होता है जिससे Starch सलाह का पाचन होता है।

मांसाहारी– Acidic (अम्लीय) – Ptyalin नहीं होता है।

(य) Acid Sercretion - माँसाहारी में 10 गुना अधिक होता है।

(र) तेज पँजे और उँगलियां तलवार मार्का नाखून– शिकार पर आक्रमण करने के लिये।

3. **मनोविज्ञान की राय में :–**

Prof Mc Donnel के अनुसार ''जन्म से मिले हुए कुदरती झुकाव को स्वभाव कहते हैं।'' मनुष्य का बच्चा जन्म से माँस से प्रेम नहीं करता। माँस खाना बाद में सीखता हैं और बाद में सीखी हुयी बात को आदत कहते है न कि स्वभाव।

4. **धर्मशास्त्रों की राय में :–**

वैदिक धर्मशास्त्रों ने शाकाहार को ही मनुष्य का स्वाभाविक भोजन माना हैं। उपरोक्त तर्को से सिद्ध होता है कि माँस मनुष्य का स्वाभविक भोजन नहीं। फिर भी माँसाहार का इतनी तेजी से प्रसार क्यों? प्रायः प्रत्येक मनुष्य का जवाब होता है–डॉक्टर लोग मॉस खाने की सलाह देते हैं। एक चिकित्सक होने के नाते मुझे अक्सर इस तरह के प्रश्नों का सामना करना पड़ता है। क्योंकि लोग माँस खाते हैं अतः डाक्टर उन्हें माँस खानें की सलाह भी देते हैं डॉक्टरों को माँस की सलाह देने की एक आदत सी बन गयी है लेकिन क्या सभी डाक्टर माँस खाने की सलाह देते हैं शायद नहीं? कारण–उनका उद्देश्य पोषक तत्वों की पूर्ति करना है शाकाहार या माँसाहार हो।

यदि लोगो की मनोवृत्ति बदली जाये तो चिकित्सक वर्ग भी अपने मस्तिष्क को अन्य पदार्थों की खोज में लगायें और माँसाहार की ओर प्रेरित न करे।

दुर्भाग्य से प्रचार माध्यमों व पाठ्य पुस्तकों द्वारा इस प्रकार का भ्रम पैदा कर दिया गया है कि माँस ओर अँडे में ज्यादा ताकत होती हैं।

किसी भी भोज्य पदार्थ में निम्नलिखित तत्व होते हैं –

(1) प्रोटीन (Protean) (2) कार्बोहाइड्रेट (Carbohydrate)

(3) वसा (Fate) (4) विटामिन (Vitamins)

(5) खनिज तत्व (Minerals) (6) कैल्शियम (Ca) लोहा आदि (Fe)

तालिका – 1

भोज्य पदार्थों की प्रति 100 ग्राम मात्रा से प्रोटीन और कैलोरीज की प्राप्ति।

भोज्य पदार्थ	कैलोरीज	प्रोटीन (ग्रा.)
1. अण्डा	160	12.8
2. माँस (Mutton)	109	19
3. दाल	350	25
4. गेहूं	350	12.0
5. सोयाबीन	330	35
6. दूध (स्किम्ड) पाउडर	360	38
7. दूध	115	4.3

उपरोक्त तालिका से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि अण्डे और मीट के मुकाबले दालों से ज्यादा प्रोटीन प्राप्त होती है। एक नयी शंका चिकित्सों द्वारा लोगों के दिमाग में पैदा कर दी गयी है। कि अण्डे और मांस की प्रोटीन 'A' श्रेणी की और सब्जी और दाल की 'B' श्रेणी की होती है।

प्रोटीन की श्रेणी निश्चित करने के लिये कुछ मापदण्ड (Parameties) का इस्तेमाल किया जाता है।

क) Biological Value - $\dfrac{\text{Retained Nitrogen}}{\text{Absoibed Nitrogen}}$

=

ख) Protein efficiency Ratio -

$$= \frac{\text{Weight gain (वजन में बढ़ोत्तरी)}}{\text{Protein Consumed (भोजन में प्रोटीन की मात्रा)}}$$

तालिका – 2

Protein Source	Biological Value
1. दूध	93

2.	अण्डा	93
3.	मांस (Beef)	76
4.	दाल	74

अतः दूध की प्रोटीन 'A' श्रेणी की है। दाल की प्रोटीन ज्यादा मात्रा में लें तो पूर्ति हो जाती है।

दूध और अण्डे का तुलनात्मक अध्ययन

	कैलोरी (ऊर्जा)	प्रोटीन (ग्रा.)	कार्बो० (ग्रा.)	वसा	विटामिन B	विटामिन C	कैल्शियम
दूध (1कप)	144	10	145	5	0.09	2.5	386
अंडा एक	70	6	0	5	0.05	0	24

दूध एक पूर्ण भोज्य पदार्थ है। (Complete Food) जबकि अण्डा नहीं क्योंकि अण्डे में कार्बो और विटामिन 'सी' नहीं होता।

इसके अलावा माँसाहार का एक ऋणात्मक पहलू भी है माँस खाने से शरीर में रोगों का तांता सा बंध जाता है।

(1) Medical Effects
Hyper acidity (अति अम्लीयता) पेट में घाव बन जाते है।

(2) Constipation (कब्ज) कब्ज की वजह से बवासीर (Piles) और हेर्निया (Hernia) की बीमारी हो जाती है।

(3) High Blood Pressure (Hypertension) माँस में Cholesterol नामक तत्व होता है जो रक्त वाहिनीयों में जमा हो जाता है।

(4) पशु रोगों की छूत Taeniasis (फीताकृमि की बीमारी)

(5) विटामिन B की कमी।

(6) Appendicites (अपेन्डिसाइटिस)

(7) अन्य रोग जैसे – Gout
Rheumatoid arthritis
Migraine

Typhoid

2. Social Hazaede

(1) स्वभाव में कट्टरता।

(2) डॉ. हेग ने अपनी पुस्तक [Diet & Food] में लिखा है कि इंग्लैण्ड में माँस और शराब का अधिक प्रयोग है अतः आत्महत्या अधिक है और स्काटलैंड में कम है इसलिये कम................ ।

देश का दुर्भाग्य है कि उसकी बागडोर अवैदिक और विकृत मान्यताओं द्वारा संचालित हो रही है। माँस भक्षण की इस बढ़ती हुयी प्रवृत्ति के लिये आखिर दोषी कौन है? हमारी सरकार की अदूरदर्शी योजनायें।

– मुर्गी और मत्स्य पालन को प्रोत्साहन।

– पाठ्य पुस्तकों और प्रचार माध्यमों द्वारा अण्डे, माँस को संतुलित आहार का अनिवार्य अंग सिद्ध किया जाना इत्यादि।

''गतानुगतिको लोको न लोकः परमार्थिकः।''

जनता भेड़ चाल की तरह आँख बन्द करके इस बहलावे में आ रही है। आर्य समाज का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बन्द पन्नों का नहीं खुले पृष्ठों का इतिहास है। राष्ट्र में फैले अकर्मण्यता, अज्ञान और दासता के अखण्ड साम्राज्य को जड़ मूल से हिलाने, जन–जन में चेतना और साहस फूँकने में आर्यसमाज अग्रणी रहा है। आज फिर आवश्कयता है ''माँसभक्षण रूपी '' चुनौती को स्वीकार करने की और इसके खिलाफ राष्ट्रीय स्तर पर जेहाद छेड़ने की।

आइये हम सभी आर्य –

– देश के सभी प्रमुख समाचार पत्रों में जनवाणी के माध्यम से लोगों की मनोवृत्ति में परिवर्तन लाने की कोशिश करें।

– प्रचार माध्यमों में विज्ञापन के विरोध में सम्बन्धित अधिकारियों को लिखें।

– निजी स्तर पर माँसभक्षण के खिलाफ वातावरण उत्पन्न करने का प्रयास करें।

संश्रुतेन गमेमहि

।। हम वेद मार्ग पर चले।।

BRIEF PROFILE OF MR. B. K BHARTIYA

Curtsy by-Ved Prakash Arya
Advocate

Mr. B. K. Bhartiya, B. Sc. (Engg.) is the Chariman & Managing Director of M/s Kishore Bandhu (P) Ltd. a leading construction company of northern India. After graduating in Electrical Engineering in 1960 from BIT Mesra, Rachi, he started developing an industrial house, covering all types of business activities. His vision of industrial outlook and financial management with engineering background, has lead the organization to outstanding level of success and regular business growth. M/s Kishore Bandhu (P) Ltd. was first to introduce group housing & multi-storied building culture in Kanpur town.

Being a great philanthropist, he is very social and kind hearted person. Mr. Bharitya is a very well known personality not only in Kanpur but in the entire state of Uttar Pradesh. He has been awarded the prestigious ***'Kanpur Ratna"*** *award. He is the past* ***Chairman of Cawnpore Club****, past Secretary of* ***Kanpur Golf Club*** *and past President of* ***Rotary Club of Kanpur*** *and he was also the Past President of* ***Merchants Chamber of Uttar Pradesh****. At present he is president of* ***Gram Udyog Mandal, Kanpur.***

Mr. Bhartiya was the past ***North Zone Chairman of Builders Association of India.*** *He is also member of* ***Delhi Golf Club and Delhi Gymdkhana Club.***

He is very active member of ***Arya Samaj****. His late father Shri. N. K. Bhartiya was very staunch follower of* ***Maharshi Dayanand*** *in Bhartiya family tradition of daily yoga is continuing for over 90 years.*

Contribution of Arya Samaj to our Hindu Samaj & to our Nation

- S.C. Gupta, Mumbai

1. **Swami Dayanand**, founder of Arya Samaj, wanted to rebuilt the entire Indian Nation & Hindu Society in a New Mould where every Hindu / Arya had to believe firmly that this country **" BHARATVARSH"** is their own land.
2. **He believed & proved that in our Vedas** there was NO SUCH things as UNTOUCHABILITY & he & through his Arya Samaj he succeeded in launching a Great movement against. Untouchability which was followed up & taken up by Gandhiji & Congress in a BIG way during our Freedom struggle & post - independence.
3. **Child Marriages :** In Maharishi Dayanand's days, the child marriages were a very common factor. Maharishi Dayanand & his Arya Samaj propagated against the curse from our Hindu Society.
4. **Arya Samaj Launched against yet another related curse of Hindu Society, namely, marrying more than one wife / POLYGAMY** : Arya Samaj through **Magical Lantern** "Arya Pracharaks who travelled widely deep into the villages & towns successfully removed this evil from our Hindu Society.
5. **Arya Samaj Successfully fought with the orthodox Brahmin Community** & Established that there was no example in the Vedas to worship the idol as God is **OMNIPOTENT, OMNI-PRESENT & FORMLESS**, once it is omnipresent, it cannot be confined under lock & key any where and Shri Ram & Shri Krishna are our God like reality who had never- never committed any sin or any wrong doings, hence only, Arya Sajam regards them as maryada purshottom, Great Aryan but not as Ishwar.
6. **Dayanand & Arya Samaj pleaded with the orthodox hindu community to return to Vedas** in true sense & to follow its dictates. He organized to obtain the original Vedas from Germany & translated them in simple Sanskrit & Hindi along with his famous Book, **"Rigved Bhashya", Solah Sanskars'** etc.
7. **Aryasamaj propagated that all peoples are born equal** & no one is Brahmin, Vaishya, Kshatriya or Shudra by birth, but these are according to the profession one chooses and each of these sects are complimentary to each other & none is superior or

inferior to the other.

8. **Aryasamaj infused a thought amongst our Hindu Society** that the West has NOT contributed anything towards the emancipation of our country's welfare, rather then West owe to us for everything, every progress which they unjustifiably claim of theirs, including the invention of **"Zero"**.
9. **Arya Samaj believed in a National Religion, based on INTENSE DEDICATED, TRUE, SELFLESS, FEARLESS NATIONLISM**, a thought which it propagated amongst all the Hindus of India, preparing for Self - Rule & Freedom, based on equality ; its details are enshrined in **"Satyarth Prakash"** by Maharishi Dayanand Saraswati. This was his life's greatest mission.
10. **Brought about widows re-marriages amongst the Hindus.**
11. **Stopped the most barbaric & most orthodox "Sati-Pratha" amonst the Hindus of our country.**
12. **Arya Samaj hit hard on the Blind faiths of Hindu Society** & Awakened them of these fake / false Blind faiths which were spread amongst Hindu Society falsely by various orthodox Hindu organizations.
13. **Shuddhi Prachaar of Arya Samaj was & still the Greatest contribution to Hindu Society**, thereby bringing back our brothers & sisters whom we had lost to other religions owing to our orthodox faiths.
14. **Spread of education** to all irrespective of one being a boy or girl, of being a Brahmin or of other so called castes. Arya Samaj played its greatest role in starting women's Education every where.
15. **In the field of Education again Arya Samaj played its greatest role in strengthening Hindu Society**.
16. **Arya Samaj opened its first Orphanage in Firozepore**, followed by a chain of Orphanages all over the country so that our orphans may not adopt other religion like Islam or Christi anity.
17. **In the same way, Arya Samaj opened homes for the widows** & Destitute womens to accommodote, trained them in some useful profession & to get them married to suitable partners in course.
18. **Arya Samaj succeeded in removing the Parda System from our Hindu Society** and Brought Hindu women at par with men-folk. Hindu woemn of today greatest Debt to Arya Samaj : If Indian women could be seen in All walks of our lives & in political

scene, all credit goes to Arya Samaj only else even our Freedom struggle would NOT have been that Success.

19. **Aryasamaj launched a movement successfully that studying of Sanskrit, Vedas & Upnishadas is not restricted to Brahmins alone but every casts had equal Rights to study these.**
20. **Arya Samaj gave Rights to wear Yogopaveet to every Hindu irrespective of one's birth.**
21. **In those days, any Hindu Travellers oversease**, had to undergo penance & give away a lot of gifts to Orthodox Brahmins for allowing them to re-admit to Hindu Dharma, but Arya Samaj got rid of such ills from Orthodox Hindu Society.
22. **Hindu Women have to pay back to Arya Samaj the Greatest**, as if Aryasamaj had NOT come forward to improve their Social Rights, rights to educate themselves, right to read Vedas, Upnishads, Remarriages, equal rights as per men's abolition of Dowery system, equal opportunity to select their partners etc.
23. **Arya Samaj first time told the Hindu Society** the difference of the meaning of good Governance & "Own Independent Rule" & instigated people to demand self / own independent rule & to throw away the foreign yoke of Slavery of the Britishers. Arya Samaj was the only First organization under Swami Dayanand who announced for the First Time that Bharatvarsh is only of Bharatvasies.
24. Arya Samaj emphasized on Swadeshi & patronishing of Swadeshi Products only amongst all the Hindu community.
25. **If Hindi** remains the main stay of our freedom struggle, it was because of Arya Samaj, even today, Arya Samaj can take this credit. Maharishi Dayanand who was a Gujrati, wrote & spoke in Hindi only.
26. **Arya Samaj gave to Hindu Orthodox Society** great Thinkers & Fearless National Leaders, Krantikaries, like : **Lala Lajpat Rai, Lokmanya Bal Gangadhar Tilak, Bipin Chandra Pal, Shri Arvind Ghosh, Bhai Parmanand, Bhai Shyamji Krishna Vermna, Ram Prasad Bismil, Bhai Bal Mukund, Madanlal Dingra, Madan Mohan Malviye, Bhagat Singh, Krantiveer Bhai Mahaveer, Sufi Amba Prasad, Veer Savarkar, Swami Shraddhanand & Pandit Lekhram & others.**
27. Arya Samaj always believed that begging is a worst thing, it is never liked by any one, rather it demoralize the beggar never - never anything is achieved by begging or on knees bent ; hence Arya Samaj insisted the Hindu Society as a whole to stand on its own feet, on its own good deeds & to muster Courage, to come forward selflessly to sacrifice one's life for the Nation.

With Best Compliments From.........

: 9935464440
: 7607454440

SS®

Technology One Step Ahead

ISO-9001-2000

Products Range

Electronic Voltage Corrector
Digital Voltage Corrector
Servo Stablizers Single Phase - Servostablizers Three Phase
All Solar System of L.E.D. Product

Marketed By :

SCIENTIFIC

Enterprises

133/189 'O' Block, Kidwai Nagar Near P.N.B., Bank, Juhi, Kanpur

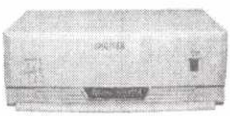

Courtesy By Shri Sabhajeet Singh Juhi Arya Samaj

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, कानपुर द्वारा आयोजित महर्षि दयानन्द जयन्ती समारोह की झलकियाँ

महर्षि दयानन्द जयन्ती पर उपस्थित विद्वान एवं अतिथिगण

महर्षि दयानन्द जयन्ती के समारोह पर उपस्थिति आर्य कन्या इण्टर कालेज, गोविन्द नगर की छात्राएँ

सन् 2011 के दयानन्द जयन्ती समारोह में मंचस्थ पदाधिकारी गण एवं अतिथि गण

सन् 2011 के दयानन्द जयन्ती पर भजनोपदेशक श्री संजीव रूप जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते श्री शुभ कमार बोहरा व बीच मे तत्कालीन प्रधान श्री वेदप्रकाश आर्य

सन् 2011 के दयानन्द जयन्ती समारोह में श्री शुभ कुमार वोहरा का स्वागत करते श्री सतीश कुमार आर्य

सन् 2011 दयानन्द जयन्ती समारोह स्वरूप नगर आर्य समाज के कोषाध्यक्ष श्री अशोक आनन्द जी व अन्य अतिथि गण

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, कानपुर द्वारा आयोजित वेद प्रचार सप्ताह कार्यक्रम

मुख्य अतिथि एवं वक्ता पं० महेन्द्र पाल आर्य जी का स्वागत करते श्री शिवकुमार आर्य।

वेद प्रचार सप्ताह के कार्यक्रम में उद्‌बोधन करते पं० महेन्द्र पाल जी आर्य

वेद प्रचार सप्ताह कार्यक्रम में मोमबत्ती जलाकर ''अन्ना हजारे जी'' का समर्थन करते पदाधिकारी एवं छात्राएँ

आर्य उपप्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित वेद प्रचार सप्ताह के कार्यक्रम में भजन प्रस्तुत करते श्री प्रभात कुमार जी आर्य।

वेद प्रचार सप्ताह कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के साथ विराजमान आर्य उपप्रतिनिधि सभा के पदाधिकारी गण

आर्य समाज गोविन्द नगर के संयुक्त वार्षिकोत्सव में आचार्य सोमदेव जी, श्री अशोकपुरी का स्वागत करते हुए

ऋषि दयानन्द कृत वेदभाष्य का वैशिष्ट्य

- आनन्द जी आर्य
पूर्व मन्त्री-आर्य उप प्रतिनिधि सभा, कानपुर

सत्य सनातन वैदिक धर्म पर आस्था रखने वाले सब मनुष्यों का एक यह स्वीकृत मत है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। सृष्टि के आदि में मनुष्य के वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय अथवा विश्व विषयक कर्त्तव्यों का यथार्थ ज्ञान वेदों के माध्यम से परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा ऋषियों के पवित्रान्तःकरण में प्रकाशित किया। मनु महाराज का कथन है – **''वेदोऽखिलो धर्ममूलम्। 2.6।** वेद धर्म का मूल है। अत्रि स्मृति का पक्ष है – **'नास्ति वेदात्परं शास्त्रं**– वेद से बड़ा कोई शास्त्र नहीं है। **वृहदारण्यकोपनिषद** में स्पष्ट कहा – **"एतस्य वा महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद् यदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः।''** अर्थात् ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद उस महान परमेश्वर के मानो श्वास निकले है। ऐतरेय ब्राह्मण भी वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानते हुए कहता है – **''प्रजापतिर्वा इमान् वेदानसृजत''** प्रजा के कल्याण के लिये परमेश्वर ने वेदों का निर्माण किया। इसी प्रकार समस्त दर्शनकार यहाँ तक कि कपिल मुनि भी जिन्हे भूलवश कुछ विचारक नास्तिक मानते हैं, वे कहते – **''निजशक्त्यभिव्यक्तेः स्वतः प्रामाण्यम्।'',** ईश्वरीय शक्ति से अभिव्यक्त होने के कारण वेद स्वतः प्रमाण हैं। महाभारत, रामायण आदि ग्रन्थ भी वेदों की प्रशंसा से ओतप्रोत हैं। महात्मा बुद्ध को भी कहना पड़ा – **''विद्वा च वेदेहि समेच्च धम्मं, न उच्चावचं गच्छति भूरिपञ्जो।** सुत्तनिपात – 292। अर्थात् जो विद्वान वेदों द्वारा धर्म का ज्ञान प्राप्त करता है वह जीवन की ऊँची नीची अवस्थाओं को प्राप्त नहीं होता। यह उन महात्मा बुद्ध का वचन है, जिनके अनुयायी स्वयं को वेद विरोधी तक मानते हैं। इसी प्रकार कुछ सिक्ख भाई भी अज्ञानवश वेदों के प्रति वह आस्था नहीं रखते, जो गुरू नानक देव की थी। गुरू जी ने तो कहा – **हरि आज्ञा होए वेद पाप पुन्न विचारिआ।''** अर्थात् ईश्वर की आज्ञा से वेद हुए जिससे मनुष्य पाप–पुण्य का विचार कर सके। कबीरदास जी भी कहते हैं – **वेद कतेव कहहु मत झूठे झूठा जो न विचारे।''** अर्थात् वेदों को झूठा मत कहो, झूठा वह है जो विचार नहीं करता। इसी प्रकार से हजारों ऐसे प्रमाण उपलब्ध होते हैं, जिनके यह सिद्ध होता है कि वेदों के प्रति आर्यावर्त के

विद्वानों की आस्था निर्भ्रान्त रही है।

वेदों के प्रति उपर्युक्त प्रकार की भावना का कारण यही रहा कि सभी ने यह स्वीकार किया कि वेद परमपिता परमात्मा की वाणी है, वेद प्राणिमात्र के लिये हितैषी है, वेद में कुछ भी अनैतिक, अतार्किक, नहीं है आदि–आदि। वेदों के प्रति आस्थावान जनों का यह पक्ष है, परन्तु थोड़ा इन वाक्यों पर भी विचार करें – चार्वाक मतानुयायियों का प्रसिद्ध वचन है – **''त्रयो वेदस्य कर्तारः धूर्त भाण्ड निशाचरः''** – धूर्तों, भाण्डों और निशाचरों ने वेदों का निर्माण किया है। वैदिक एज नामी पुस्तक के लेखकों ने लिखा – ***"The guests are entertained with the flesh of cows killed on the occation of marriage."*** अर्थात् वैवाहिक अवसरों पर अतिथियों के स्वागत के लिये गोमांस परोसा जाता था – यहाँ ध्यान देना चाहिये इसकी अनुमति उनके अनुसार वेदों में है। एक विचार के अनुसार – ***"In the Rig Vedic period, sura was the popular drink, extremely intoxication........"*** वैदिक काल में सुरा (शराब) एक लोकप्रिय पेय था।

उपर्युक्त के अतिरिक्त यजुर्वेद के मन्त्र – **''गणानां त्वा .... ''** के अर्थ में महीधर गणपति शब्द से घोड़े का अर्थ लेते हुए इस मन्त्र का इतना अश्लील अर्थ करते हैं कि हम उसे यहाँ बता सकने में असमर्थ हैं। यही नहीं अनेक ऐसे स्थल हैं, जिनके उदाहरण से वेदों पर पशुहिंसा, अश्लीलता एवं अनैतिकता के आपेक्ष कुछ भारतीयों एवं पाश्चात्य विचारकों द्वारा लगाये जाते हैं। इस स्थल पर हम यह बात और स्पष्ट कर देना आवश्यक समझते हैं कि वर्तमान में भारतीय स्वीकृत शिक्षा–पद्धति के अन्तर्गत इसी विचारधारा को छात्रों में प्रसृत किया जा रहा है। परिणामस्वरूप साधारण पढ़े लिखे विद्यार्थी में वेदों के प्रति अनास्था और कदाचित् घृणा के भाव भर रहे हैं । वेदों के प्रति पश्चिम की आपत्ति दुःखदायी कम है, दुःख तो भारत की भूमि पर पैदा हुए जनों के अन्दर जड़ जमा रही वेदविरोधी विचारधारा के मजबूत होते जाने का है। इस समस्या के कारण व समाधान पर विचार करना अत्यावश्यक है। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस गंभीर समस्या पर विचार किया और यह निष्कर्ष निकाला कि मूल समस्या वेदों के सत्यार्थ को समझने में हूई भूल है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रतिज्ञा थी – ''मेरा वेद भाष्य ऐसा होगा कि जिससे वेदार्थ के विरूद्ध अब के बने भाष्य और टीकाओं में वेदों में भ्रम से जो मिथ्या दोषों के आरोप हुए हैं, वे सब निवृत्त हो जाएंगे और इस भाष्य से वेदों का जो सत्य अर्थ है सो संसार में प्रसिद्ध होगा कि वेदों के सनातन धर्म को सब लोग यथावत् जान लें।'' (ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका) दुर्भाग्यवश ऋषि दयानन्द अपने जीवनकाल में चारो वेदों का भाष्य न कर सके तथापि उनके समय तक पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु

के अनुसार ''संपूर्ण यजुर्वेद तथा ऋग्वेद के 7वें मण्डल के 62 वें सूक्त के दूसरे मन्त्र तक का भाष्य बन चुका था।'' स्वामी जी अपने जीवनकाल में भले ही अपने हाथ से चारों वेदों का भाष्य न कर सके हों, परन्तु यदि महर्षि अरविन्द के शब्दों में कहें तो – ''दयानन्द ने ऋषियों के भाषा सम्बन्धी रहस्य का मूल सूत्र हमें पकड़ा दिया है।'' इस प्रकार शेष रहे वेदांश का भाष्य ऋषि दयानन्द की पद्धति पर पं. आर्यमुनि जी, पं. जयदेव जी विद्यालंकार, पं. क्षेमकरणदास त्रिवेदी, पं. तुलसीराम जी, ऋग्वेद के कुछ अंशों पर पं. शिवशंकर काव्यतीर्थ आदि ने करके दयानन्द के स्वप्न को पूर्ण करने का महत् प्रयास किया है।

उपर्युक्त विवरण में हमने एक निवेदन करने का प्रयास किया है कि वेदों के प्रति एक विचारशील वर्ग की अनास्था का मूल कारण वेदों के अनर्गल उपेदश हैं और वेदों के उपदेशों में अनर्गलता दिखायी देने का मूल–कारण है वेदों के मन्त्रों की भ्रान्त व्याख्या। ज्ञातव्य है कि वर्तमान उपलब्ध भाष्यों में सबसे प्राचीन वेद भाष्यकार सातवीं शताब्दी (संवत् 687) का आचार्य स्कन्द स्वामी का ऋग्वेद पर भाष्य मिलता है, जो अपूर्ण है। आज जिस वेदभाष्य को सर्वाधिक स्वीकृति प्राप्त है, वह है आचार्य सायण (संवत् 1372 – 1444) का। आचार्य सायण दक्षिण में विजयनगर साम्राज्य (वर्तमान लगभग आन्ध्र प्रदेश) के संस्थापक हरिहर एवं बुक्का के महामंत्री विद्यारण्य के भाई थे। ऐसा माना जाता है कि आचार्य सायण के निर्देशन में ब्राह्मणों के एक बड़े वर्ग ने वेदों पर भाष्य तैयार किया था जिसे सर्वांश में आचार्य सायण के नाम से जाना जाता है। स्कन्द स्वामी और आचार्य सायण के बीच लगभग 700 वर्षों के दौरान 16 – 17 वेदभाष्यकारों का किया वेदार्थ वर्तमान में प्राप्त हो रहा है, इनमें प्रमुख है – उवट, वेंकटमाधव (ऋग्वेद) आनन्दतीर्थ (ऋग्वेद 40 सूक्त), माधव आदि। इनके अतिरिक्त महीधर (संवत 1645, यजुर्वेद) कृत भाष्य को भी प्रसिद्धि प्राप्त है। पश्चिमी देशों में, अंग्रेजी में, ऋग्वेद पर विलसन, ग्रिफिथ, ग्रासमैन कृत, जर्मनी में – लुडविग तथा ओल्डनवर्ग कृत अनुवाद प्रसिद्ध है। इनके अतिरिक्त मैक्समूलर, राथ ह्विटनी, वैनफी, कीथ, हॉग, एगलिंग आदि के ब्राह्मणग्रन्थों आदि पर अनुवाद मूल वेदों के प्रति उनके दृष्टिकोण के प्रतिपादक है। उपर्युक्त के अतिरिक्त एक नाम ऐसा है, जिन्होंने वेदभाष्य तो नहीं किया परन्तु वस्तुतः वे वेदार्थ के नियमों के प्रतिपादक, निर्देशक हैं और कुछ अर्थों में जिनका स्थान वेदभाष्यकारों से ऊपर माना जायेगा, वे हैं – आचार्य 'यास्क'। यास्क मुनि रचित 'निरूक्त' वेद का अंग है, क्योंकि इसमें वेद का अर्थ करने की शैली अत्यन्त ही उत्कृष्ट रीति से दर्शायी है।

वेद मन्त्रों के रहस्यों को समझने का प्रयत्न हमेशा से होता रहा है, तथापि इतने भाष्यकारों – व्याख्याकारों और अनुवादकों ने वेदों का जो स्वरूप दिखाया उनमें उनके अपने दृष्टिकोणों, तात्कालिक परिस्थितियों और पूर्वग्रहीत सिद्धान्तों के प्रति आस्था का बड़ा हाथ रहा है। इसका

सीधा अर्थ है कि प्रायः व्याख्याकारों ने वेद के तत्वों को अपने शब्दों में न कह कर अपनी मान्यताओं को वेदों से दिखलाने का प्रयास किया और इसका परिणाम हुआ कि वेदों का मूलभाव जनसामान्य से तिरोहित हो गया। ऐसी तिमिराच्छादित अवस्था में ऋषि दयानन्द ने वेदों का जो भाष्य हमारे सामने रखा उससे वेदों का उज्ज्वल स्वरूप सामने आ गया। परन्तु दुखद पक्ष है कि विश्व आज भी दयानन्द के पवित्र उद्देश्य को पूर्णतः समझ नहीं रहा। उन्हें समझने के लिये आवश्यक है कि हम उस विशिष्टता को समझें जो ऋषि दयानन्द को अन्यों से पृथक् खड़ा करती है, उस शैली को समझें जिसे दयानन्द ने ऋषि–दृष्टि से समझा, हम पूर्वाग्रहों को त्याग कर यह देखने का प्रयत्न करें कि अन्य वेद भाष्य क्यों वेदों के मूल–भाव से दूर रहे और किस प्रकार ऋषि दयानन्द वेदोपदेश के अधिकतम समीप पहुंच सके।

वेदार्थ की प्रक्रिया में ऋषि दयानन्द ने महर्षि यास्क के वेदार्थ के सिद्धान्त को स्वीकार किया। वेदार्थ की मूलभूत प्रक्रिया है कि "सब मन्त्रों का अर्थ तीनों प्रक्रियाओं अर्थात् आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक में होता है," यह यास्क का सिद्धान्त है। इसी सिद्धान्त को स्वीकार करके ही ऋषि दयानन्द यह घोषणा करते हैं – "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।" वेदभाष्यकार आचार्य स्कन्दस्वामी और आचार्य दुर्ग निरुक्त पर की गयी अपनी टीकाओं में इस बात को कहते हैं कि यास्कमुनि वेदों की व्याख्या की त्रिविध प्रक्रिया को स्वीकार करते हैं। महर्षि दयानन्द ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के "अथ वैदिक प्रयोग विषयः संक्षेपतः" शीर्षक के अन्तर्गत किए कथन में इस प्रक्रिया को स्वीकार करते हैं। अब यदि उपलब्ध अन्य भाष्यों पर दृष्टि डालें तो हमें पता चलता है, आचार्य सायण ने वेदमन्त्रों का अर्थ केवल याज्ञिक प्रक्रिया परक ही किया वह भी केवल श्रौतयज्ञों की प्रक्रिया को लक्ष्य में रखकर, गृह्यसूत्रों में विनियुक्त मन्त्रों के विषय में कुछ स्थलों को छोड़कर कुछ भी नहीं कहा। इसी प्रकार उपलब्ध पूर्ववर्ती भाष्यकार भी इस याज्ञिकवाद की रूढ़ि से बच नहीं पाये। इसका परिणाम यह हुआ कि वेदों को केवल कर्मकाण्ड का विधेयक ग्रन्थ मानकर ही छोड़ दिया गया, इनसे हम आध्यात्मिक अथवा आधिदैविक ज्ञान का लाभ लेने से वञ्चित हो गये।

ऋषि दयानन्द ने वेदार्थ प्रक्रिया में लौकिक और वैदिक शब्दों का भेद रखते हुए वेद के शब्दों के लिये वैदिक नियमों का आधार बनाया। लौकिक और वैदिक शब्दों का भेद दर्शाते हुए महाभाष्यकार पतञ्जलि मुनि ने कहा – **"केषांशब्दानाम्? लौकिकानां वैदिकानां च"** (महाभाष्य पस्पशाह्निक) सिद्ध है कि लौकिक और वैदिक शब्द भिन्न–भिन्न हैं। इस सिद्धान्त के अनुार साधारण व्यक्ति के लिये 'अग्नि' शब्द का अर्थ केवल लौकिक आग ही हो सकता है, (दृष्टव्य – पं. महेशचन्द्र न्यायरत्न की शंका) परन्तु यौगिक प्रक्रिया से अग्नि का अर्थ है – परमात्मा, जीवात्मा,

राजा.................. आदि – आदि। महाराज मनु का कथन है – **"वेद शब्देभ्य एवादौ पृथक् संज्ञाश्च निर्ममे।"** वेद के शब्दों से ही लोक के तमाम नामों का विनिश्चय हुआ है। अन्य वेदभाष्यकारों की यह चूक रही कि लोक प्रसिद्ध शब्दों के दर्पण में ही उन्होंने वेद को देखने का प्रयत्न किया और वेद के मूलार्थ से दूर होते गये।

महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में कहा – **"नैगमरूढ़िभवं हि सुसाधु। नैगमाश्च रूढिवाश्च।"** (म.भा. 3/3/1) – वेद के शब्द रूढ़ि नहीं होते। ऋषि दयानन्द ने इस सिद्धान्त को दृढ़ता से वेदभाष्य में स्वीकार किया। हमें यह कहते हुए सन्तोष होता है कि अन्य आचार्यों ने इस सिद्धान्त को स्वीकार तो किया परन्तु उस दृढ़ता से नहीं जो अपेक्षित थी। 'इन्द्र' शब्द की व्याख्या आचार्य सायण करते हैं – **'इन्द्रं इरां दृणाति इति। वा इरां ददाति इति।**................" यहाँ सायण इन्द्र शब्द का यौगिक अर्थ करते हैं, परन्तु यह दृढ़ता सर्वतः नहीं रहती। ऋग्वेद के (3–31–6) मन्त्र में आये 'सरमा' शब्द का अर्थ करते समय अपने को 'सरमा' का अर्थ 'देवों' की कुतिया' भी कहने से रोक न सके, क्योंकि एक लोक–कथा में यही प्रसिद्ध है। लौकिक रूढ़ि शब्दों को वेदार्थ का आधार बनाने का कितना भयावह दुष्परिणाम हुआ, इसका उदाहरण यजुर्वेद के 23वें अध्याय के 20 वें मन्त्र की व्याख्या महीधर ने जो की, इसे सांकेतिक रूप से समझा जा सकता है। इस प्रकार वेदार्थ की प्रक्रिया इस मान्यता से ही सुनिश्चित होनी चाहिये कि वेदों के शब्द यौगिक हैं – रूढ़ि नहीं।

वेदभाष्य की इस परंपरा को स्वीकार करने का एक प्रतिफल यह हुआ कि अनेक विद्वान वेदों में इतिहास दर्शन भी करने लगे। महर्षि दयानन्द के भाष्य की विशिष्टता है कि, ऋषि ने वेदों में अनित्य इतिहास नहीं माना। अनित्य इतिहास की उत्पत्ति सृष्टि–काल में ही संभव है। यदि वेद सृष्टि की आदि में उत्पन्न माने जायें तो उसमें विभिन्न राजाओं, युद्धों वा घटनाओं का उल्लेख स्वतः असिद्ध है, परन्तु अनेक भाष्यकार इस प्रतिज्ञा को स्वीकार करते हुए भी कि वेदोत्पत्ति सृष्टि की उत्पत्ति के साथ हुई, इतिहासपरक व्याख्या करने से अपने को बचा नहीं सके। इस विषय में पं. रघुनन्दन शर्मा कृत अमूल्य ग्रन्थ **'वैदिक संपत्ति'** का अध्ययन अत्यन्त ज्ञानप्रद है। वे सिद्ध करते हैं "पुराणों में नामावलियों को वंशावलि बनाकर और वैदिक अलंकारों को राजाओं के इतिहासों के साथ जोड़कर उपर्युक्त झंझट फैला दिया है।"

पाश्चात्य विद्वानों और उनके चरणानुगामी भारतीय विद्वानों के लिये यह विषय शोध का एक रोचक पक्ष बन पड़ा है। वेद का काल निर्धारित करने का उनके पास यह सबसे बड़ा हथियार है कि वेद में ऐतिहासिक घटनाएं खोजी जाएं।

ऋषि दयानन्द से पूर्व के भाष्यकारों ने उन्हें यह अवसर भी भरपूर दिया परन्तु दयानन्द के

वेदभाष्य के सामने आते ही तद्विषयक समस्त संभावनाएं कर्पूरवत् विलुप्त होती चली गयीं।

वेदार्थ प्रक्रिया में ऋषि दयानन्द द्वारा स्वीकृति प्राप्त एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है, जिसे व्यत्यय का सिद्धान्त कहते हैं। महर्षि पाणिनि का अष्टाध्यायी में प्रदत्त सूत्र है – **'व्यत्ययो बहुलम्** (3.1.85) – वेद विषय में बहुल करके सब विधियों का व्यत्यय होता है। पं. ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु कहते हैं – **''अनार्ष विधि से अनार्ष ग्रन्थ पढ़ने वाले व्यक्ति इस सिद्धान्त के मर्म से सर्वथा वंचित रह जाते हैं।''** ऐसे शब्द जिनका प्रकृति – प्रत्यय स्पष्ट रूप से ज्ञात नहीं होता, उन अनवगत संस्कार शब्दों का निर्वचन पूर्वोत्तर पदाधिकार, प्रकरण, शब्द सारूप्य तथा अर्थोपपत्ति इन चार बातों के आधार पर होता है। निरुक्त का सिद्धान्त है – **''अर्थनित्यः परीक्षेत्''** अर्थ को प्रधान मानकर निर्वचन करना चाहिये। कुछ व्याकरणविद् इस सिद्धान्त का उपहास करते हुए दिखते हैं, परन्तु बिना इस सिद्धान्त को स्वीकार किए वेद का सही मर्म नहीं समझा जा सकता।

ऋषि दयानन्द के वेदार्थ की महत्ता का एक बड़ा अनुभव विनियोग से संबन्धित अवधारणा से होता है। विभिन्न यागों में होने वाली विभिन्न प्रक्रियाओं के करते समय जिन–विशिष्ट मन्त्रों का पाठ किया जाता है, इसे विनियोग कहते हैं। आचार्य सायण की सबसे बड़ी भूल है कि ''ऋग्वेद और सामवेद का केवल इतना ही मूल्य है कि यज्ञों को करने में उनका पाठ या गान हो। इसलिये सायण ने ऋग्वेद के सूक्तों का भाष्य करते हुए पहले उनका विनियोग दिया है अर्थात् अमुक मन्त्र कहाँ–कहाँ पढ़ना होगा।'' (पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय कृत सायण और दयानन्द)। इस विषय में दृष्टिकोण का अन्तर महत्वपूर्ण है – पहला यह कि वेदमन्त्र उन–उन यज्ञों के लिये ही रचे गये और उनका उतना ही प्रयोग है अथवा दूसरा यह कि वेद मन्त्र पहले ही विद्यमान थे और क्रिया की अनुरूपता – भावसाम्यता देखते हुए उन–उन मंत्रों का प्रयोग कल्पित कर लिया गया। ऋषि दयानन्द द्वितीय मत को स्वीकार करते हैं, और सायणादि प्रथम मत को। इस मान्यता का परिणाम क्या हुआ इसको इस उदाहरण से समझा जा सकता है – वेद का मन्त्र है – **''भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः''** यह मंत्र कर्णवेध की क्रिया में विनियुक्त किया जाता है। इसी मंत्र की व्याख्या में सायणाचार्य कर्णवेध की प्रक्रिया दर्शाते हैं, परन्तु तत्वतः इस मंत्र में छेदन का लेशमात्र संकेत नहीं है और यदि छेदन ही स्वीकार करें तो 'आँख' शब्द भी है तो आंख छेदन का तो कोई प्रश्न हो नहीं सकता। इस प्रकार मन्त्र के साथ क्रिया का संबन्ध ईश्वरकृत नहीं मनुष्यकृत है और यदि प्रचलित विनियोगों को देखकर मन्त्रार्थ होंगे तो उनके भ्रान्त होने की प्रबल संभावना है – ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य ने हमें इस भ्रान्ति से उबार लिया है।

अठारहवीं – उन्नीसवीं शताब्दी में वैदिक संस्कृति पर पाश्चात्यों की ओर से बड़े बलपूर्वक घातक प्रहार किये गये। गोमेध – नरमेध – अश्वमेध यज्ञों का नाम लेकर यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया कि प्राचीन आर्य गोमांस–भक्षी, मनुष्यों और पशुओं को यज्ञ में मारकर उनकी आहुतियां देने वाले, सुरा–प्रिय असभ्यता से भरे हुए, अश्लील आचारयुक्त थे और प्रमाण थे वेद–मन्त्र। **''वैदिकी हिंसा, हिंसा न भवति''** – जिस हिंसा का वेदों में विधान है, वह हिंसा रूपी पाप कोटि में नहीं आता। 'यह प्रवाह गौतम बुद्ध, महावीर आदि के समय में प्रचलित भी था। वस्तुतः आज भी कलकत्ते की काली माई, विन्ध्याचल की देवी, राजस्थान और नेपाल के देवताओं को बकरे, भैंसे की बलि देने के उदाहरण मिलते हैं और इसे वैदिकी हिंसा की कोटि में गिना जाता है। परन्तु प्रश्न यह है कि वस्तुतः वेदों में इसका कोई संकेत है भी या नहीं?

ऋग्वेद में अश्वमेघ शब्द वाले पाँच मन्त्रों की व्याख्या में सायण इसे एक राजर्षि का नाम तथा आश्वमेध का अर्थ अश्वमेघ का पुत्र करते हैं। महर्षि दयानन्द अश्व शब्द का अर्थ शतपथ ब्राह्मण के समर्थन से राष्ट्र करते हैं। वहीं यौगिक प्रक्रिया में अश्व का अर्थ 'ईश्वर' किया है – 'अश्नुते व्याप्नोति सर्वं जगत् सोऽश्व ईश्वरः।'' इसी प्रकार 'गोमेध' शब्द है। रोचक तथ्य है कि चारो वेदों में 'गोमेध' शब्द ही नहीं है। वैदिक संस्कृति में गाय मारना महापातक है। गाय को अघ्न्या कहा है और गोवध की अनुमति वेद कहीं नहीं देता। वहीं नृमेध शब्द ऋग्वेद में दो स्थानों पर आया है। सायण नृमेध का अर्थ कृषि करते हैं, इसी प्रकार महर्षि दयानन्द भी इस व्याख्या को स्वीकार करते हैं। 'नृ' का अर्थ होगा नेतृ (नेता) और मेध का अर्थ होगा 'बुद्धि'। अर्थात् वह पुरूष जो नेतृत्व करने की बौद्धिक क्षमता रखता हो।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अश्वमेध, गोमेघ या नृमेध विषयक जो परंपरागत मान्यताएं प्रचलित हैं, वे न केवल सत्यता से परे बल्कि षड्यंत्रपूर्ण हैं। ऋषि दयानन्द का वेदभाष्य इस सत्यता का प्रबल उद्घाटक होने से अनुकरणीय है।

उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त भी अनेक ऐसी विशेषताएं हैं, जिनके आधार पर हमें यह स्वीकार करना पड़ता है कि ऋषि दयानन्द की दृष्टि से ही वेदों को यदि देखा जाय तो सत्यार्थ का प्रकाश हो सकता है, अन्यथा कुछ जो हाथ लगेगा वह अपमिश्रित होगा। उपर्युक्त विवेचन संकेतमात्र है। पं. ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु की परंपरा में पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी, आचार्या डॉ. प्रज्ञा देवी जी, आचार्या डा. मेधा देवी जी, एवं इनके अन्य तमाम सहपाठीगण ऋषि दयानन्द के इसी दृष्टिकोण को भारत में प्रस्थापित करने के लिये अपने सारा जीवन खपा गये। हमें गर्व है, मस्तक नत है अपने गुरूवर परमपूज्य धर्मानन्द शास्त्री के प्रति, जिन्होंने इस परंपरा को आगे बढ़ाने में ही

अपनी सारी ऊर्जा लगा दी।'' बिना व्याकरण के अध्ययन के वेदों की समीपता संभव नहीं'' आचार्य धर्मानन्द जी का यह कथन हमें प्रेरित करता है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह हमें शक्ति दे कि हम सत्य मार्ग के पथिक बन सकें।

आर्य समाज स्थापना दिवस एवं भारतीय नवसंवत्सर के शुभअवसर
पर नगर के समस्त आर्य जनों को बहुत-बहुत बधाई
और शुभकामनाओं सहित

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

रामजी गुप्ता (प्रमोद) किरन गुप्ता

(प्रतिष्ठित अभिकर्त्ता)

Mob.: 9307112623, 9838862380

निवास : 2/373, उजयारी देवी मन्दिर के पास, नवाबगंज, कानपुर-2
आफिस : नगर शाखा-3, 118/331, कौशलपुरी, गुमटी नं.5, कानपुर-12

With Best Compliments From...

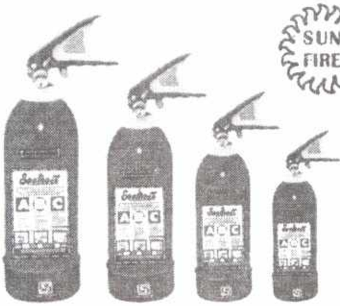

SUN FIRE

SUN FIRE

SECURITY & SAFETY SOLUTION

We also Refil all type of Fire Extinguishers

Fire Extinguishers, Fire Detection, Hydrant, Refilling, Fire Alaram, Authorised Dealers of Seemax

B.O. 106/119, Ram Park, Gandhi Nagar, Kanpur -208 012
Mob.: 9335456134, 9335880807, e-mail : sunfiresystem@rediffmail.com

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, कानपुर के निर्वाचित/नियुक्त पदाधिकारियों, अन्तरंग सदस्य, सहयुक्त सदस्य प्रतिष्ठित सदस्य एवं विशेष आमन्त्रित सदस्यों की सूची (वर्ष 2011-2012)

पदाधिकारी	पता	दूरभाष नं0	सम्बद्ध आर्य समाज
प्रधान			
1. श्री शुभ कुमार बोहरा	126/22 आर. ब्लाक गोविन्द नगर	9336585664	गोविन्द नगर
उप प्रधान			
2. श्रीमती कैलाश मोंगा	74, लाल क्वार्टर, गोविन्द नगर	0512-2653448	गोविन्द नगर
3. श्री विनोद चन्द्र श्रीवास्तव	106/289 गान्धी नगर, सीसामऊ	0512-2541517	सीसामऊ
4. श्री श्याम प्रकाशन शास्त्री	D/64, गोविन्द नगर	9415726733	वेद मन्दिर
5. श्री कैलाश चन्द्र गुप्ता	20, चन्द्र नगर, लाल बंगला	9451877645	चन्द्र नगर
मन्त्री :			
6. श्री सतीश कुमार आर्य	106/154 रामपार्क, गान्धीनगर	9935336481	सीसामऊ
उपमन्त्री :			
7. श्रीमती सन्तोष अरोड़ा	49/3 ब्लाक-5, गोविन्द नगर	9695899880	गोविन्द नगर
8. श्रीमती सरोज अवस्थी	124B/58 गोविन्द नगर	9889979434	वेद मन्दिर
9. श्री रामलखन आर्य	128/156 प्रतापगज, कालपी रोड	9936030927	उद्योग नगर
10. श्री पारस पुरवार	134, संजय गान्धी नगर, नौबस्ता	9450331355	नौबस्ता
कोषाध्यक्ष :			
11. श्री राधे श्याम आर्य	128/130, के ब्लाक, किदवई नगर	0512-2604609	जूही
सह कोषाध्यक्ष :			
12. श्री बुद्धिराम शर्मा	31-A नेताजी नगर, पी.ए.सी. रोड	9389649030	कृष्णा नगर

अधि0 आर्य वीर दल :			
13. श्री सुरेन्द्र गेरा	37/3 ब्लाक–4, गोविन्द नगर	933634322	गोविन्द नगर
सह अधि आर्य वीर दल :			
14. श्री वीरेन्द्र कुमार कुन्दरा	म0न0 111,एम.आई.जी रतन लाल नगर	9335506390	रतनलाल नगर
आय व्यय लेखा निरीक्षक :			
15. श्री बाल गोविन्द आर्य	124B/58 गोविन्द नगर	9889979434	गोविन्द नगर
पुस्तकालय :			
16. श्री सतीश शस्त्री	11/19 सूटरगंज	9369830313	ग्वालटोली
सह पुस्तकालय :			
17. डा0 अयोध्या प्रसाद साहू	128/13, D ब्लाक किदवई नगर	0512–2604254	बाकरगंज
महिला संयोजिका –			
18. श्रीमती चन्द्रकान्ता गेरा	37/3 ब्लाक –4, गोविन्द नगर	9335941919	गोविन्द नगर
सह महिला संयोजिका :			
19. श्रीमती उर्मिला आर्या	108 वेदभवन नया शिवली रोड	9415433255	कल्यानपुर
पदेन सदस्य :			
20. श्री वेद प्रकाश आर्य	87/6A आर्यपुरम, हीरागंज	9336217271	सीसामऊ
21. श्री आनन्द जी आर्य	210, तेजाब मिल कैम्पस, अनवरगंज	9839868228	दर्शनपुरवा
संयुक्त सदस्य :			
22. श्री आनन्द स्वरूप अवस्थी	620/61, w ब्लाक, तुलसी विहार	9889479315	जूही
23. श्री सन्त राम सिंह सेंगर	119/253 दर्शनपुरवा	9838037105	दर्शनपुरवा
प्रतिष्ठित सदस्य –			
24. श्री मुनीन्द्र शास्त्री	117/486 पाण्डु नगर	9839454640	सीसामऊ

25. श्री राम जी आर्य	118 / बी–ब्लाक, पनकी, कानपुर	2260451	अर्मापुर
26. श्री हरीश कनौत्रा			रतनलाल नगर
27. श्री ओम प्रकाश वैश्य	2A / 396 आजाद नगर	9839211828	गोविन्द नगर
28. श्री रवीन्द्र कुमार द्विवेदी			हीरागंज

विशेष आमन्त्रित सदस्य -

29. श्रीमती कौशिल्या आर्या	4 / 1 ब्लाक–1 गोविन्द नगर	9336115037	गोविन्द नगर
30. श्रीमती श्यांकुन्तला मेहंदीरत्ता			गोविन्द नगर
31. श्रीमती सुमन भला	173ए / 10 विजय नगर	9452054670	ग्वालटोली
32. श्रीमती रामदेवी आर्या	77 / 3 ब्लाक–8 गोविन्द नगर	2665425	गोविन्द नगर
33. श्री अनिल कुमार पुरवार	134 संजय गान्धी नगर, नौबस्ता	9450331355	नौबस्ता
34. श्री सन्तोष श्री आर्य	108 वेदभवंन नया शिवली रोड,	945133255	कल्याणपुर
35. श्री वीरेन्द्र कुमार खन्ना			रतनलाल नगर

अन्तरंग-सदस्य

1. श्री शिव कुमार आर्य	4 / 1 ब्लाक–1 गोविन्द नगर	9336115037	गोविन्द नगर
2. श्रीमती सरला बोहरा	126 / 22आर. ब्लाक गोविन्द नगर	9939162588	गोविन्द नगर
3. श्रीमती मिथिलेश शुक्ला	आर्य समाज वेद मन्दिर		वेद मन्दिर
4. डा0 वीरेन्द्र आर्य			ग्वालटोली
5. श्री कृष्णपाल राजपूत	A/674 बर्रा–6	9935677198	रतनलाल नगर
6. श्री भैरव प्रसाद गुप्ता	1-C जीवन गार्डन, गान्धीग्राम, कानपुर	9450121568	कृष्णा नगर, नौबस्ता
7. श्री कमल कुमार पाण्डेय			नौबस्ता
8. श्री हनुमान प्रसाद आर्य	ई–6 आनन्द काटेज, मोती बिहार, सर्वोदय	9838101020	उद्योग नगर
9. श्री चन्द्रमोहन गोयल	620 / 186 तुलसी विहार	9450487654	जूही

10. श्री रिपुदमन कुमार भल्ला	173 ए./10 विजय नगर, कानपुर अर्मापुर	9452054670	सीसामऊ
11. श्री रामसेवक आर्य	17/11 पीली कालोनी	9984676641	वेद मन्दिर
12. श्रीमती कृष्णा गुप्ता	20 चन्द्र नगर	9696279498	चन्द्र नगर
13. श्री उमाशंकर सिंह	116/676 आर्य नगर, रावतपुर गाँव	9451017186	अर्मापुर
14. श्रीमती मौसमी आर्या	87/6 ए आर्यपुरम हीरागंज	9918997999	हीरागंज
15. श्री रमेश साहू	712, श्याम विहार, नया शिवली रोड,	9450061354	कल्यानपुर
16. श्री सुभाष आर्य		9621216042	दर्शनपुरवा
17. श्री समीर आर्य		9792839100	दबौली

कानपुर नगर की विभिन्न आर्य समाजें

कानपुर नगर में प्रथम आर्य समाज की स्थापना 16 नवम्बर 1879 ईसवीं को हुई थी। कालान्तर में विभिन्न दयानन्द भक्त मनीषियों के द्वारा समय समय पर ऋषि के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए कानपुर के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक आर्य समाजों की स्थापना होती रही। वर्तमान में नगर के अन्दर 50 से भी अधिक आर्य समाजें सक्रिय हैं। इनमें से कुछ आर्य समाजों का संक्षिप्त वृत्तान्त देने में हम हर्ष का अनुभव कर रहे हैं।

आर्य समाज मेस्टन रोड

डॉ0 नागेन्द्र स्वरूप
प्रधान

जयसिंह 'एडवाकेट'
मंत्री

आर्य समाज मेस्टन रोड वस्तुतः इस नगर की प्रथम स्थापित आर्य समाज है। वर्तमान में जिस भवन में आर्य समाज का कार्य चल रहा है उसकी आधारशिला 3 मार्च 1916 को महात्मा हंसराज द्वारा रखी गयी थी। पहले यह आर्य समाज 16 नवम्बर 1879 को ठण्डी सड़क में स्थापित हुआ था और इसका नाम था 'आर्य समाज कानपुर'। आर्य समाज मेस्टन रोड अपने इतिहास में आर्य जगत के अनेक स्वनाम धन्य विभूतियों की स्मृतियाँ संजोए है। इनमें पं0 विद्याधर जी से लेकर श्री विजयपाल शास्त्री तक अनेक आर्यों ने अपने जीवन के अमूल्य वर्षों को लगाया है। प्रतिवर्ष आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव शिवरात्रि (महर्षि बोधोत्सव) को मनाया जाता है।

वर्तमान में इस समाज के प्रधान डॉ0 नागेन्द्र स्वरूप एवं मन्त्री जय सिंह 'एडवोकेट' के नेतृत्व में धर्मार्थ औषधालय–रामबाग, धर्मार्थ होम्योपैथिक औषधालय–आर्यसमाज हॉल, पुस्तकालय एवं वाचनालय, आर्य साहित्य पुस्तक विक्रय विभाग आदि सामाजिक कार्य सुचारू रूप से चल रहे हैं।

आर्य समाज सीसामऊ

आर्य समाज सीसामऊ की स्थापना सन् 1934 में गाँधी नगर (लेनिन पार्क के सामने) में हुई। इसमें प्रतिदिन हवन, साप्ताहिक सत्संग, वेद प्रचार सप्ताह, वार्षिकोत्सव आदि कार्यक्रम निरंतर हो रहे हैं तथा समस्त वैदिक संस्कार समय समय पर होते रहते हैं। आर्य समाज के प्रधान

के रूप में सर्वश्री स्वर्गीय डॉ0 शिवदत्त जी, स्व0 डॉ0 सुखदेव जी, स्व0 पं0 लक्ष्मणकुमारी शास्त्री, मुनीन्द्र कुमार जी शास्त्री का संरक्षण प्राप्त होता रहा है। मन्त्री के रूप में सर्वश्री स्व0 वेदरत्न गौतम, स्व0 सरदारी लाल जी, स्व0 वेदमित्र जी, रिपुदमन कुमार भल्ला, वेदपाल जी, बंसीलाल जी, प्रहलाद राय आर्य एवं श्री वेद प्रकाश आर्य ने अपना कर्मठ योगदान प्रदान किया है।

वर्तमान में आर्य समाज के प्रधान श्री विनोद चन्द्र जी श्रीवास्तव अपने कुशल नेतृत्व के द्वारा आर्य समाज सीसामऊ को प्रगति के पथ पर अग्रसर कर रहे हैं। वहीं इस समाज को मंत्री के रूप में श्री राजेश आर्य एवं कोषाध्यक्ष के रूप में श्री नरेश आर्य की सेवायें प्राप्त हो रही हैं।

समस्त प्रभावी आन्दोलनों में आर्य समाज सीसामऊ का उच्च स्तरीय नेतृत्व रहा है। यहाँ स्त्री आर्य समाज भी सक्रिय है। इस समाज के पुस्तकाध्यक्ष श्री सतीश कुमार गुप्ता वर्तमान में आर्य उप प्रतिनिधि सभा को भी नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं।

विनोद चन्द्र श्रीवास्तव
प्रधान

राजेश आर्य
मंत्री

नरेश आर्य
कोषाध्यक्ष

आर्य समाज दर्शनपुरवा

आर्य समाज दर्शनपुरवा की स्थापना 1936 ई0 में बंबा रोड में हुई थी। कालान्तर में श्री हरविलास जी द्वारा प्रदत्त भूमि पर इस आर्य समाज भवन का निर्माण प्रथक स्थान पर हुआ। इस समाज के संस्थापक सदस्यों मे प्रमुख श्री ओंकारनाथ जी की सेवायें लम्बे समय तक समाज को प्राप्त हुई। यद्यपि यह समाज कुछ समस्याओं से भी ग्रसित रहा जिनसे उबारने का कार्य श्री प्रताप सिंह सक्सेना ने अपनी कर्मठता के द्वारा एवं श्री संतराम सिंह सेंगर के सहयोग से बखूबी किया।

इस समाज के प्रमुख कार्यकर्ताओं में स्व0 करन सिंह सेंगर, श्री अनिल गुप्त, श्री प्रभात सक्सेना, श्री कमल जी एवं संतदीन जी आदि प्रमुख हैं। इस समाज में साप्ताहिक सत्संग एवं वार्षिकोत्सव निरंतर होते रहते हैं। क्षेत्र की निम्न आय वर्ग की जनता को ध्यान में रखकर यहाँ जनसेवार्थ होम्योपैथिक औषधालय निःशुल्क संचालित होता है तथा साथ ही गरीब व मध्यमवर्गीय बालिकाओं के विवाह हेतु हॉल अत्यन्त कम शुल्क पर उपलब्ध कराया जाता है।

इस समाज के वर्तमान प्रधान श्री संतराम सिंह सेंगर कानपुर नगर के स्वनाम धन्य आर्य विद्वान के रूप में अपनी अलग पहचान रखते हैं। इनके नेतृत्व में आर्य समाज दर्शनपुरवा प्रगति के पथ पर अग्रसर है। श्री त्रिलोकी नाथ मिश्र यहाँ के मंत्री तथा श्री आनन्द जी आर्य कोषाध्यक्ष है।

संतराम सिंह सेंगर
प्रधान

त्रिलोकी नाथ मिश्र
मंत्री

आनन्द जी आर्य
कोषाध्यक्ष

स्त्री आर्य समाज गोविन्द नगर

श्रीमती कैलाश मोंगा
प्रधाना

श्रीमती चन्द्रकान्ता गेरा
मंत्रिणी

श्रीमती शकुंतला मेंहदीरत्ता
कोषाध्यक्षा

स्त्री आर्य समाज गोविन्द नगर की स्थापना स्व0 श्रीमती गणेशी देवी आर्या (धर्मपत्नी स्व0 देवीदास आर्य) के संरक्षण में हुयी प्रत्येक बुधवार को महिला सत्संग आयोजित होता है। ये कानपुर नगर में सर्वोच्च स्थान रखती है यहाँ पर प्रातः 6 बजे दैनिक ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, वेद की कथा व भजन का कार्यक्रम श्रद्धावान व सक्रिय महिलाओं द्वारा किया जाता है। इसके साथ ही साथ पूर्णमासी पर वृहत यज्ञ का आयोजन किया जाता है प्रत्येक आर्य पर्व पर व श्रावणी पर्व पर जिले की अन्य आर्य समाजों को भी आमन्त्रित किया जाता है जिसमें स्वलपाहार के खर्च का वहन भी स्त्री आर्य समाज करती है आर्य कन्या इण्टर कालेज आर्य समाज व स्त्री आर्य समाज के संयुक्त जलसे पर अन्तिम दिन ऋषि लंगर का आयोजन स्त्री आर्य समाज द्वारा किया जाता है जिसमें लगभग 2500 छात्रायें व अन्य लोग शामिल होते हैं। मकर संक्रान्ति पर खिचड़ी आर्य

समाज मन्दिर में बनाकर स्वयं ही गरीबों को वितरित करती हैं। स्त्री आर्य समाज गोविन्द नगर आर्य पद्धति के अनुसार प्रत्येक पर्व को मनाने में जिले में, क्षेत्र में, सामाजिक संस्थाओं में अहम भूमिका रखती है। कार्यक्रमों में श्रीमती दर्शना कपूर, श्रीमती वीरा चोपड़ा, श्रीमती लीला ग्रोवर, श्रीमती रामदेवी आर्या, श्रीमती संतोष दुआ एवं श्रीमती कौशल्या आर्या का विशेष सहयोग रहता है। वर्तमान में स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती कैलाश मोंगा, श्रीमती चन्द्रकान्ता गेरा मंत्रिणी तथा श्रीमती शकुंतला मेंहदीरत्ता कोषाध्यक्ष हैं।

आर्य समाज गोविन्दनगर

आर्य समाज गोविन्द नगर की स्थापना स्व0 देवीदास जी आर्य ने डॉ0 दुर्गादास व डॉ0 नंदलाल गाँधी जी के सहयोग से 29 फरवरी 1948 को की। इस आर्य समाज में प्रतिदिन प्रातः दैनिक यज्ञ, भजन, रविवार को साप्ताहिक सत्संग का तथा विशेष पर्वों में गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया जाता है। प्रत्येक वर्ष आर्य समाज, स्त्री आर्य समाज एवं आर्य कन्या इण्टर कॉलेज का संयुक्त वार्षिकोत्सव बड़े धूम–धाम से मनाया जाता है।

आर्यसमाज गोविन्द नगर की यज्ञशाला कानपुर नगर की एक गौरवस्थली है। यहाँ एक पुस्तकालय भी संचालित है। यहाँ के प्रमुख कार्यकर्ता हैं – श्री नंदलाल सचदेवा, श्री वीरेन्द्र कुमार मल्होत्रा, श्री त्रिलोक नाथ रावल, श्री प्रदीप प्रकाश गौतम, श्री सुभाषविज, श्री बालगोविन्द आर्य, श्री अरविन्द मोंगा, श्री रमेश चन्द्र आर्य, श्री गुरुबक्श सूदन, श्री सुरेन्द्र गेरा आदि।

वर्तमान में आर्य समाज के यशस्वी प्रधान श्री शुभ कुमार वोहरा हैं। मंत्री के रूप में श्री शिवकुमार आर्य एवं कोषाध्यक्ष श्री अनिल कुमार चोपड़ा जी का इन्हें व समाज को पूरा सहयोग प्राप्त होता है।

शुभ कुमार वोहरा
प्रधान

शिवकुमार आर्य
मंत्री

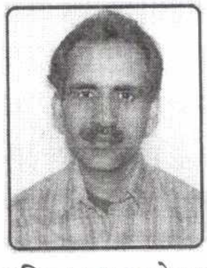

अनिल कुमार चोपड़ा
कोषाध्यक्ष

आर्य समाज जूही

आर्य समाज जूही की स्थापना 15 नवम्बर 1938 को श्री जबरसिंह जी द्वारा की गई। श्री जलेश्वर मुनि, श्री ओमप्रकाश भजनोपदेशक, श्री दिग्पाल सिंह, पं0 लक्ष्मी शंकर द्विवेदी, श्री जवाहरलाल इस आर्य समाज के प्रमुख स्तम्भ रहे हैं। आर्य समाज जूही के पूर्व प्रधान श्री हनुमान प्रसाद आर्य एवं वर्तमान संरक्षक श्री आनन्द स्वरूप अवस्थी आर्य उप प्रतिनिधि सभी कानपुर के कई बार प्रधान रह चुके हैं। आर्य समाज के कोषाध्यक्ष श्री राधेश्याम आर्य गत कई वर्षों से आर्य जिला सभा के कोषाध्यक्ष हैं। इस समाज में निरन्तर साप्ताहिक सत्संग एवं वार्षिकोत्सव आयोजित होते रहते हैं।

वर्तमान में आर्य समाज के प्रधान श्री सभाजीत सिंह, मंत्री श्री दीनानाथ आर्य तथा कोषाध्यक्ष श्री राधेश्याम आर्य है। प्रमुख कार्यकर्ताओं में है श्री चन्द्रमोहन गोयल, श्री प्रह्लाद विश्वकर्मा, श्री विजय कनौजिया, श्री श्यामबिहारी आर्य, श्री रामभवन आर्य, श्री किशोरी लाल आर्य, श्री हंसराज शर्मा, श्रीमती शारदा देवी एवं श्रीमती वीना सिंह।

सभीजीत सिंह
प्रधान

दीनानाथ आर्य
मंत्री

राधेश्याम आर्य
कोषाध्यक्ष

आर्य समाज अर्मापुर

आर्य समाज अर्मापुर की स्थापना 5 मई 1946 को हुई। संस्थापक सदस्यों में प्रमख थे – सर्वश्री वी0 आर0 वर्मन, पिण्डीदास कोहली, ब्रह्मदत्त, रामचन्द्र गुप्ता, वेदपाल कौड़ा आदि। आर्य समाज अर्मापुर द्वारा अर्मापुर स्टेट में 'आर्य वैदिक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय' संचालित है। जिसमें छात्र महर्षि दयानन्द सरस्वती के आदर्शों के अनुरूप शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। विद्यालय में शैक्षिक गतिविधियों के अतिरिक्त छात्रों को यौगिक शारीरिक प्रशिक्षण भी प्रायशः दिलाने का प्रयास किया जाता है।

यहाँ के प्रमुख कार्यकर्ताओं को श्री बलदेव राज कन्होत्रा का आशीर्वाद प्राप्त है। वर्तमान में यहाँ के प्रधान श्री बी0 एन0 सिंह, मंत्री श्री उमाशंकर सिंह तथा श्री कोषाध्यक्ष श्री अशोकराय जी हैं।

बी0 एन0 सिंह
प्रधान

उमाशंकर सिंह
मंत्री

अशोक राय
कोषाध्यक्ष

आर्य समाज वेदमन्दिर

आर्य समाज वेदमन्दिर गोविन्द नगर की स्थापना 1966 में की गई थी। आर्य समाज के नियमों के अनुकूल दैनिक यज्ञ, सत्संग, वेद प्रचार सप्ताह, वार्षिकोत्सव आदि संचालित होते रहते हैं। वेद मन्दिर में धर्मार्थ होम्योपैथिक औषधालय डॉ0 आर0 पी0 जायसवाल एवं पुस्तकालय रामलखन आर्य की देख रेख में संचालित है। वर्तमान में यहाँ के प्रधान श्री पूर्ण चन्द्र बत्रा, मंत्री श्याम प्रकाश शास्त्री, कोषाध्यक्ष श्री जयदेव सिंह आर्य हैं।

इस समाज के प्रमुख कार्यकर्ता हैं – श्री श्याम प्रकाश शास्त्री, श्री रामसेवक आर्य, श्री प्रताप सिंह आर्य, श्री पी0 सी0 बत्रा, श्री हरिवंश आर्य, श्री सतपाल सिंह आर्य, श्री अशोक कुमार पुरी, श्री जयदेव सिंह आर्य आदि। श्री मदनलाल गोयल का संरक्षकत्व इस समाज को प्राप्त है।

श्री पूर्ण चन्द्र बत्रा
प्रधान

श्याम प्रकाश शास्त्री
मंत्री

श्री बलदेव सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष

आर्य समाज ग्वालटोली

आर्य समाज ग्वालटोली का शिलान्यास पूज्यपाद स्व0 स्वामी आनन्द भिक्षु महाराज जी के द्वारा 13 मई 1960 में हुआ। इसके संरक्षक स्व0 नरेन्द्रनाथ सोबती एवं संयोजक स्व0 सत्यदेव चांदपुरी जी थे। आर्य उपदेशक स्व0 स्वामी रतनजी वानप्रस्थी, स्व0 बाबा रणजीत सिंह, स्व0 मथुरा प्रसाद आर्य, स्व0 पं0 झब्बूलाल आर्य, स्व0 देशबन्धु आर्य आदि निष्ठावान आर्यों ने इस समाज का कार्य बड़ी लगन व निष्ठा से किया।

आर्य समाज के इन महानविभूतियों ने हैदराबाद सत्याग्रह व हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भी सहर्ष भाग लिया। आर्यसमाज ग्वालटोली में यज्ञशाला का निर्माण अपने पूज्य पिता श्री मैकूलाल साहू की पुण्यस्मृति में उनके पुत्र श्री श्यामनारायण साहू ने 2001 में कराया। आर्य समाज ग्वालटोली के सत्संग भावन का जीर्णोद्धार श्री हनुमान प्रसाद आर्य द्वारा 2003 में कराया गया। प्रत्येक रविवार को यहाँ साप्ताहिक सत्संग होता है। वर्तमान में यहाँ श्री श्यामनारायण प्रधान, पं0 सतीश कुमार शास्त्री मंत्री एवं श्रीमती प्रेमलता भाटिया कोषाध्यक्ष के रूप में अपनी सेवायें दे रहे हैं। अन्य कार्यकर्ताओं में डॉ0 वीरेन्द्र आर्य, श्री सच्चिदानन्द आर्य, श्रीमती सुमन भल्ला, श्री शिवबालक आर्य एवं श्री रामबाबू आर्य प्रमुख हैं।

श्याम नारायण आर्य
प्रधान

सतीश कुमार शास्त्री
मंत्री

प्रेमलता भाटिया
कोषाध्यक्ष

स्त्री आर्य समाज वेदमन्दिर

स्त्री आर्य समाज वेदमन्दिर आर्य समाजभवन 'वेदमन्दिर' में ही संचालित है। स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती नैना गोयल, मंत्रिणी श्रीमती सरोज अवस्थी तथा कोषाध्यक्षा श्रीमती सुमित्रा चौधरी हैं। स्त्री आर्य समाज की प्रमख कार्यकर्त्रियों में श्रीमती मिथलेश शुक्ला, श्रीमती तपेश्वरी देवी एवं संगीता सचान के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

स्त्री आर्य समाज वेद मन्दिर अपने कार्यक्रमों को आर्य समाज वेदमन्दिर के संयुक्त तत्वावधान में निरन्तर आयोजित करता रहता है। वार्षिकोत्सव के अनन्तर स्त्री आर्य समाज वेद मन्दिर की कर्मठ सदस्यायें अपना सहयोग निरन्तर प्रदान करती हैं।

श्रीमती नैना गोयल
प्रधाना

श्रीमती सरोज अवस्थी
मंत्रिणी

श्रीमती सुमित्रा चौधरी
कोषाध्यक्षा

आर्य समाज उद्योग नगर

आर्य समाज उद्योग नगर की स्थापना 1 सितम्बर 2001 को हुई। स्व0 कर्मचन्द्र जी भल्ला ने आर्य समाज के लिये एक विशाल कक्ष दानस्वरूप भेंट कर उल्लेखनीय कार्य किया। आर्य समाज में प्रत्येक रविवार प्रातः नियमित यज्ञ एवं सत्संग का आयोजन किया जाता है।

कार्यक्रमों को सफल बनाने में **श्री हनुमान प्रसाद आर्य, अश्विनी त्रेहन, विनोद कुमार** भल्ला, रोहित भल्ला, दुर्गा प्रसाद, कमल प्रसाद, शिव बालक, श्रीमती लक्ष्मी देवी, श्रीमती आशा त्रेहन, श्रीमती कुसुम भल्ला, श्रीमती गिरजा देवी एवं श्रीमती रामकुमारी का विशेष सहयोग रहता है। वर्तमान मे इस समाज के प्रधान श्री जयविष्णु सिंह, मंत्री श्री विनोद कुमार आर्य, तथा कोषाध्यक्ष श्री मनन सिंह है।

जयविष्णु सिंह
प्रधान

विनोद कुमार वर्मा
मंत्री

मनन सिंह
कोषाध्यक्ष

आर्य समाज चन्द्रनगर

आर्य समाज चन्द्रनगर की स्थापना 4 सितम्बर 1988 को श्री कैलाश चन्द्र एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णादेवी तथा श्री मानसिंह आर्य के परिश्रम एवं सहयोग से की गयी थी। इसमें श्री जयनारायण गुप्त भारती, कृष्ण कुमार श्रीवास्तव एवं श्री पाण्डेय जी (टैगोर स्कूल का सहयोग प्रशंसनीय रहा है) प्रतिवर्ष वार्षिकोत्सव, आर्यवीर दल का गठन, रक्तदान शिविर का आयोजन भी होता है। संरक्षक गण श्रीराम प्रसाद जायसवाल, रामदेव अग्रहरि, इंजी0 वी0 पी0 सिंह एवं इंजी0 प्रकाश चन्द्र गुप्त के सहयोग से ऋषि लंगर भी आयोजित किया जाता है।

वर्तमान में आर्य समाज चन्द्रनगर की प्रधान डा0 श्रीमती कृष्णा गुप्ता, मंत्री 'एडवाकेट' अमित गुप्त तथा कोषाध्यक्ष श्री हिमांशु अग्रहरि हैं। इनके अतिरिक्त प्रमुख कार्यकर्ता है – डॉ0 कैलाश चन्द्र गुप्त, पवन कुमार शर्मा, मुरलीधर सिंह यादव, ओम प्रकाश अग्रहरि, शिवेन्द्र शर्मा आदि।

श्रीमती कृष्णा देवी गुप्ता
प्रधान

'एडवोकेट' अमित गुप्त
मंत्री

हिमांशु अग्रहरि
कोषाध्यक्ष

आर्य समाज वेदभवन

संतोष आर्य
प्रधान

महेश्वरी प्रसाद
मंत्री

श्रीमती उर्मिला आर्या
कोषाध्यक्षा

आर्य समाज मन्दिर वेदभवन नया शिवली रोड, कल्याणपुर की स्थापना मई 2004 को हुई। इस समाज के प्रारम्भिक कार्यकर्ताओं में श्री सन्तोष आर्य एवं श्रीमती उर्मिला आर्या का योगदान नींव की ईंट की तरह रहा। इन्हीं के प्रयासों से श्री सजीवन लाल शर्मा, श्री महेश्वरी प्रसाद, श्री मुरारी लाल, श्री बेचेलाल, गंगावती आदि सदस्य सम्मिलित हुए। समाज में प्रतिदिन दैनिक यज्ञ, साप्ताहिक यज्ञ व

वार्षिकोत्सव सम्पन्न होते हैं। प्रमुख कार्यकर्ताओं में चित्रा, रेखा, विनीता, प्रदीप लालमणि आदि हैं।

वर्तमान में यहाँ के प्रधान संतोष आर्य, मंत्री महेश्वरी प्रसाद तथा कोषाध्यक्ष श्रीमती उर्मिला आर्या है।

आर्य समाज रतनलाल नगर

आर्य समाज रतनलाल नगर विगत तीस वर्षों से घर–घर जाकर यज्ञ उपदेश एवं भजनों के माध्यम से वैदिक धर्म के प्रचारार्थ दृढ़ संकल्प है। वर्तमान में आर्य समाज रतनलाल नगर के प्रमुख कार्यकर्ता हैं। श्री श्री राम ग्रोवर, श्री हरिकृष्ण चोपड़ा, श्रीमोतीलाल मल्होत्रा। इस समाज के प्रधान हैं – श्री वीरेन्द्र कुमार कुन्दरा, मंत्री –श्री हरीश चन्द्र कनोत्रा तथा श्री देवेन्द्रनाथ दुग्गल कोषाध्यक्ष हैं।

समाज के अन्य प्रमुख सदस्य हैं श्री रणजीत सिंह, श्री संतोष कुमार, श्री केवल कृष्ण अरोड़ा, श्री गिरीश कुमार मल्होत्रा, श्री कृष्णपाल राजपूत आदि।

वीरेन्द्र कुमार कुन्दरा
प्रधान

हरीशचन्द्र कनोत्रा
मंत्री

देवेन्द्र दुग्गल
कोषाध्यक्ष

आर्य समाज नौबस्ता

आर्य समाज नौबस्ता का गठन 1988 में आर्य समाज अकबरपुर (कानपुर देहात) रमाबाई नगर के सुप्रसिद्ध आर्य समाजी वैद्य श्री श्रीधर विमल 'शास्त्री' तथा श्री ज्ञानेन्द्र नाथ पुरवार के संरक्षण में श्री हरिवंश पाण्डेय 'सरल' के नेतृत्व में किया गया। सामयिक प्रधान श्री बाबूलाल आर्य, मंत्री श्री शरद मनोरम के सहयोग से नौबस्ता के घर–घर में यज्ञ का प्रारम्भ किया गया। धीरे–धीरे साप्ताहिक कार्यक्रम होते रहें व अनेक अन्य कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता रहा। वर्तमान में प्रधान अनिल कुमार पुरवार व मंत्री कमल कुमार पाण्डेय एवं कोषाध्यक्ष देवेन्द्र कुमार पुरवार के कुशल निर्देशन में संस्था अपनी प्रगति की ओर अग्रसर है। आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर नगर की इस पत्रिका के कुशल सम्पादन व प्रकाशन पर हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ कोटि–कोटि नमन।

अनिल कुमार पुरवार
प्रधान

कमल कुमार पाण्डेय
मंत्री

देवेन्द्र कुमार पुरवार
कोषाध्यक्ष

आर्य समाज कृष्णानगर

आर्य समाज कृष्णानगर की स्थापना 2 अक्टूबर 1978 को हुई। प्रमुख संस्थापक सदस्य थे श्री भीमसेन तनेजा एवं श्रीमती निर्मला देवी लख्यानी, श्री हरदयाल आर्य, श्री ओम प्रकाश पाहूजा एवं श्रीमती मंजू अरोड़ा। वर्तमान में इस समाज के संरक्षक श्री योगेन्द्र नाथ मल्होत्रा प्रधान श्री भैरों प्रसाद गुप्ता, मंत्री श्री बुद्धि राम शर्मा एवं कोषाध्यक्ष श्री धर्मेन्द कुमार हैं।

श्री भैरों प्रसाद गुप्त
प्रधान

बुद्धिराम शर्मा
मंत्री

धर्मेन्द्र कुमार
कोषाध्यक्ष

आर्य समाज हीरागंज

आर्य समाज हीरागंज की स्थापना 4 अक्टूबर 1987 को की गई। इस समाज के संस्थापक पदाधिकारियों में श्रीमती सरला आर्या, स्व0 नैपाल सिंह, श्रीमती देवी प्रमुख रहे। आर्य समाज हीरागंज में वार्षिकोत्सव, शुद्धि संस्कार एवं विवाह संस्कार आदि आयोजनों को निरन्तर किया जाता है। आर्य उप प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में आर्यसमाज हीरागंज का सहयोग बढ़ चढ़ कर रहताहै। वर्तमान में इस समाज की प्रधान श्रीमती सरला आर्या, मंत्री श्री सुयश आर्य तथा कोषाध्यक्ष श्रीमती मौसमी आर्या है।

श्रीमती सरला आर्या
प्रधान

सुयश आर्य
मंत्री

श्रीमती मौसमी आर्या
कोषाध्यक्ष

आर्य वीरांगना प्रशिक्षण शिविर की समापन समारोह की झलकियाँ

समारोह के अध्यक्ष आचार्य श्री धर्मानन्द शास्त्री को ''सत्यार्थ प्रकाश'' भेंट करते हुए श्री शुभ कुमार वोहरा

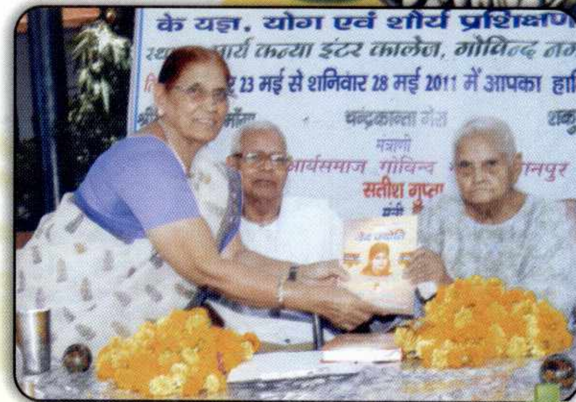

मुख्य अतिथि श्रीमती मानमती आर्या को 'वेद-ज्योति' स्मारिका भेंट करती श्रीमती कैलाश मोंगा

अतिथि श्रीमती मानमती आर्या (स्वतंत्रता संग्राम सेनानी) का स्वागत करती श्रीमती चन्द्रकान्ता गेरा

मुख्य अतिथि महापौर श्री रवीन्द्र पाटनी जी को 'सत्यार्थ-प्रकाश' भेंट करते श्री कैलाश चन्द्र गुप्त

मुख्य अतिथि महापौर श्री रवीन्द्र पाटनी जी का स्वागत करते भूतपूर्व सभा प्रधान श्री हनुमान प्रसाद आर्य

मुख्य अतिथि जी का स्वागत करती एक प्रशिक्षु बालिका

आर्य वीरांगना प्रशिक्षण शिविर की समापन समारोह की झलकियाँ

आर्य वीरांगना प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह के
अवसर पर शूटिंग का प्रदर्शन करती बालिकाएँ

आर्य वीरांगना प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह में
धनुर्विद्या का प्रदर्शन करती बालिका

आर्य वीरांगना प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह के
अवसर पर अग्नि के गोले से निकलती बालिकाएँ

आर्य वीरांगना प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह में
जूडो का प्रदर्शन करती प्रतिभागी छात्राएँ

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उद्‌बोधन देते हुए
कानपुर के महापौर श्री रवीन्द्र पाटनी जी

समापन समारोह के अध्यक्ष आचार्य श्री धर्मानन्द शास्त्री जी
का स्वागत करते श्री वीरेन्द्र कुमार कुन्दरा

ओ३म्

कर्म ही जीवन की सुगन्धि है।

- पं० सतीश कुमार शास्त्री
मंत्री-आर्य समाज, ग्वाल टोली कानपुर

भारतीय इतिहास के पृष्ठ पुकार–पुकार कर कह रहे हैं कि–

पशु प्रवृत्ति है वही कि आप-आप ही चरे।

मनुष्य है वही कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

मनुष्यता, मननशीलता, सुसंकल्पित मानसिकता से जन–जन में जीवन और धन्यता उड़ेलते रहना, मन्यु और उत्साह भरते रहना, सत्य और सत्याचरण को वरण करना एवं उसकी निरन्तरता को बनाये रखना। आदमी का आदमीपन और ईमान ही उपासना है।

ऐसे नर नारी इसलिये जन्मते और मरते हैं। कि सु और सर्व सुन्दर भाव की परम्परा संसार का श्रृंगार करती रहे, अलंकरण करती रहे। कभी किसी ने इसका श्रेय लेने की, कीर्ति बटोरने की अथवा कोई व्यक्तिगत लाभ बटोरने की लालसा तो अलग कल्पना तक नही की। भारतमाता ऐसे पुण्यात्माओं और दिव्यात्माओं को जन्म देती रही है। सती सीता सावित्री, अनसूया, पन्ना, लक्ष्मीबाई, राम, भरत, कृष्ण, दयानंद, श्रद्धानन्द, भगतसिंह, वीर सांवरकर, श्याम जी कृष्ण वर्मा ने देश और जाति की आर्यता को अमर और जीवत रखने के लिए जो कुछ किया उसके लिये अपने मुंह मियां मिट्ठू तो नहीं बने। भविष्य में अपनी प्रशस्ति के लिए किसी भौतिक साधना को अपनाने का निषेध ही किया।

देश के सन्त, कवियों ने भी आत्म कथायें नहीं लिखी अपितु जगत को जीवन देने वाली लेखनी से धर्म कर्म, भक्ति, राष्ट्रीयता और मानवता को व्यंजित करने वाली जड़ में भी स्फूर्ति जगा देने वाली दिव्य लेख कवितायें लिखी जो आज भी आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा देती रहती हैं। राणा प्रताप के चेतक ने स्वदेश और स्वतन्त्रता के लिए मूक कुर्बानी दी वह उसकी चर्मवाणी से नहीं उसके दीप्त और प्रशंसित जीवन से प्रकट हो रही हैं। इसमें से कोई भी हमारे बीच नहीं हैं पर उनके जीवन का तप, त्याग, शास्वत संदेश के रूप में हममें साहस और उत्साह तथा मर कर जीने की भावना जगा रहें हैं। भूत को वर्तमान बना रहें हैं। तो हम भी उनके चारू चरित्र से प्रेरणा लें–

कर्म का इतिहास अपने जीवन में उतारे डीगं हाकना बन्द करें।

करें बहुत, करें बहुतों के लिए, करें कर्तव्य पालन के लिए करे आत्म सुखाय करें।

अमर रहे सदा-सदा जियें।

संगठनसूक्त

ओं संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर॥ १॥
हे प्रभो! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिए धन-वृष्टि को॥
सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥ २॥
प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भाँति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो॥
समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि॥ ३॥
हों विचार समान सबके चित्त-मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब श्रेष्ठ हों॥
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥ ४॥
हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख-सम्पदा॥

शान्तिपाठ

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

मानव कोई बन कर आया?

– पं0 महेन्द्रपाल आर्य (वैदिक प्रवक्ता),
नई दिल्ली–११० ०८६
मो. ९८१०८७९०५६, ९८१०८७९०५६, ९९६८८२९६३४, ९८९१२७५१७३

धरती पर प्रवाह से तीन चीज अनादि है। ईश्वर, प्रकृति और जीव अर्थात् यह सदा से है और सदा ही रहेगा, इनका कोई बनाने वाला नहीं। इन तीनों में गुण अलग–अलग है, ईश्वर, ज्ञान में पूर्ण हैं, प्रकृति, ज्ञान शून्य हैं, और जीवात्मा में कुछ ज्ञान है, और कुंछ अज्ञानता। जीवात्मा अपनी अज्ञानता को दूर करने के लिये अथवा परमात्मा जो ज्ञान में पूर्ण है, उस से ज्ञान को प्राप्त करने के लिये निरन्तर वह अपना प्रयास करता है। परन्तु धरती पर ऐसे भी लोग हैं, जो परमात्मा को नहीं मानते हैं। इसे मैं बाद में लिखूंगा कि परमात्मा को मानना चाहिये या नहीं?

इधर प्रकृति, ज्ञान शून्य होने हेतु, परमात्मा का आदेश या उपदेश उसके लिये नहीं है। कारण वह जड़ है उसे किसी का आदेश और उपदेश की जरूरत ही नही किन्तु ध्यान देने योग्य बात है कि किसी का आदेश उपदेश न होने पर भी प्रकृति अपने नियम का उल्लघंन नही करती और ठीक, ठीक उसका पालन करती है। जैसा कोई फूल अपना गन्ध को अपने से अलग होने नहीं देता, कोई पत्ता आपने बनावट को नही त्यागता, आदि। जब कि वह जड़ है उसमें ज्ञान नाम की कोई चीज नहीं?

अब सवाल होगा कि जो ईश्वर विश्व का पालन हार है और पालने के कारण वह पिता है, या पालयति स पिताः। तो उसी पिता का ही आदेश उसके सन्तानों के लिए है। जो उसका पालना करेगा वही उसका सन्तान कहला सकता है और उसी का ही नाम मानव है, मनुष्य है आदि। आकृति से कोई मानव नहीं अपितु आचरण से ही कोई मानव कहला सकता है। इसे लोकाचार में भी हम पाते हैं, जैसा कोई पुरूष, पुरूषों से यौन सम्बन्ध करे। तो लोग उसे पशुवत आचरण कहते व मानते हैं। यद्यपि कुछ लोग इसमें भी अपनी सहमति जता चुके हैं। यहाँ तक लोग उसे, राक्षस, दानव, रावण, जानवर, तक कह देते हैं। कारण क्या है? कि शक्ल, सूरत, से कोई मानव नहीं, आचरण करने वाले का नाम मानव है। अर्थात् परमात्मा का आदेश को जिसने पालन किया आचरण में उतारा उसका नाम मानव, परमात्मा का आदेश को जिसने अक्षरसः पालन किया उसका

नाम मानव है। यही कारण बना कि धरती पर कोई मानव बन कर नहीं आया, अपितु धरती पर आ कर ही उसका आदेश पालन कर ही कोई मानव बनता है। यही कारण है कि वेद में आया है मनूर्भवः यानी मानव बनो।

प्रकृति उसे कहते हैं, जो सत, तम, रज, यह तीन मिल कर जो संधात बनता है, उसी का ही नाम प्रकृति है। जो जड़ है जिसे ज्ञान से कोई लेना देना नहीं है, और न यह अपने आप कुछ करने की क्षमता रखती है। अर्थात् यह अपने को नहीं पहचानती, और न अपने आप यह बन सकती है न बिगड़ सकती। परमात्मा सब पर नियन्त्रण रखता है, कारण वह ज्ञान का भण्डार है जीवात्मा को कर्मों का फल देने वाला है। प्रकृति को जीवात्मा ही अपने काम में लेती है या भोग करती है। जीवात्मा इस प्रकृति का भोग करने में फंसती है। परमात्मा इन सब का मालिक है, 'अनशनन्यों अभिचाक शीति'। अर्थात् वह बिना खाए पिए भी सारा स्वाद को जानता है। कारण वह सर्वज्ञ है।

जीवात्मा कर्म करने में स्वतन्त्र है और फल भोगने में परतन्त्र है। फलदाता परमात्मा है। जीवात्मा को ही यह ज्ञान मिला है, कारण जीवात्मा कर्ता और भोक्ता दोनों है। यही कारण है कि परमात्मा का सारा उपदेश जीवात्मा के लिए ही है। इसी उपदेशों का पालन करने वाले का नाम मानव है। यानी जीवात्मा को कर्म का ही फल मिलना है, और जैसा कर्म करेगा फल वैसा ही मिलेगा। उस कर्म का बोध जिसे होता है या अच्छे बुरे का ज्ञान जिसे होता है, बस उसी का ही नाम मानव है।

इस से बात स्पष्ट हो गई, कि धरती पर कोई मानव बन कर नही आया, अपितु धरती पर अथवा दुनिया में आकर अपने कर्मानुसार ही कोई मानव बनता है।

किन्तु आज धरती पर कोई मानव बनना ही नही चाहता। और न कोई बनाना चाहता है एक वेद को छोड़ कर। सब ने बनाया तो जरूर किसी ने मुसलमान बनाया, किसी ने हिन्दू बनाई किसी ने ईसाई तो किसी ने जैनी और बौधिष्ट या फिर किसी ने सिख बनाया यातो किसी ने बहाई बनाया दुनिया वालों को। कुरान कहता है इन्नदीनुइन्दल्लाहिल इस्लामकृसुरा इम्रानकृआ019 और 85 में देखें। अर्थ एक ही धर्म है जिसका नाम इस्लाम है। इसी इस्लाम को स्वीकार ने वाले का नाम मुसल मान है। बाईबिल का भी कहना यही है। अर्थात् इसी प्रकार धरती पर हम मानव बनने के बजाय सब ने मिल कर उसी मानवता पर कुठाराधात किया और हमें जो मानव बनना था वह न बन कर मानव के खून के प्यासे बन गए। इस संदर्भ में आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द

का कहना है कि एक मानव बनने से सभी शंकाओं का समाधान हो जाता है।

मानव का परिभाषा बताया, ऋषि ने कि मानव उसी को कहना जो अन्यों के सुख,दुःख हाणी, लाभ को समझें अन्याय कारी राजा से न डरें और निर्धन धर्मात्मा से डरता रहे। चाहे वह निर्धन निर्बल अनाथ और गुण रहित ही क्यों न हो उनसे प्रियाचरण करें। और राजा चक्रवर्त्ती सम्राट हो उसका अहित चाहना, अप्रियाचरण करना वह मानव कहलंाता है।

जितने भी मजहबी ग्रन्थ है उन सब ने मिल कर मानव को मानव बनने का उपदेश देने के बजाय किसी ने मुसलमान बनाया कुरान पर ईमान लाने को कहा और ईमान न लाने की दशा में मौत के घाट उतारने का आदेश तक दे डाली। कुरान में काफिर किसको कहा गया देखें, सुरा बकर आ098। मनकाना अदुवललिल्लाहे व मलाइकातिही. वरूसूलिही. वजिबरीला.वमीकाला. फइन्नाल्लाहाअदुवल्लिल. काफेरीन। अर्थ,,, जो अल्ला और उसके फरिश्ते और उसके रसूल और जिब्राईल व मिकाईल के दुश्मन है वह सब काफिर है।

आज धरती पर जितना जो भी काण्ड हो रहा है उसका मूल कारण ही मजहबी किताब है। अब वह काण्ड अमेरिका में हुआ हो भारत में हो रहा हो या फिर विश्व में कहीं भी जो काण्ड इस्लाम के मानने वालों द्वारा किया जा रहा है सब के प्रेरणास्रोत कुरान ही है। भले ही कोई कहे कि इस्लाम में आतंकवाद के लिए कोई जगह ही नहीं? यह उन लोगों की न समझी है और जो लोग कुरान को जानते है वह भी इसे उजागर करना ही नहीं चाहते। इस्लाम वाले भी क्यों चाहेंगें?

कुरान में अल्लाह ने मुसलमानों को आदेश दिया कि अगर कुरान का हुक्म मानो गे कुरान के मुताबिक अपना जिन्दगी चलाव गे तुम्हें जन्नत नसीब होगा। अब कुरान का मानना मुसलमान मर्द, औरत के लिए फर्ज कर्तव्य बताया गया। इसे न मानने पर सजा याफता होना पड़ेगा खतावार गुनहगार सब कुछ बनना पड़ेगा और अगर अल्लाह का हुक्म मान लिया तो जन्नत में हूर गिलमां, पाकशराब, शहद, तरह–तरह के मेवे परिवेशन करने वाली हम उमर औरतें रेशम की कपड़ा पहन कर सोने की कंगड़ पहन कर वह बड़ी–बड़ी आँख वाली जब छलकती हुई प्याली सामने लायेंगी और कुछ मुसहरी लगाकर तक़िया लगा कर इन्तेजार भी करेंगी, आदि।

आज इस्लाम के मानने वालों द्वारा विश्व में जो आतंक मचाया जा रहा है वह मात्र जन्नत में इनही सामानों को प्राप्त करने मकसद है। कुरान में हजारों आयात है उसे चरितार्थ करने में मुस्लिम कहलाने वाले विश्वास करते हैं और उस पर अमल करने में प्राणों की बाजी भी लगा देते

हैं।

वेद में इसे ही मानवता पर कुठराघात बताया। कारण जब मानव को उत्कृष्ट कहा गया जो कर्मों के अनुसार ही कहा गया तो क्या मानव का यह कर्म है कि किसी को कत्ल करो? तो जो लोग इस प्रकार का काम करते हैं उनको कहा कि तुम मानव बनो। तुम्हारा काम मानव का नहीं? शक्त सूरत से कोई मानव नहीं बनता अपितु आचरण से ही कोई बनता और कहलाता है। प्रत्येक मानव कहलाने वाले अगर इन मत, पंथ और सम्प्रदाय वाद को मिटाने का प्रयास करें तो विश्व में शान्ति का आना सम्भव है? कारण जब तक धरती पर सम्प्रदाय है तब तक साम्पद्रायिकता का मिटना आसान नहीं? आइये हम सब मानव बनें, औरों को भी मानव बनायें।

★ ★ ★

महामृत्युञ्जयमन्त्रः

ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। स्वाहा।।

मन्त्रः

ओं स्तुता मया वरदावेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसं मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकं स्वाहा।।

पूर्णाहुति मन्त्रः

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते स्वाहा।।
ओं सर्वं वै पूर्णꣳ स्वाहा।।

मन्त्रः

ओं वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारं, देवस्त्वा सविता पुनातु वसो पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा।।

ओं तेजोऽसि तेजो मयि धेहि, वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि, बलमसि बलं मयि धेहि, ओजोऽसि ओजो मयि धेहि, मन्युरसि मन्युं मयि धेहि, सहोऽसि सहो मयि धेहि।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव।
त्वमेव बंधु च सखा त्वमेव।।
त्वमेव विद्या च द्रविणं त्वमेव।
त्वमेव सर्वं मम देव देवः।।

With Best Compliments From.........

MTC

Malik Transport Company

Fleet Owner & Transport Contractors

Malik House, 241, Transport Nagar, Kanpur-23

Daily Service : Bombay, Vapi, Lucknow & All Over U.p.

Mumbai 23439419 (6Line)
Andheri....................................28473536
Bhiwandi..............................270674, 272290
Vapi..............................0260-2427403
Lucknow.........................2439702, 3293667

Tel. : 2613611, 2613612, 2600983
Del. : 26005187, **Fax :** 2605952
Mob. : 9838932880

With Best Compliments From.........

Vishal Tubes

Distributors & Stockist

- **Jindal Pipes Ltd.**
- **Maharashtra Seamless Ltd.**
- **QST Ltd.**
- **Tata Pipes Ltd.**

80/86, LATOUCHE ROAD,
KANPUR- 208 001

Phone : (O) 2376181, 2367059
Mobile : 9839033677, 9336110874

E-mail : vishaltubes@ymail.com, vishaltubes@hotmail.com